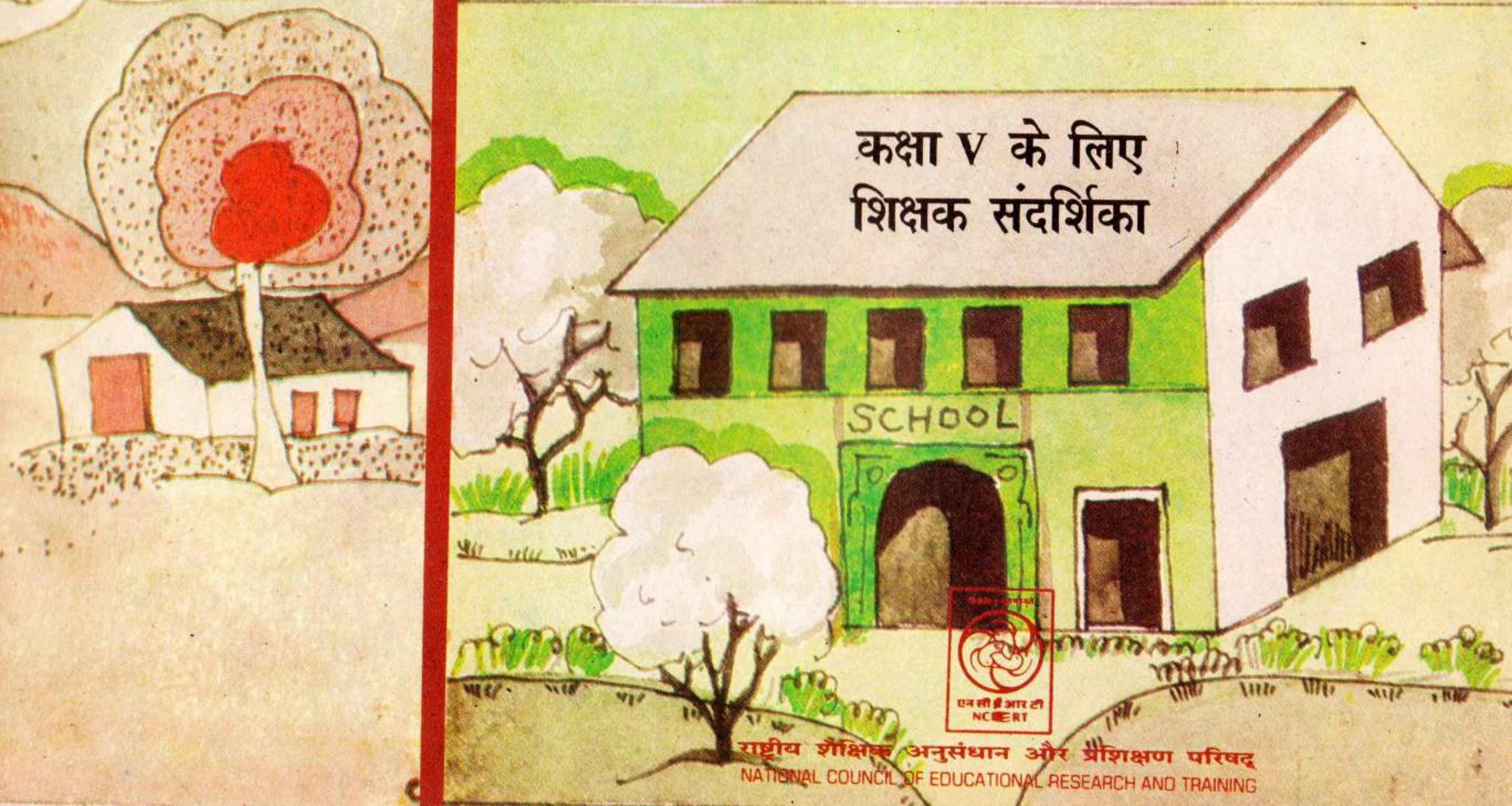
कला शिक्षा

कक्षा V के लिए शिक्षक संदर्शिका



एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

कला शिक्षा

कक्षा V

शिक्षक संदर्शिका

आर. के. चोपड़ा

अनुवाद
श्रीमती चित्रा मुद्गल

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

सितम्बर 1993 आश्विन 1915

P.D. 5T—RA

प्रकाशन सहयोग

सी. एन. राव, ***अध्यक्ष*** प्रकाशन विभाग

प्रभाकर द्विवेदी : *मुख्य संपादक*	यू. प्रभाकर राव : *मुख्य उत्पादन अधिकारी*
पूरन मल : *सम्पादक*	डी साई प्रसाद : *उत्पादन अधिकारी*
	चन्द्र प्रकाश टंडन : *कला अधिकारी*
	विकास मेश्राम : *सहायक उत्पादन अधिकारी*
	राजेन्द्र चौहान : *उत्पादन सहायक*

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस श्री अरविंद मार्ग नई दिल्ली 110016	सी.डब्ल्यू.सी. कैम्पस चितलापक्कम, क्रोमपेट मद्रास 600064	नवजीवन ट्रस्ट भवन डाकघर नवजीवन अहमदाबाद 380014	सी.डब्ल्यू.सी. कैम्पस 32, बी.टी. रोड, सुखचर 24 परगना 743179

रु. 32.50

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा शगुन कम्पोज़र्स, 92-बी, कृष्णा नगर, सफदरजंग इन्क्लेव, नई दिल्ली 110029 द्वारा लेजर टाइपसेट होकर इण्डिया ऑफसेट प्रैस, ए-1, मायापुरी इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली 110064 में मुद्रित।

प्राक्कथन

भारत सरकार द्वारा ***राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986)*** की घोषणा करने तथा कार्ययोजना बनाने के बाद एन.सी.ई.आर.टी. ने विभिन्न विषयों की नई पाठ्यचर्या तैयार करने तथा विद्यालयी शिक्षा के सभी स्तरों हेतु आदर्श अनुदेशात्मक सामग्री प्रकाशित करने के लिए मार्गनिर्देश के तौर पर ***प्रारंभिक एवं माध्यमिक शिक्षा की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की एक रूपरेखा*** (1988-संशोधित संस्करण) तैयार की है।

कक्षा 5 के लिए ***कला शिक्षा–अध्यापक पुस्तिका,*** एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित अनुदेशात्मक सामग्री के पैकेज का एक हिस्सा है। पहले तैयार की गई पुस्तिकाएँ कक्षा 1 से 4 के लिए हैं, जो प्राथमिक विद्यालय स्तर पर लगाई जा चुकी हैं। चूँकि कला शिक्षा में कोई पाठ्यपुस्तक नहीं है, अतः यह अनुभव किया गया कि शिक्षकों को विभिन्न कला-शैलियों के लिए योजना बनाने तथा कार्यकलाप आयोजित करने में सहायता करने हेतु कुछ मार्गनिर्देश जरूरी हैं। इसलिए पुस्तिकाओं की एक शृंखला तैयार की गई है। आशा की जाती है, कि कक्षा में प्रतिदिन के कार्यकलाप में अध्यापकों के लिए यह उपयोगी सिद्ध होगी।

कार्यकलाप-पुस्तिका की रूपरेखा परिशिष्ट के रूप में भी दी गई है, जो बच्चों के इस्तेमाल के लिए है। इसमें शामिल किए गए कार्यकलाप पुस्तिका की कार्यकलाप-योजना के अनुरूप हैं, जिन्हें शिक्षक पाठ्यचर्या से चुन सकते हैं।

पुस्तिका में दिए गए बच्चों के कार्यों के नमूने हरियाणा, मेघालय, सिक्किम, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश और संघशासित क्षेत्र दिल्ली के विद्यालयों से एकत्र किए गए हैं। विद्यालय के वे छात्र एवं कर्मचारी साधुवाद के पात्र हैं, जिन्होंने इन नमूनों को तैयार करने में सहयोग प्रदान किया।

इस पुस्तिका की विषय-वस्तु की समीक्षा विषय विशेषज्ञों और विभिन्न राज्यों एवं संघशासित क्षेत्रों में कला-अध्यापकों की समिति द्वारा की गई। मैं उनके बहुमूल्य सुझावों और विचारों के लिए उनका आभारी हूँ। यह पुस्तिका-सह-कार्यकलाप-पुस्तिका डा. पी.एन.दवे, पूर्व अध्यक्ष, विद्यालय-पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग के सम्पूर्ण मार्गदर्शन में श्री आर.के.चोपड़ा, पूर्व प्रवाचक (ललित-कला) द्वारा तैयार की गई है। मैं उनके विशेष सहयोग के लिए भी उनका आभारी हूँ। बच्चों के कार्य की स्लाइड और फोटो तैयार करने में के.शै.प्रौ. संस्थान के श्री जी.के.विरमानी और श्री आर.सी.दास द्वारा की गई सहायता प्रशंसनीय है।

कला शिक्षा के क्षेत्र में कक्षा 5 को सिखाने के लिए यह अनुदेशात्मक सामग्री एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित पहला प्रयास है। आपके सुझावों एवं विचारों का स्वागत रहेगा, ताकि इस पुस्तिका के कलेवर में और सुधार हो सके।

डॉ० के० गोपालन

निदेशक

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली

अगस्त 1993

पुनरीक्षण समिति के सदस्य

1. कु. जेमीमा प्रधान
   उप-सचिव, सिक्किम सरकार
   गैंगटाक
2. श्रीमती पुनीता सतपथी
   प्रधानाध्यापिका
   कारपोरेशन स्कूल
   मद्रास, तमिलनाडु
3. कु. सी. नोंगोरी
   प्रवक्ता
   एस. सी. ई. आर. टी., शिलांग
   मेघालय
4. श्रीमती मंजुला माथुर
   संगीत अध्यापिका
   केंद्रीय विद्यालय
   नई दिल्ली
5. कु. मालिनी चारी
   संगीत अध्यापिका
   केन्द्रीय विद्यालय
   नई दिल्ली
6. श्री मोहन लाल
   कला शिक्षक
   एस. सी. ई. आर. टी
   गुड़गांव
   हरियाणा
7. श्री एस. गौहर अली
   कला शिक्षक
   टी. टी. आई. नगीना
   बिजनौर
   उत्तर प्रदेश

गांधी जी का जन्तर

तुम्हें एक जन्तर देता हूं। जब भी तुम्हें सन्देह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ :

जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शकल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुंचेगा ? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा ? यानि क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है ?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा सन्देह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

विषय सूची

		पृष्ठ
	प्राक्कथन	iii
1.	प्रस्तावना	1
2.	पाठ्यक्रम तथा कला सामग्री	7
3.	कला शिक्षा में छात्रों का मूल्यांकन	11
4.	चित्रात्मक कला	23
5.	सजावट की कला	36
6.	प्लास्टिक कला	49
7.	प्रदर्शन कला	59
	ग्रंथ सूची	66
	परिशिष्ट	67
	कक्षा V के लिए कला-शिक्षा की कार्यकलाप पुस्तिका	68

अध्याय - 1

प्रस्तावना

कला शिक्षा-दर्शन की संकल्पना पाठ्यचर्या

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा तैयार किए गए प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा, राष्ट्रीय पाठ्यक्रम (संशोधित संस्करण, 1988) में कला शिक्षा का एक नया अर्थ और भूमिका हैं। कला के विविध रूपों को न केवल आत्माभिव्यक्ति के प्राकृतिक साधनों के रूप में प्रयोग करने के लिए अपितु बच्चे के सृजनात्मक विकास के साधन के रूप में भी एकीकृत किया गया है, दूसरे शब्दों में कला शिक्षा का मुख्य उद्देश्य कला अभिव्यक्ति के माध्यम से प्रत्येक बच्चे के सृजनात्मक विकास को आगे बढ़ाना है, इस विषय में यह दृष्टिकोण बाल-मनोविज्ञान, बाल कला के सौंदर्य बोध और नयी कला-पद्धति के क्षेत्रों में किए गए विभिन्न अध्ययनों के आधार पर अपनाया गया है।

कला शिक्षा की संकल्पना की गहन जानकारी प्राप्त करने के लिए बच्चे की मानसिकता को समझना उचित होगा, जो हमारे मुख्य अध्ययन का विषय हैं विभिन्न अध्ययनों से यह पता चलता है कि बच्चा एक जीव-मात्र ही नहीं है, अपितु एक सोचने समझने वाला मानव है। विद्यालय आने से पूर्व उसे अपनी भावनाओं विचारों और संवेदनाओं में संजोयी हुई वस्तु और स्थितियों के संबंध में अनेक अनुभव होते हैं, ये सभी अनुभव उसके व्यवहार में एक खास तरीके से परिलक्षित होते हैं, कभी-कभी ये इतने अधिक वेगवान हो जाते हैं कि उन्हें अभिव्यक्ति की आवश्यकता होती है; एक अन्य पक्ष जो प्रकट होता है। वह यह है कि बच्चे में कुछ क्षमताएं जन्मजात होती हैं। उनमें से कुछ सौंदर्य कला रूपों से संबंधित होती हैं जो उसके शैशवकाल से ही प्रकट होने लगती हैं। बच्चे के ये कुछ ऐसे मनोवैज्ञानिक आयाम हैं, जिन्हें कला शिक्षा के वर्तमान दृष्टिकोण के विकास के लिए ध्यान में रखा गया है।

इस संबंध में कला पद्धति के कुछ प्रयोगों पर भी विचार किया गया है, इनसे बच्चे के बारे में अनेक तथ्यों, जैसे उसकी जन्मजात सृजनात्मक क्षमता, अभिव्यक्ति, परिकल्पना आदि के प्राकृतिक तरीकों के बारे में पता चलता है "स्वतंत्र अभिव्यक्ति" के रूप में अभिगृहीत एक प्रयोग से यह प्रकट होता है कि बच्चों को यदि कला के माध्यम से अभिव्यक्ति करने की स्वतंत्रता दी जाए तो वे बहुत अच्छे संयोजनात्मक प्रभावों का प्रस्तुतीकरण करते हैं। उन्हें इस कार्यकलाप में न केवल आनंद की अनुभूति होती है अपितु वे अपनी शुद्ध भावनाओं को भी व्यक्त करते हैं। समाज के विभिन्न वर्गों के बच्चों के विभिन्न समूहों पर किए गए "स्वाभाविक अभिव्यक्ति" नामक एक अन्य प्रयोग से कला की अभिव्यक्ति की विविधताओं की जानकारी मिलती है। इससे यह पता चलता है कि जैविक और परिवेश की

पृष्ठभूमि की विभिन्नता के परिणामस्वरूप बच्चों की मानसिकता भी भिन्न-भिन्न होती हैं इसका निष्कर्ष यह निकलता है कि बच्चों का भिन्न-भिन्न दृश्यात्मक परिकल्पनाओं के साथ विकास होता है और प्रत्येक बच्चा अपनी आंतरिक शक्ति, आवश्यकता और आकांक्षा के अनुसार अपने तरीके से अपनी शैली विकसित करता है यों तो अन्य अनेक प्रयोग हैं किंतु इस अध्ययन का सर्वसम्मत निष्कर्ष यह है कि सभी बच्चों में सृजनात्मक अभिव्यक्ति कला प्रक्रिया के अनुभव का मूल तत्व है इससे यह भी संकेत मिलता है कि विषयवस्तु के चुनाव, अभिव्यक्ति के तरीके और इस कौशल को सीखने के लिए प्रत्येक बच्चे के लिए स्वतंत्रता आवश्यक है।

इन अनुसंधानों और प्रयोगों के ये सभी निष्कर्ष कला शिक्षा की पाठ्य चर्चा के संबंध में वर्तमान दृष्टिकोण विकसित करने में अत्यंत संगत और सहायक सिद्ध हुए हैं, इस विषय का क्षेत्र-विस्तार अब बच्चे में जिज्ञासा, खोज और सृजनात्मकता की भावना उत्पन्न करना है और उसमें कला सौंदर्य के मूल्यांकन की भावना, संवेदनशीलता और परिष्कृत रुचि का भी विकास करना है।

कक्षा शिक्षा का दर्शन

कला शिक्षा का दर्शन एक आदर्श तथा शाश्वत रूप से पर्याप्त दर्शन है। इसकी नींव कला-मनुष्य-समाज के परस्पर संबंधों पर रखी गई हैं। कला का जन्म परमानंद के रूप में हुआ था और यह अपने गुण ग्राहकों को आकर्षित करती आई है और सदियों से जीवित है, इसका जन्म एक सहज वृत्ति से हुआ है और इसने देवताओं, प्रासादों और महलों की शोभा बढ़ाई है। कला और सौंदर्य में एक समानता है, क्योंकि जहां कला है, वहां सौंदर्य है और जहाँ सौदर्य हो उसमें कला के कुछ तत्व सदैव विद्यमान रहते हैं। यह कहा जाता है कि कला मनुष्य को भगवान की देन है।

कला और मुनष्य के संबंधों पर विचार करें तो हम यह पाएंगे कि मनुष्य की सबसे पहली आवश्यकता संप्रेषण की थी यद्यपि वह बोल सकता था, किंतु उसके पास ही अभिव्यक्त करने के लिए कोई भाषा नहीं थी। कला ने मुनष्य को सर्वप्रथम भाषा दी— जो जितनी सरल थी, उतनी ही दृश्यात्मक भी थी और जितनी प्रभावशाली थी, उतनी ही कलात्मक भी थी। जब वह इस भाषा की क्षमता के प्रति जागरूक हो गया, तब उसने इसके द्वारा न केवल दृष्टिगोचर का चित्रण किया, अपितु अपने विचारों, अनुभूतियों और भावनाओं के आंतरिक संसार का भी चित्रण किया। वस्तुतः मनुष्य इस भाषा के माध्यम से ही दूसरे मनुष्य के संपर्क में आया। इस भाषा का चमत्कार अभी भी अद्वितीय है और इसे देखकर ही इस पर विश्वास किया जा सकता है।

युद्ध के दिनों में मनुष्य प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण निरंतर एक दबाव में जी रहा था। जीवन-रक्षा तथा शांति उसकी सबसे बड़ी आवश्यकताएं थीं। कला ने उसकी मनोदशा को बदला और शांति प्रदान की, क्योंकि उसे इसमें एकता, सामंजस्य और जीवन की गति प्राप्त हुई, जो किसी सुखद कला-योजना के मूल तत्व हैं। इससे उसे नयी जीवन-शैली की जानकारी प्राप्त हुई । अतंतः वह सभी के साथ एकता, सामंजस्य और समानता की भावना से रहने लगा था और निरंतर सुखमय जीवन व्यतीत करने लगा था।

अनुवर्ती युगों में मुनष्य का मुख्य उद्देश्य कला को विकसित और परिष्कृत करना ही था। अब वह निश्चिंत था, अतः उसने सौंदर्य के नये

रूपों की सर्जना की और इस प्रक्रिया के दौरान अपनी संवेदन-शक्ति का परिष्कार किया। वह गुफाओं से निकल कर खुले स्थानों में निवास करने लगा। अब इसने चमकते हुए सूरज के नीचे प्रकृति के पूर्ण विस्तार को देखा। उसने जिन वस्तुओं की आकारों में कल्पना की थी, वे अब उपने रूपों और पिंडों के रूप में उसके सामने विद्यमान थीं। उसने कला के इस नवीन आविष्कृत तत्वों पर विचार क्रिया और उपयोगिता की वस्तुओं का सृजन किया, उसे उनमें हर्ष की एक नवीन अनुभूति हुई, उसे अपना जीवन सुरक्षित लगने लगा और अपने जीवन-निर्वाह की स्थितियों में सुधार दिखाई देने लगा। इसके बाद उसमें स्वयं को सुधारने की इच्छा जागृत हुई और कला ने इस कार्य में उसकी सहायता की और उसके समक्ष नये आयाम उद्घाटित होने लगे। कला से जो प्रशाखाएं उत्पन्न हुईं, वे शिल्प-कार्य, वास्तुकला और उद्योग की शाखाएं बन गईं। बढ़ती हुई समृद्धि और रूचियों के विकास के परिणामस्वरूप उसकी नयी मांगों से नयी सामग्री, नयी शैलियों और नये-नये अभिकल्पों (डिजाइनों) की खोज आरंभ हो गई।

शास्त्रीय, पुनर्जागरण तथा आधुनिक युगों में मनुष्य ने कला में श्रेष्ठता प्राप्त करने की खोज में अनेक शिखरों को छुआ है, किंतु इससे पहले की कला में उस संपूर्ण सौंदर्य की झलक भी दिखाई दे, कला के अनेक शिल्पों को छूना अभी बाकी है। (यद्यपि सौंदर्य समय और स्थान के अंतर्गत एक सापेक्ष अभिव्यक्ति है, क्योंकि हर पीढ़ी के सौंदर्य की एक अपनी संकल्पना होती है, किंतु इसकी खोज एक ऐसी वस्तु है, जो अपने आप में अभूतपूर्व है।) यह मनुष्य की सबसे बड़ी चुनौती है, क्योंकि वह इसमें अपने व्यक्तित्व की झलक देखता है।

आज का मनुष्य अपने आपको मशीन के अधिकाराधीन पाता है। यह एक ऐसी स्थिति है, जो उसके अपने व्यक्तित्व की विशेषता उसकी स्वतंत्रता और अभिव्यक्ति पर कुठाराघात करती है। एक अन्य दुरावस्था यह है कि आधुनिक माध्यमों से उसे सस्ता मनोरंजन ही प्राप्त होता है, जहां उसकी स्थिति मात्र एक निष्क्रिय प्रेक्षक की बनकर रह गई है। ऐसी स्थिति में यह आशंका होने लगती है कि वह ऐसे साधारण जीवन मूल्यों को अपना रहा है, जिनमें उसकी अपनी सृजनात्मक क्षमताओं की अभिव्यक्ति के लिए कोई स्थान नहीं है।

कला और मनुष्य का संबंध एक-दूसरे को समृद्ध बनाता रहा है। कला में नये आयामों का विस्तार होता रहा हैं। कला से अध्ययन के अनेक नये क्षेत्रों का अभ्युदय हुआ है और इसने अन्य अनेक विषयों के विकास में भी योगदान दिया है। कला ने न केवल अनेक नई शैलियों, तकनीकों और प्रक्रियाओं को जन्म दिया है, अपितु उन्हें परिष्कृत भी किया है।

अध्ययन के एक विषय के रूप में कला के अनेक व्यावसायिक पक्ष हैं, जैसे समालोचना, सौंदर्य-शास्त्र, इतिहास आदि। इसके अतिरिक्त विभिन्न कला-रूपों में कुछ तकनीकी विषय भी होते हैं। इसके अंतर्गत अनेक क्षेत्रों में अनुसंधानों तथा प्रयोगों की भी संभावना होती है। दूसरी ओर मनुष्य ने अपनी रुचियों और संवेदनशीलता को कला के माध्यम से समृद्ध बनाया है। उसको कला एक ऐसा आकर्षक माध्यम प्रतीत होता रहा है, जिसके माध्यम से वह अपने सृजनात्मक उद्वेगों तथा उद्गारों को अभिव्यक्ति प्रदान करता रहा है। ऐसा करते समय उसे हमेशा एक पूर्णत्व और कला-परक आनंद की प्राप्ति होती रही है।

कला और समाज के संबंधों पर विचार करें तो हम पाएंगे कि यह उन संस्कृतियों के लिए अद्वितीय रही है, जो कला और समाज में परस्पर संपर्क स्थापित कर सकी थीं, जिसके परिणामस्वरूप उनकी संस्कृतियों की उन्नति हुई थी अथवा विकास हुआ था। केवल उन्नत और सुसंस्कृत राष्ट्रों

ने ही नहीं अपितु पुरातन तथा पिछड़े राष्ट्रों को भी यह गौरव प्राप्त हुआ था। यह उन लोगों की अद्म्य अभिलाषा और कठिन श्रम का ही परिणाम था कि उन्होंने एक ऐसी सांस्कृतिक विरासत का विकास किया था, जिसमें कला का सर्वाधिक योगदान था।

हमारी सभ्यता की जिसकी अतीत में गहरी नींव रही है, ज्ञात इतिहास से भी काफी पहले अपनी विशिष्ट संस्कृति थी। ज्ञान, शिल्प-शास्त्र, सौंदर्य-शास्त्र, कला-मूल्यांकन से संबंधित अधिकांश साहित्यिक ग्रंथों की प्रारंभिक काल में ही रचना की गई थी। जब तक हमें इतिहास के अध्ययन द्वारा अपने लोगों की जानकारी प्राप्त हो, इससे पहले ही सभी कला-रूप उनके जीवन का अंग बनगए थे। इन कला-रूपों की झलक उनके रीति-रिवाजों, अनुष्ठानों, उत्सवों और अन्य संस्थाओं में मिलती है। कला के ऐतिहासिक विकास के अध्ययन से यह तथ्य स्पष्टतः उजागर होता है कि इन कला-रूपों को राज्य और अभिजात वर्ग का संरक्षण प्राप्त था और उन्हें कभी भी जन-मानस के जीवन से अलग नहीं पाया गया था। वे उनके जीवन का अंग बन गई थीं। इनको इतिहासकारों ने "लोक कला" की संज्ञा दी

हमारी सांस्कृतिक विरासत के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाएगा कि विराट में आरंभिक काल में धर्म पर आधारित समाज की स्थापना हुई थी। तदनुसार इन कलाओं में एक सीमित समय और स्थान की मात्र सतही वास्तविकता का चित्रण नहीं किया गया था, अपितु उस अनंत ब्रह्मांड की जटिल वास्तविकताओं का चित्रण किया गया था, जिसमें समय और स्थान का संबंध निरर्थक हो जाता है। शताब्दियों से इन कलाओं का उपयोग जीवन के लौकिक एवं अलौकिक रंग-बिरंगे रहस्यों की खोज के लिए तथा अंतहीन रूपों में अभिव्यक्ति के लिए किया जाता रहा था। इन कलाओं में आश्चर्यजनक रूप से संपूर्ण विश्व देवी देवताओं, प्रकृति तथा सांसारिक जीवों के महान सत्य का उद्घाटन कराने में एक निष्ठ सबंद्धता दिखाई देती है। इस दिशा में कला ने एक ऐसा महान कार्य किया है, जिसके अवशेष आज तक दिखाई देते हैं।

आज के समाज के लिए जो एक भव्य संस्कृति के कगार पर खड़ा है, कला-शिक्षा को लोगों की मूल आवश्यकता समझना आवश्यक है। उन्हें न केवल अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करना होगा, अपितु कुछ सौंदर्यपरक स्तर भी बनाए रखना होगा। यह एक संगत प्रश्न है, क्योंकि विज्ञान और प्रौद्योगिकी से केवल कुछ लोगों को ही लाभ हुआ है और अनेक लोगों की स्थिति अत्यंत दयनीय व निराशाजनक हो गई है। प्राचीन मूल्यों और सौंदर्यपरक स्तरों का धीरे-धीरे ह्रास हो रहा है, क्योंकि उनका अपने अतीत से संबंध क्षीण होता जा रहा है। आंशिक रूप से हमारी शिक्षा-योजना ऐसी थी, जिसके कारण स्कूल-पाठ्यक्रम में अनेक परिवर्तन हुए हैं, चूंकि यह शिक्षा ऐसे विदेशी-शासक द्वारा तैयार की गई थी, जिसके मन में हमारी सांस्कृतिक विरासत के लिए सम्मान की कोई भावना नहीं थी। कला-शिक्षक के संबंध में यह परिवर्तन पूर्ण रूप से परिवर्तित कर दिया गया है। अब इसके पाठ्यक्रम का उद्देश्य आरंभिक कला-रूपों को एक ओर शास्त्रीय तथा लोक स्तरों पर पुनर्जीवित करना है, तो दूसरी ओर बच्चों में आत्माभिव्यक्ति, सृजनात्मक तथा संवेदनशीलता का विकास करना है। भारतीय समाज के संदर्भ में यह कहना सत्य होगा कि कला-मनुष्य-समाज का संबंध एक शाश्वत संबंध रहा है, यद्यपि इतिहास के विभिन्न युगों में कुछ अवरोध अवश्य उत्पन्न हुए हैं।

कला शिक्षा की पाठ्यचर्या

पाठ्यचर्या शब्द किसी विषय को पढ़ाने के लिए आवश्यक सभी कठोर शर्तों से संबंधित है। पाठ्यचर्या-निर्माता शिक्षण-समूह की आवश्यकताओं तथा इनमें लाए जाने वाले व्यवहार परक परिवर्तनों की अपेक्षाओं का मूल्यांकन करने के बाद पाठ्यचर्या के विभिन्न निवेश तैयार करने के लिए एक उपयुक्त दृष्टिकोण बनाते हैं। वे इसका विकास ऐसे विभिन्न अध्ययनों के प्रयोगों और प्रवृत्तियों के आधार पर करते हैं, जिनसे विषय की निर्धारित आवश्यकताएं पूरी हो जाती हैं। इस दृष्टिकोण के आधार पर पाठ्यचर्या का स्वरूप तैयार किया जाता है और इसमें सामान्य तथा अनुदेशात्मक उद्देश्यों, पाठ्यक्रम, पद्धति, अध्यापन-शिक्षण की स्थितियां, मूल्यांकन आदि शामिल होते हैं।

कला-शिक्षा की पाठ्क्रम तैयार करने के लिए अपनाए जाने वाले दृष्टिकोण की अनेक मुख्य विशेषताएं हैं। यह विभिन्न अध्ययनों तथा प्रयोगों के आधार पर इस रूप में तैयार किया गया है कि जिससे यह सीखने वालों के सृजनात्मक विकास के लिए सर्वथा उपयुक्त हो। इसकी मुख्य विशेषताओं की चर्चा संक्षेप में नीचे की जा रही है।

यह दृष्टिकोण मूलतः बाल-केंद्रित है और प्रक्रिया पर आधारित हैं इसके अंतर्गत यह समझा जाता है कि प्रत्येक बच्चे में सृजन की पर्याप्त संभावनाएं होती हैं और कलात्मक अभिव्यक्ति उसका स्वाभाविक लक्षण है। उसके आधार पर कला संबंधी कार्यकलापों का आयोजन करने का उद्देश्य यह है कि यह व्यक्तिगत आधार पर आत्माभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करता है। शिक्षा के एक भाग के रूप में शिक्षक शिक्षा नहीं देता, अपितु कला-शिक्षा के कार्यकलापों में बच्चे की रुचि बढ़ाने और उसकी सहभागिता में भी वृद्धि करने के लिए एक मार्गदर्शक का कार्य करता है।

इस दृष्टिकोण के अंतर्गत बच्चे की अभिरुचि की खोज करने और उसकी क्षमताओं की पहचान करने पर जोर दिया गया है। प्रत्येक बच्चे का एक आंतरिक संसार होता है, जिसमें विविध आकारों और रूपों एवं रागों का खजाना होता है। इन्हें वह अपने परिवेश का अवलोकन करते समय संकलित करता है। कभी-कभी उसमें अपनी रुचि की चीजों और वस्तुओं को अभिव्यक्त करने की तीव्र इच्छा होती है। वह अपनी सहज क्षमता से कला द्वारा अपनी व्यक्तिगत अभिव्यक्ति को मूर्त रूप प्रदान करता हैं इस प्रक्रिया में वह संप्रेषण के उन तरीकों की खोज करता है, जो उसे अत्यंत प्रभावकारी लगते हैं।

यह दृष्टिकोण बच्चे की सृजन तथा अर्थग्रहण क्षमताओं में वृद्धि करने से संबंधित है। बच्चा विभिन्न वस्तुओं को देखकर कुछ अर्थ और संकल्पनाएं ग्रहण करता है। उसकी इनके प्रति जो अपनी भावनात्मक प्रतिक्रिया होती है, उसके कारण इनमें एक नयापन आ जाता है। वह इन्हें अभिव्यक्ति प्रदान करता है, तब वह उनके बारे में जो महसूस करता है, न केवल उसे ही अभिव्यक्ति प्रदान करता है, अपितु उनके बारे में सोचने, उनकी कल्पना करने और आकार प्रदान करने की प्रक्रिया करने से भी गुजरता है और उनके बारे में अपनी प्रतिक्रिया भी व्यक्त करता है। इसका परिणाम एक सृजनात्मक अनुभव होता है, जो उसके विकास में योगदान करता है।

इस दृष्टिकोण का उद्देश्य बच्चे के प्रत्यक्ष ज्ञान और उसकी संवेदनशीलता को प्रखर बनाना है। कला-शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण लक्ष्य बच्चे को आकारों, रंगों, रूपों, लय और ताल से परिचित कराना हैं ताकि वह प्राकृतिक सौंदर्य तथा कला-रूपों के सौंदर्य की परख कर सके और उसकी सराहना कर सके। यह निःसन्देह एक धीमी प्रक्रिया है किन्तु उसके इंद्रिय बोध को आरंभ से ही सुसंस्कृत बनाने से उसको (बच्चे को) साधारण खुशी और सौंदर्य परक आनन्द के बीच का अंतर समझने में सहायता मिलेगी। सौंदर्य परक मूल्यांकन के दृष्टिकोण से उसका जीवन और जीवन शैली उन्नत होगी।

प्राथमिक विद्यालय के स्तर पर कला-शिक्षा के उद्देश्य इस प्रकार हैं — बच्चे को निम्नलिखित का विकास करना चाहिए :—

- दृश्य तथा प्लास्टिक कला के माध्यम से प्रेक्षण, कल्पना-शक्ति और आत्माभिव्यक्ति।
- ऐसे विविध कला-माध्यमों तथा सामग्री में से, जिनसे उसे परिचित कराया जाता है, आत्माभिव्यक्ति के बेहतर साधनों की खोज और पहचान करने की योग्यता।
- संगीत, नृत्य और नाटक के साधारण रूपों के माध्यम से स्वतंत्र अभिव्यक्ति।
- परंपरागत कला के सौंदर्यपरक तत्वों के प्रति जागरूकता तथा प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रति प्रेम की भावना और
- देश-भक्ति की भावना तथा भारतीय होने में गौरव का अनुभव करना।

बच्चे में ऊपर उल्लिखित क्षमताओं का विकास करने तथा जीवन मूल्यों को उसके मन में बैठाने की परिकल्पना न्यूनतम अधिगम निष्कर्षों (एम एल ओ) के रूप में की गई है। कुछ न्यूनतम अधिगम निष्कर्ष प्रत्यक्ष व परिवर्ती रूप से किसी ऐसी विशेष क्षमता या मूल्य से संबंधित होते हैं, जिसे बच्चे के लिए उपलब्धि के एक वांछनीय स्तर पर प्राप्त करना जरूरी होता है। उपलब्धि का यह स्तर "निष्णात स्तर" कहलाता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि अधिगम निष्कर्ष प्राप्त कर लिया गया है।

इन सभी न्यूनतम अधिगम निष्कर्षों (न्यू. अ. नि.) के लिए एक उपयुक्त पाठ्यक्रम तैयार करने का प्रस्ताव रखा गया है, जो बच्चे के आंतरिक व बाह्य परिवेश को ध्यान में रखकर बनाया गया है। इसका स्वरूप (1) परिवर्तनशीलता है तथा (2) सामान्य मूल प्रकार का है। परिवर्तनशील प्रकार के अधिगम निष्कर्षों का पाठ्यक्रम सांकेतिक है और इसमें स्थानीय आवश्यकता जैसे प्रभावात्मकता तथा माध्यम एवं सामग्री की उपलब्धता के अनुसार परिवर्तन किए जा सकते हैं। सामान्य मूल प्रकार का पाठ्यक्रम सभी बच्चों के लिए अनिवार्य है और इसे अवश्य स्वीकार किया जाना चाहिए और बिना किसी परिवर्तन के अपनाया भी जाना चाहिए।

कला-शिक्षा पद्धति के अंतर्गत इस पाठ्यक्रम के कार्यकलापों के आयोजन के लिए दो अत्यंत संगत उदार तथा आधुनिक पद्धतियां लागू की गई हैं। इन दोनों पद्धतियों के अंतर्गत हर बच्चे को अपने साधनों और क्षमताओं का उपयोग करने के अधिकतम अवसर प्राप्त होते हैं। इनके अंतर्गत बच्चे को कार्य-कलाप करने के लिए चिंतन करने, कल्पना करने तथा उसे मूर्त रूप प्रदान करने के लिए सृजनात्मक प्रक्रिया का अनुभव प्राप्त होता है। ऐसे अनुभव अनेक प्रकार से महत्वपूर्ण होते हैं। वह अपने विचारों को सार्थक अभिव्यक्ति प्रदान करना सिखाता है। वह विभिन्न सामग्री के प्रयोग की संभावनाओं की खोज करना तथा उनसे भिन्न-भिन्न प्रयोग करना सीखता है तथा उसके परिणामस्वरूप वह हर प्रकार की सामग्री पर नियंत्रण रखने तथा उसे मनचाहे ढंग से प्रयोग करने की अपनी क्षमता का विकास भी करता है। वह जिम्मेदारी लेना तथा उसे स्वतंत्र रूप से पूरा करना सीखता है। इसके अतिरिक्त वह कोई कला-योजना विकसित करने में अपने निर्णय का प्रयोग करना सीखता है। ये सभी पक्ष उसमें आत्म-विश्वास जगाते हैं। अच्छे बुरे की पहचान करने की क्षमता तथा एक अनुपम व्यक्तिगत अभिव्यक्ति विकसित करते हैं।

सृजनात्मक कला अभिव्यक्ति का मूल्यांकन पाठ्यचर्या का एक अन्य घटक है। इस संबंध में शिक्षकों द्वारा प्रयोग की जाने वाली कार्यविधियां और तकनीकें नवीनतम कार्यविधियां और तकनीकें हैं, जो हाल के एक अध्ययन पर आधारित हैं। कला-शिक्षा में छात्र के मूल्यांकन को स्पष्ट करने के लिए भी एक अध्याय रखा गया है।

अध्याय - 2

पाठ्यक्रम तथा कला सामग्री

न्यूनतम अधिगम निष्कर्ष-विषय वस्तु
मूल तत्व

पाठ्यक्रम

कला-शिक्षा का पाठ्यक्रम दो स्थूल घटकों में तैयार किया गया है। ये हैं (1) परिवर्तनशील तत्व और (2) सामान्य मूल घटक तत्व। यदि परिवर्तनशील तत्व संकेतात्मक हैं और इसमें स्थानीय समायोजनाओं की काफी गुंजाइश होती है। चूंकि स्थानीय पर्यावरण की अनेक विशिस्टताएं होती हैं, जैसे परिवेश, वनस्पति, प्राणि-समूह, रीति-रिवाज, आस्थाएं और परम्परागत कला-रूप। पाठ्यक्रम के परिवर्तनशील तत्व में इन मानदंडों को ध्यान में रखते हुए परिवर्तन किया जा सकता हैं किन्तु सामान्य मूल घटक को बिना किसी परिवर्तन के ही अपनाया जाएगा। सामान्य मूल घटक का लक्ष्य बच्चों में राष्ट्रीय भावना तथा राष्ट्रीय पहचान विकसित करना है। यह तत्व रेखांकित क्षेत्रों के अन्तर्गत अलग से दिया गया है।

इस पाठ्यक्रम में कला-शिक्षा के चार मुख्य क्षेत्र अर्थात् चित्रात्मक, प्लास्टिक, सज्जात्मक और प्रदर्शन कला शामिल किए गए हैं। शिक्षक को कला के कार्य-कलापों का आयोजन करते समय नयी कला-पद्धति पर आधारित शिक्षण-नीति अपनानी होती है। उसे इन कार्य-कलापों में सृजनात्मक रूप से भाग लेने के लिए बच्चों में उत्साह उत्पन्न करने के लिए अनेक तरीकों का इस्तेमाल करना पड़ता है। इसके लिए कक्षा का परिवेश, जहां बचपन अपने विचारों की स्वच्छंद अभिव्यक्ति के लिए सामग्री के साथ विविध प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित अनुभव करता है, सबसे अधिक उपयुक्त होगा।

पाठ्यक्रम में प्रस्तावित कार्यकलाप दो पद्धतियों अर्थात् (क) स्वतंत्र अभिव्यक्ति की पद्धति और (ख) विनिर्दिष्ट विषय की पद्धति के आधार पर तैयार और आयोजित किए जाने चाहिए। ये पद्धतियां शिक्षक के लिए ज्ञान की पृष्ठभूमि का काम करती हैं, जिसके अनुसार वह कार्यकलापों के संचालन के लिए विभिन्न साधनों और तकनीकों का विकास करता हैं वस्तुतः इन पद्धतियों का उद्देश्य बच्चों को आत्म अभिव्यक्ति के लिए सृजनात्मक अनुभव प्राप्त करने में उनकी सहायता करना है।

न्यूनतम अधिगम निष्कर्ष और तदनुरूपी कार्य-कलापों को क्रमानुसार रखा गया हैं किन्तु शिक्षक किसी भी समय कक्षा की अपेक्षानुसार जिस कार्य-कलाप को उचित समझे, उसे चुन सकता है। यह आवश्यक है कि सभी कला-रूपों के कार्य-कलापों का आयोजन प्रायः किया जाए।

यह संभव है कि कक्षा में सभी बच्चे कला-शिक्षा के सभी क्षेत्रों में अच्छे न हों। कुछ रेखाचित्र और पेंटिंग में अच्छे हो सकते हैं, तो कुछ अन्य गाने और अभिनय में अच्छे हो सकते हैं। कुछ ऐसे भी होंगे, जो

दूसरों की तुलना में मूर्तिकला में अधिक अच्छे होंगे। यह बच्चों की अपनी-अपनी भिन्नता और प्राथमिकता होती है कि वे सुविधानुसार कला के जिस माध्यम-विशेष में चाहें अभिव्यक्ति करें। ऐसा करने के लिए उन्हें प्रोत्साहन अवश्य दिया जाना चाहिए। किन्तु साथ ही साथ उन्हें आत्माभिव्यक्ति के लिए अन्य कला-रूपों के अनुप्रयोग से परिचित होने के लिए भी प्रेरित किया जाना चाहिए।

न्यूनतम अधिगम निष्कर्ष	*विषय-वस्तु*
सीखने वाले बच्चे को	***रेखाचित्र तथा पेंटिंग***
– उसको बताए गए दृश्यों/ स्थितियों/ घटनाओं का साधारण रेखाचित्र बनाना चाहिए।	रोजमर्रा की वारदातों और घटनाओं जैसे सूर्योदय, नदी में नाव, गांव का दृश्य, बाजार का दृश्य, मेले का दृश्य, बरसात का दिन, पाठ्यपुस्तक की किसी कहानी पर आधारित कोई विषय वस्तु, स्वतंत्रता आंदोलन की कोई घटना, राष्ट्रीय एकता की कोई विषय वस्तु आदि।
प्रस्तावित विषय पर पेंटिंग के द्वारा अभिव्यक्ति करनी चाहिए।	उपर्युक्त विषय/दृश्य/घटना पर पेंटिंग।

सामान्य मूल घटक

राष्ट्रीय पहचान	स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस आदि जैसे राष्ट्रीय दिवस के किसी दृश्य का रेखाचित्र/पेंटिंग।
भारत का स्वतंत्रता आंदोलन	किसी कहानी/स्थानीय कहानी पर आधारित भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन के किसी दृश्य का रेखाचित्र/पेंटिंग।
सांस्कृतिक विरासत	मेले/उत्सव/प्रकृति (प्राकृतिक दृश्य) से संबंधित कोई दृश्य।

कल्पना से किसी दृश्य या स्थिति का रेखाचित्र बनाओ।	कल्पना से किसी विचार/दृश्य का रेखाचित्र।
कल्पना से किसी विचार या दृश्य की पेंटिंग बनाओं।	कल्पना से किसी विचार/दृश्य की पेंटिंग।
	कोलाज
किसी विचार की अभिव्यक्ति करने के लिए कोलाज बनाओ।	साधारण कोलाज, जिसमें किसी विचार/दृश्य/सजावट के नमूने आदि का चित्रण दिया गया है।
प्रस्तावित विषय वस्तु पर कोलाज बनाओ।	साधारण कोलाज, जिसमें किसी प्राकृतिक दृश्य, जैसे नदी का किनारा, फेरीवाला, किसान, खेत में पशु, पिंजरे में पक्षी, भारत के मानचित्र में राष्ट्र के बर्हिकाटों का चित्रण किया गया हो।

सामान्य मूल घटक

राष्ट्रीय पहचान	भारत के मानचित्र में राष्ट्रीय नेताओं के चित्रों के बर्हिकाटों को लगाना।
भारत की स्वतंत्रता	भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन के किसी दृश्य के बर्हिकाटों द्वारा चित्रण करना।
वातावरण की सुरक्षा	वनस्पति तथा प्राणी-समूह के वित्रों के बर्हिकाटों से कोई दृश्य बनाना।

फर्श/गत्ते पर सजावट करो	**सजावट**
	फर्श/गत्ते पर सजावट का नमूना
विभिन्न आकारों के मिट्टी के बर्तनों पर साधारण ज्यामितीय नमूनों से सजावट करो।	ज्यामितीय आकारो जैसे वृत, त्रिकोण और आयत आदि से सजावट करना।

सामान्य मूल्य घटक
सांस्कृतिक विरासत फर्श और चीनी मिट्टी की सजावट के लिए परम्परागत पच्चीकारी और नमूनों का प्रयोग करना।

स्टेनसिल से डिजाइन बनाना	स्टेनसिल से डिजाइन बनाना
	मूर्तिकला
कल्पना से मिट्टी की साधारण वस्तुएं बनाना	मिट्टी से विभिन्न वस्तुएं बनाना।
बताये गए विषय पर मिट्टी से कोई साधारण वस्तु बनाना।	बताये गए विषयों जैसे बच्चा, गाय, चिड़िया आदि की साधारण आकृति बनाना।
रोजमर्रा के जीवन में दिखाई देने वाली वस्तुओं का माडल बनाना।	***निर्माण*** स्कूल की इमारत, स्वास्थ्य केन्द्र, रेलवे स्टेशन आदि का माडल।
राष्ट्रगान और देशभक्ति के गीत गाना।	***गीत-संगीत*** राष्ट्रगान और देशभक्ति के गीत जैसे वन्देमातरम, सारे जहां से अच्छा आदि।

सामान्य मूल घटक
राष्ट्रीय पहचान समूह में और अकेले राष्ट्रगान तथा वन्देमातरम् और देशभक्ति के अन्य गीत गाना।

विभिन्न क्षेत्रो के गीत गाना	क्षेत्रीय गीत

सामान्य मूल घटक
सांस्कृतिक विरासत क्षेत्रीय गीत गाना और उनकी प्रशंसा करना।

भारतीय संगीत के लय, ताल और मात्राओं का अभ्यास करना।	भारतीय संगीत के गीतों में लय, ताल और मात्राओं के तत्व।

सामान्य मूल घटक
सांस्कृतिक विरासत भारतीय शास्त्रीय संगीत के मूल तत्वों की प्रसंशा करना।

विभिन्न क्षेत्रीय लोक नृत्य का प्रदर्शन करना	**नृत्य** विभिन्न क्षेत्रीय लोक नृत्य

सामान्य मूल घटक ✓
सांस्कृतिक विरासत विविध लोक नृत्य करना और उनकी प्रंशसा करना।

पंचतंत्र की कथाओं तथा सामाजिक जीवन के विभिन्न चरित्रों की भूमिकाएं करना	**नाटक** पंचतंत्र की कथाओं तथा सामाजिक जीवन के विभिन्न चरित्रों की भूमिकाएं।
रचनात्मक नाटक में भाग लेना	रेलवे स्टेशन, बनावटी पंचायत, विधान सभा आदि से संबंधित घटनाओं को चित्रित करने वाली भूमिकाएं।

सामान्य मूल घटक
सांस्कृतिक विरासत विभिन्न भूमिकाएं करना तथा पंचतंत्र की कथाओं के चरित्रों की सराहना करना।
समतावाद लोकतंत्र तथा धर्मनिरपेक्षता बनावटी पंचायत, विधानसभा आदि की विभिन्न घटनाओं, स्थितियों को चित्रित करने के लिए विभिन्न भूमिकाएं करना।

समाज में देखे हुए किसी नाटक की चर्चा करना	नाटक के विभिन्न पक्षों पर चर्चा करना।
कला प्रदर्शनी में भाग लेना	कला प्रदर्शनी की योजना बनाना और आयोजन करना।

कला सामग्री

बच्चों को रचनात्मक अनुभव प्रदान करने के लिए विद्यालय मुख्य रूप से स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री पर निर्भर करेगा। यह सामग्री अच्छी गुणवत्ता की होनी चाहिए। अच्छी गुणवत्ता की सामग्री से न केवल कार्य करने की प्रेरणा मिलती है बल्कि कला अभिव्यक्ति को सुधारने में सहायता भी मिलती है। इस संबंध में काम चलाऊ व्यवस्था पर बहुत अधिक जोर देने से उसके खराब प्रभाव के कारण कभी-कभी बच्चों का उत्साह मंद पड़ जाता हैं अतः यह जरूरी है कि बच्चों द्वारा अपेक्षित या प्रदर्शन करने के लिए विभिन्न सामग्री पर्याप्त और अच्छी होनी चाहिए। विभिन्न कला रूपों के लिए अपेक्षित सामग्री की सूची नीचे दी गयी है।

क्रम सं.	*कार्य-कलाप का क्षेत्र*	*प्रस्तावित कला-सामग्री*
1.	रेखाचित्र	पेंसिल/चारकोल/पेस्टल स्टिक/स्केच पेन/रंगीन चाक/ कलम और स्याही, सफेद कागज या कोई अन्य कागज।
2.	पेंटिंग	पेस्टल रंग/पेंटल रंग/स्केच पेन/मोमी रंग/चूरा रंग और गोंद/पोस्टर रंग आदि, चपटे ब्रुश (मोटे और पतले), सफेद कागज/चार्ट पेपर/खाकी कागज या कोई अन्य कागज।
3.	कोलाज	रंगीन कागज/कपड़े की कतरनें/छपाई की रद्दी सामग्री/ प्राकृतिक सामग्री आदि गोंद/आटे की लुगदी/ फवीकोल, सफेद चार्ट पेपर/खाकी कागज या कोई अन्य कागज।
4.	सजावट (फर्श की)	रंगीन भूसी/रंगीन पाउडर/रंगीन रेत/प्राकृतिक सामग्री आदि।
	(बर्तन)	मिट्टी के बर्तन (स्थानीय रूप से उपलब्ध), खड़िया मिट्टी/चाक मिट्टी/ चिकनी मिट्टी आदि।
	(मुखौटे)	चूरा रंग और गोंद, ब्रश आदि।
5.	छपाई	सब्जी (आलू, प्याज, भिंडी आदि) चाकू, पोस्टर रंग/चूरा, रंग और गोंद, सफेद कागज, चार्ट पेपर/खाकी कागज या कोई अन्य कागज
6.	निर्माण	चार्ट पेपर/हार्ड कार्ड, गोंद कैंची, धागा, पोस्टर रंग/पेस्टल रंग, ब्रश, बांस की लकड़ी।
7.	मूर्तिकला	कुम्हार की मिट्टी/तालाब की मिट्टी, मूर्तिकला के औजार आदि।
8.	गीत-संगीत	ताल वाद्य, कैसेट/टेप रिकार्ड आदि स्थानीय संगीत वाद्य आदि।
9.	नृत्य	स्थानीय तथा क्षेत्रीय नृत्यों की वेश-भूषा चार्ट बनाने की सामग्री, आदि।
10.	नाटक	मंच की सजावट की सामग्री, मेक-अप की सामग्री, वेश-भूषा आदि।

अध्याय - 3

कला शिक्षा में छात्र का मूल्यांकन

दृश्य एवं प्रदर्शन कला के मूल्यांकन

प्राथमिक विद्यालय-शिक्षा में कला संबंधी कार्यकलापों के विषयों की समस्या अत्यंत विकट तथा सार्वभौमिक है। इस तथ्य के बावजूद कि कौशल तथा कार्य-कलाप विषयों, दोनों के छः अध्ययन-क्षेत्रों से युक्त एक पाठ्यचर्या विद्यालयों में लागू कर दी गई है, किंतु वास्तव में यह पाठ्यचर्या अनेक विद्यालयों में आंशिक रूप से ही लागू है। कार्य-कलाप के विषयों, जैसे, कार्य-अनुभव, कला-शिक्षा, स्वास्थ्य शिक्षा और कुछ सीमा तक पर्यावरण अध्ययन की प्रायः उपेक्षा की जाती है। इन विषयों के प्रति इस प्रकृति के बारे में प्रायः यह तर्क दिया जाता है कि इनकी उपेक्षा इसलिए की जाती है क्योंकि छात्रों के मूल्यांकन की ऐसी कोई उपयुक्त योजना नहीं है, जिसके आधार पर उनके माध्यम से विकसित किए जाने वाले अधिगम निष्कर्षों का परीक्षण किया जा सके। यह तर्क वास्तव में एक ठोस तर्क है, क्योंकि परीक्षण और मूल्यांकन शिक्षा-प्रक्रिया के आवश्यक अंग हैं। छात्र-मूल्यांकन-योजना के अभाव में जांच और उत्तरदायित्व की संभावना बहुत कम रह जाती है। इसमें कोई संदेह नहीं कि इस मुद्दे पर तत्काल ध्यान देना जरूरी है।

कला शिक्षा एक ऐसा विषय है, जिसके लिए छात्र-मूल्यांकन की एक अपनी उपयुक्त योजना तैयार करना आवश्यक है। इस विषय को, जिसमें विविध कला-रूपों (चित्रात्मक, प्लास्टिक, प्रदर्शन कला आदि) को एकीकृत किया गया है, पूर्ववर्ती प्रवृत्तियों से एक भिन्न दृष्टिकोण से पाठ्यचर्या में शामिल किया गया है। विगत में, ये कलाएँ कुछ कला-रूपों और तकनीकों का अनुकरण करके, जो उन्हें सीखने के लिए जरूरी होती थीं, विभिन्न कौशलों के विकास के लिए सिखाई जाती थीं और छात्रों का मूल्यांकन छात्रों द्वारा कक्षा में प्राप्त या विकसित अनुकरण कौशल या योग्यता की मात्रा के निर्धारण के आधार पर किया जाता था। उसके बाद उनके कार्य का तुलनात्मक आधार पर कोटि या श्रेणी निर्धारण किया जाता था। किंतु अब वर्तमान दृष्टिकोण के अनुसार इन कलाओं का उपयोग स्वतंत्र आत्माभिव्यक्ति के लिए एक माध्यम के रूप में किया जाता है। इस दृष्टिकोण में यह माना जाता है कि प्रत्येक बच्चे में अपने विचारों को व्यक्तिगत अभिव्यक्ति प्रदान करने के लिए इन कलाओं का उपयोग करने की कुछ अंतर्निहित योग्यताएँ होती हैं। अतः बच्चे की अभिव्यक्ति (उसका कला-कौशल नहीं) को ऐसा मुख्य निष्कर्ष समझा जाता है, जिसका मूल्यांकन किया जाता है। चूंकि कक्षा के हर बच्चे की अभिव्यक्ति दूसरे से भिन्न होती है अतः उनमें परस्पर तुलना करने की कोई संभावना नहीं होती अतः इस संबंध में व्यक्तिगत आधार पर मूल्यांकन के साक्ष्यों की खोज की जानी चाहिए और हर बच्चे का उसके सृजनात्मक विकास के लिये मूल्यांकन किया जाना चाहिए। यह इस दृष्टिकोण का एक ऐसा अत्यंत जटिल पक्ष है

जिस पर अवश्य विचार किया जाना चाहिए ताकि छात्रों के मूल्यांकन के लिये उपयुक्त मार्ग निर्देश तैयार किये जा सकें। इस संबंध में मूल्यांकन की ऐसी योजना तैयार करने की आवश्यकता होगी जिसे सभी शिक्षक आसानी से लागू कर सकें। यह योजना ऐसी होनी चाहिए जिससे कि आवश्यकता से अधिक उपलब्धि प्राप्त करने वाले और सामान्य से कम उपलब्धि प्राप्त करने वाले बच्चों की स्थिति की एक नजर में जानकारी प्राप्त हो सके और उनकी जाँच् तथा उत्तरदायित्व पूरा किया जा सके।

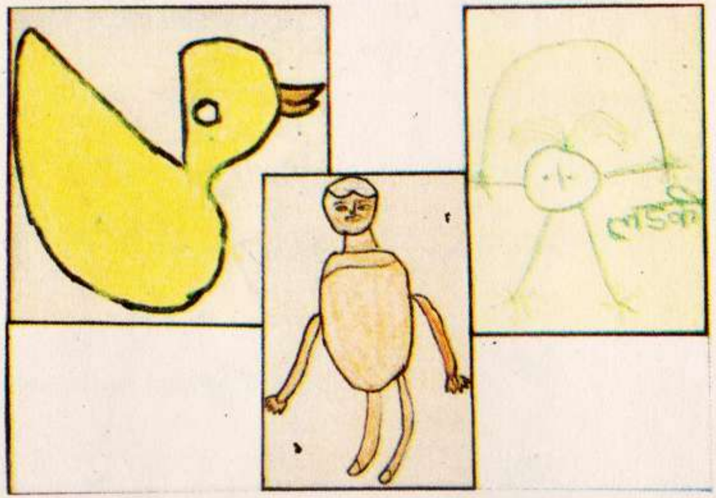
कला अभिव्यक्ति में सृजनात्मकता के साक्ष्यों को पहचानना (दृश्यात्मक कला)

चूंकि कला शिक्षा के दृष्टिकोण का मुख्य केंद्र विभिन्न कार्य-कलापों के माध्यम से बच्चों में सृजनात्मकता, व्यक्तित्व की विशिष्टता और अभिव्यक्ति का विकास करना है। अतः मूल्यांकन के प्रयोजन के लिये हर बच्चे के कार्य में सृजनात्मक स्वरूप के लक्षणों की पहचान करनी होगी। निसन्देह यह लक्षण ऐसे सूक्ष्म निष्कर्ष होते हैं जिन्हें बच्चे के काम का सावधानीं पूर्वक अध्ययन करने से महसूस किया जा सकता है या देखा जा सकता है। उनको पहचानने के लिये शिक्षक को उन्हें देखने की ग्राह्यता विकसित करनी होगी। चूंकि शिक्षक को बच्चे के काम का अवलोकन करने के अवसर प्रायः मिलते हैं अतः उसके लिए इन निष्कर्षों की खोज करना और प्रत्येक बच्चे की योग्यता के अनुसार उनका मूल्यांकन करना सरल होगा किंतु उनके बारे में एक स्थूल धारणा बनाना आवश्यक होगा क्योंकि इससे शिक्षकों को ऐसे गुणों की खोज करने में सहायता मिलेगी। सबसे पहले इस दृष्टिकोण की आवश्यकताओं पर विचार करना और यह रेखांकित करना जरूरी है कि इसके अन्तर्गत किस प्रकार के लक्षण उपयुक्त होंगे। ये इस प्रकार हैं :

1 मूल्यांकन के कुछ लक्षण, जैसे : कौशल, रूप, तकनीक आदि वर्तमान दृष्टिकोण के विषय क्षेत्र के अंतर्गत नहीं आते, अतः इन तत्वों पर योग्यता के मूल्यांकन के लिये विचार करना जरूरी नहीं है। जो शिक्षक केवल कला शिक्षा की विगत प्रवृत्तियों से ही परिचित हैं, उन्हें यह समझाना होगा कि वे इन पक्षों पर ध्यान देना छोड़ दें।

2. चूंकि वर्तमान दृष्टिकोण में मूलतः इस बात पर जोर दिया गया है कि बच्चे को कला कार्यकलापों के माध्यम से सृजनात्मक प्रक्रियाओं का अनुभव प्रदान किया जाए, अतः बच्चे के व्यक्तिगत अभिव्यक्ति करने के प्रयास को मूल्यांकन का एक महत्वपूर्ण लक्षण समझा जायेगा। इस संबंध में जो लक्षण विचार करने योग्य हैं, वे इस प्रकार हैं– बच्चे का व्यक्तिगत विचार, विचार को समझने की उसकी योग्यता, उसके द्वारा विचार का विवरण प्रस्तुत करने की क्षमता, विचार की अभिव्यक्ति के लिये कला माध्यम के प्रयोग के लिए उसके द्वारा किया गया प्रयास और विचार के सम्प्रेषण का समग्र प्रभाव। इन पक्षों पर उसके आयु स्तर, हस्त-कौशल क्षमता, ध्यान केंद्रित करने की क्षमता और अनुभव, रुचि आदि जैसे लक्षणों को ध्यान में रखकर विचार किया जा सकता है।

उपयुर्क्त पैरा 2 में उल्लिखित लक्षण महत्वपूर्ण हैं और शिक्षकों के लिए यह जरूरी है कि वे इन पक्षों की समझ विकसित करें। बच्चे का निजी विचार उसकी अपनी धारणा से ही बनता है और यह धारणा उसके मन में अपने परिवेश से अंतःक्रिया के परिणामस्वरूप बनती है। प्रत्येक बच्चे का एक



लक्षणिक प्रदर्शन

आन्तरिक संसार होता जिसमें विभिन्न रूपों, आकृतियों और रागों का एक भंडार होता हैं वह अपने आसपास की घटनाओं को देखते समय, अनुभव करते समय और उनका अवलोकन करते समय उन्हें एकत्र करता है। वह अपने परिवेश में जिन वस्तुओं का अवलोकन करता है उनके परस्पर संबंधों का कुछ अर्थ भी निकालता है। अपनी स्वाभाविक क्षमता से वह अभिव्यक्ति करने की कोशिश करता है और अपने ऐसे मौलिक तरीके खोज निकालता है जिन्हें वह सम्प्रेषण के लिये प्रभावकारी समझता है। बच्चे के बारे में इन सभी पक्षों की जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है क्योंकि वह कला अभिव्यक्तियों के माध्यम से केवल अपने को ही अभिव्यक्त करता है। इसलिए उपर्युक्त पैरा 2 में उल्लिखित लक्षणों को कला-कार्यकलापों का मूल्यांकन करते समय प्रोत्साहन देना और उचित महत्व देना आवश्यक है।

मूल लक्षणों के रूप में कला अभिव्यक्ति की विशेषतायें

ऊपर उल्लिखित लक्षणों के अतिरिक्त बच्चे के कला की अभिव्यक्ति के ऐसे विशिष्ट तरीके या प्रवृत्तियाँ होती हैं जो 6 से 11 वर्ष की आयु के दौरान उसके सहज विकास का परिणाम होती हैं। ये मूल्यांकन के प्रयोजन के लिए भी महत्वपूर्ण लक्षण हैं क्योंकि इनके आधार पर यह निर्धारित किया जा सकता है कि बच्चे की अभिव्यक्ति उसकी आयु के अनुरूप हैं अथवा नहीं। ऐसे अनेक अनुसंधान-अध्ययन किए गये हैं जिनसे बच्चों की अन्तर्निहित क्षमताओं और कला अभिव्यक्ति के तरीकों या विशेषताओं के बारे में कुछ महत्वपूर्ण तथ्य प्रकाश में आये हैं। एक मनोवैज्ञानिक निष्कर्ष के अनुसार "एक ही आयु वर्ग के बच्चे अपनी कला-अभिव्यक्ति में समान विशेषताओं का प्रदर्शन करते हैं।" अध्ययन के इस निष्कर्ष से शिक्षक को इन विशेषताओं की खोज करने में सहायता मिल सकती है और वह मूल्यांकन के लिये इनका इस्तेमाल कर सकता है। इसके अतिरिक्त विचार की मौलिकता, विवरणयुक्त चित्रण, माध्यम का अनुप्रयोग जैसे अतिरिक्त लक्षण भी है, जिनकी चर्चा पहले की गई है।

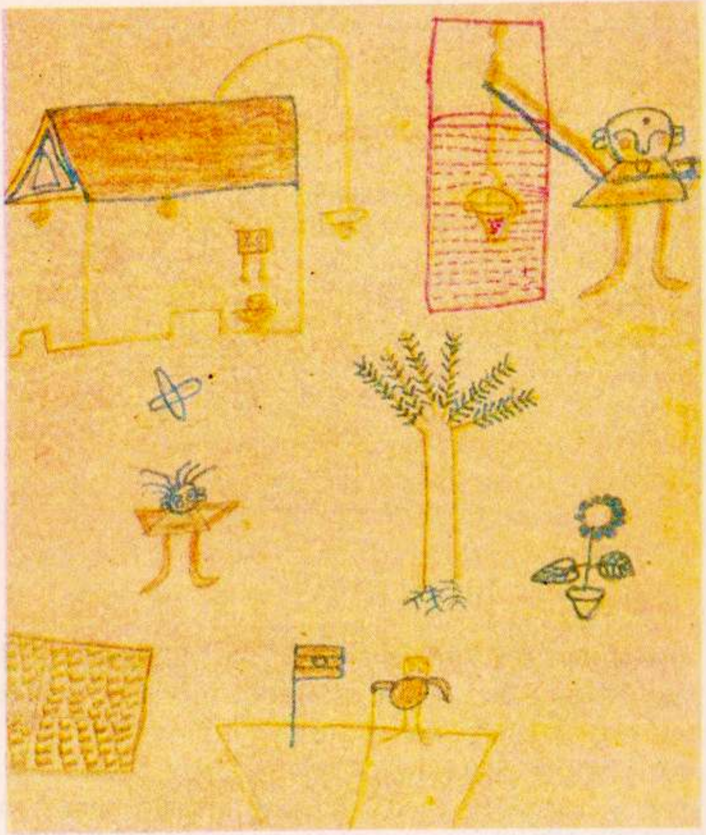
कला अभिव्यक्ति की विशेषताओं को प्राथमिक विद्यालय स्तर के आयु वर्ग में तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है।

कक्षा	कला अभिव्यक्ति की विशेषतायें
I और II	प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति अर्थात् आस-पास के परिवेश में अवलोकित या अनुभूत विभिन्न वस्तुओं के सरलीकृत प्रतीकों के माध्यम से अभिव्यक्त करना।
III और IV	योजनागत अभिव्यक्ति अर्थात् कुछ व्यक्तिगत विचारों के सम्प्रेषण के लिये वस्तुओं का चित्रण करते हुए दृश्यात्मक योजना के माध्यम से अभिव्यक्ति करना।
	अभिव्यक्ति में यथार्थवाद का आरंभ, अर्थात् व्यक्तिगत विचारों और भावनाओं के संप्रेषण के लिए जानी पहचानी आकृतियों, रूपों, रंगों और डिजाइनों के माध्यम से अभिव्यक्ति करना।

कला अभिव्यक्ति की इन विशेषताओं का नीचे विस्तार से उल्लेख किया जा रहा है।

प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति

यद्यपि शुरू में प्राथमिक विद्यालय स्तर के बच्चों में विकास की दर भिन्न-भिन्न होती है, फिर भी यह मान लिया जाता है कि कक्षा एक में प्रवेश के समय वे "प्रतीकात्मक अवस्था" में होते हैं। उनकी प्रगति स्पष्टतः परिलक्षित होती है क्योंकि इससे पहले वे किसी एक वस्तु की संकल्पना पर अपने विचार को आधारित कर रहे होते हैं। किन्तु अब वे अपनी कला अभिव्यक्ति में अधिक वस्तुओं को दिखाते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि अब उनकी समझ बेहतर हो गई है, उनकी अवलोकन क्षमता में भी वृद्धि हुई है और उनका अनुभव भी पहले से अधिक समृद्ध हो गया है। इस आयु वर्ग के



आरेखीय प्रदर्शन

बच्चे अब अपने विचार पहले से नहीं बनाते बल्कि वे तत्काल ही कार्य करते हैं और अपने विचारों का अनुसरण करते हैं। जैसे-जैसे वस्तुएं उनके मस्तिष्क में प्रकट होती जाती हैं, वैसे-वैसे वे एक-एक करके उनका चित्रण करते जाते हैं। इस आयु वर्ग के बच्चों में कुछ जाने पहचाने कला रूपों को बार-बार चित्रित करने की प्रवृत्ति विकसित हो जाती है क्योंकि वे समझते हैं कि ऐसा करना आसान है किन्तु जब उन्हें नए विचार, अनुभव सामग्री दी जाती है तब वे नए रूपों का चित्रण करने के लिए प्रेरित होते हैं।

योजनागत अभिव्यक्ति

बच्चों की योजनागत कला अभिव्यक्ति की शुरूआत मध्य-प्राथमिक स्तर के दौरान होती है। इस आयु में वे स्वभाव से और अधिक ग्रहणशील हो जाते है और उनकी अभिव्यक्ति की क्षमता भी बढ़ जाती है। उनमें अब स्थान और आकार के बीच के संबंधों को समझने का अच्छा ज्ञान होता है। वे संसार की वास्तविकताओं के संबंध में अपनी बढ़ती हुई जागरूकता से नए-नए विचार ग्रहण करते हैं। वे अब यह महसूस करते हैं कि उनके पहले के कला रूप और प्रतीक निर्जीव थे, इसलिए वे ऐसे नये प्रतीकों की खोज करते हैं जिनमें उनके प्रयोजन के अनुकूल क्रियात्मकता होती है। एक प्रकार से अब उनकी कला अभिव्यक्ति अधिक सार्थक और प्रभावशाली लगती है उसमें अब अभिव्यक्ति की मौलिकता भी दिखाई देती है। यदि बच्चों को कोई सामान्य विषय वस्तु भी दी जाए, तब भी हर बच्चा उसकी अभिव्यक्ति अपने साधनों के आधार पर ही करेगा। इस आयु वर्ग की कला अभिव्यक्ति में उनके रोचक गुण होते हैं। उनमें से एक उनके द्वारा चित्रित किए जाने वाले आकारों और आकृतियों में अनुपात का प्रयोग करना हैं वे तीन प्रकार के अनुपात का उपयोग करते हैं (क) दृश्यात्मक अनुपात— जब उन्हें कुछ ऐसी वस्तुओं का चित्रण करना होता है जिन्हें वे समान महत्व देते हैं, तब वे उनके आकार के संबंधों को बनाए रखने का प्रयास करते हैं। (ख) भावनात्मक अनुपात— बच्चे इस अनुपात का प्रयोग प्रायः वस्तुओं के भावनात्मक महत्व का चित्रण करने के लिए करते हैं। वे ऐसी वस्तुओं का चित्रण अन्य वस्तुओं की तुलना में अधिक बड़े आकार में करते हैं, और (ग) कार्यात्मक अनुपात— बच्चे प्रायः इस अनुपात का प्रयोग किसी वस्तु के कार्यचालन गुण को दिखाने के लिए करते हैं। ऐसी वस्तु का चित्रण करते समय वे उस के काम को किसी मुद्रा को दिखाने के लिए काम करने वाले भागों के आकार को बढ़ा या घटा देते हैं। बच्चों की कला-अभिव्यक्ति की एक अन्य विशेषता स्थान का उपयोग है। उन्हें अब स्थान के संबंध की स्पष्ट संकल्पना होती है। वे वस्तुओं को अलग करके नहीं देखते बल्कि उन्हें दूरी और दिशा के माध्यम से एक दूसरे से जुड़ा हुआ देखते हैं। चूंकि उन्हें परिदृश्य का कोई ज्ञान नहीं होता अतः वे ऐसे विचारों के चित्रण के लिए अपने तरीके बना लेते हैं। वे कागज पर आकृतियों को एक दूसरे से दिशाओं को रखकर चित्रित करते हैं। ऐसा करते समय वे इस आशंका से एक आकृति पर दूसरी आकृति नहीं बनाते कि उनके कुछ भाग पीछे छिपे न रह जाएं। उदाहरण के लिए जब उन्हें गिरती हुई बरसात का चित्रण करना होता है तब वे उसके सामने कोई आकृति नहीं दिखाते। वे सोचते हैं कि वर्षा केवल आकृति के ऊपर ही पड़नी चाहिए। स्थान के आयोजन की एक अन्य विशेषता यह है कि यदि

आकृतियों की संख्या अधिक हो तो वे उनके आकार छोटे कर देते हैं ताकि वे उपलब्ध कागज में समा सके। कभी-कभी वे नीली पट्टी से एक आकाश रेखा बनाते हैं और इस स्थान को आकाश में दिखाई देने वाली वस्तुओं से भर देते हैं।

अभिव्यक्ति में यथार्थवाद का आरंभ

बच्चों की कला अभिव्यक्ति की अगली अवस्था— 'यथार्थवाद का आरंभ है,' जो 9-11 वर्ष की आयु के दौरान स्पष्ट परिलक्षित होने लगता है। चूंकि इस अवस्था से बचपन से किशोरावस्था में पदार्पण की शुरूआत होती है इसलिए उनमें शारीरिक और मनोवैज्ञानिक विकास की परिपक्वता देने लगती हैं इस आयु में उन्हें हर चीज के बारे में जानने की जिज्ञासा होने लगती है और वे छोटी-छोटी बातों को ध्यान से देखने-समझने में रूचि लेने लगते हैं। अब उन्हें न केवल अपने आस-पास की दुनिया का गहन ज्ञान हो जाता है बल्कि वे विभिन्न संबंधों को समझने के लिए अपनी प्रतिक्रियाओं और अनुभूतियों का प्रयोग भी करने लगते हैं।

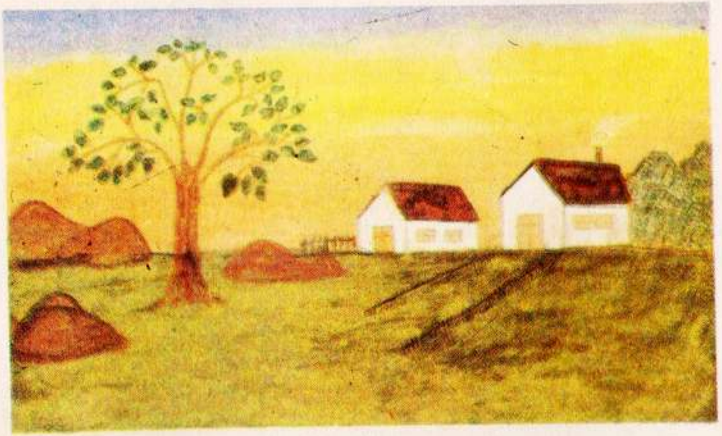
कला अभिव्यक्ति में वे रंग, रेखा और रूप रेखा जैसे तत्वों के प्रति संवेदनशील होते हैं वे अब तत्कालिक और प्रत्यक्ष रूप से कार्य नहीं करते अपितु किसी सामग्री का प्रयोग करने से पहले विचारों पर गंभीरता से विचार करते हैं। उनकी कला अभिव्यक्ति में एक महत्वपूर्ण तत्व परिप्रेक्ष्य की उपस्थिति होता है वे यह समझने लगते हैं कि लोग, घर और पेड़-पौधे विभिन्न स्थानों पर उपस्थित हैं और उनमें एक दूरी विद्यमान है। वे



यथार्थ का प्रदर्शन

इन स्थानों को अग्रभूमि, मध्य भूमि और पृष्ठभूमि के रूप में देखते हैं। वे रंग भरने के लिए जिन रंगों का प्रयोग कर रहे थे वे अब उनके लिए वस्तुओं के स्थानीय रंगों का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे कभी-कभी उनका प्रयोग अपने मनोवेगों और अनुभूतियों के चित्रण के लिए भी करते हैं।

यथार्थवाद के प्रति उनकी बढ़ती हुई प्रवृत्ति का कारण उन पर पड़ने वाले विभिन्न प्रभाव हैं। वे पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं में ऐसे चित्र और रेखाचित्र देखते हैं जिनका चित्रण यथार्थ रूप से किया गया होता है।



यथार्थ का प्रदर्शन

वे यह निष्कर्ष निकालते हैं कि यथार्थवादी रूप ही केवल कला का सच्चा रूप है और यह कला के मूल्यांकन के संबंध में किसी वयस्क का सच्चा मूल्यांकन है। वे यह अनुभव करने लगते हैं कि उनकी प्रतीकात्मक और अमूर्त कला अभिव्यक्ति में कोई आकर्षण नहीं है क्योंकि उनसे यह आशा की जाती है कि वे उसके बारे में स्पष्टीकरण देकर समझायेंगे। ऐसी विवशताओं को देखते हुए वे अपने अभिव्यक्ति के पहले के साधनों को छोड़ने लगते हैं। इस प्रभाव के अन्तर्गत इस प्रकार की प्रवृत्ति बच्चों की उपलब्धि नहीं है। प्रभावकारी मार्गदर्शन द्वारा इस पर रोक लगाई जानी चाहिए ताकि वे आत्माभिव्यक्ति के अपने मूल तरीकों को बनाए रखें, उन्हें निर्मित करें और उनमें सुधार करें।

प्रदर्शन कला का मूल्यांकन

संगीत, नृत्य और नाटक (प्रदर्शन कला) के क्षेत्रों में ऐसी कोई प्रथक विशेषता नहीं है जिसे सामान्य आधार पर समझा जा सके न ही उसके लिए कोई अध्ययन है। कुछ ऐसे संकेत नीचे दिये जा रहे हैं जिनसे इन कला रूपों के कार्यकलापों के मूल्यांकन के विषय क्षेत्र के बारे में कुछ जानकारी हो सकती है।

प्रदर्शन कला के कार्य-कलापों के मूल्यांकन का अभिप्राय यह निर्णय करना नहीं है कि बच्चे का प्रदर्शन कितना अच्छा है। बच्चे के प्रस्तुतिकरण के अपने अभूतपूर्व गुण होते हैं। हम यह जानते हैं कि कक्षा एक और दो के बच्चे सामान्य रूप से किसी गीत या कविता की दो या तीन पंक्तियां आमतौर पर बीच-बीच में सांस लेने के लिए रुकते हुए गा या पढ सकते हैं। यह उनकी एक स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। दूसरा ओर कक्षा V के बच्चे अधिक सही तरीके से गीत गाने या कविता पाठ करने के योग्य हो जाते हैं। इन दो अवस्थाओं से बच्चों के प्राकृतिक विकास का पता चलता है। यदि हम इस पक्ष का मूल्यांकन करें तो हम अप्रत्यक्ष रूप से कौशल का मूल्यांकन करेंगे जो कि निश्चित रूप से हमारा लक्ष्य नहीं है। वास्तव में लक्ष्य यह है कि बच्चों को प्रदर्शन कला में अपनी रुचि और योग्यता विकसित करनी चाहिए और उनमें भाग लेकर या उनकी सराहना करके आनंद की अनुभूति होनी चाहिए। शिक्षक द्वारा सार्थक और प्रोत्साहन पूर्ण टिप्पणी देने से उन्हें इस दिशा में निरन्तर प्रेरणा मिलेगी। यह उल्लेखनीय है कि यह हो सकता है कि कक्षा के कुछ बच्चों में दूसरों की तुलना में अधिक प्रतिभा हो सकती है। इसका अर्थ यह नहीं कि ऐसे बच्चों को दूसरों की तुलना में प्राथमिकता दी जाए। शिक्षक को बिना किसी भेदभाव

के पूरी कक्षा को अपने साथ लेकर चलना चाहिए। बच्चों के कार्य के मूल्यांकन के दौरान "बच्चों के कार्य निष्पादन रिकार्ड" में शिक्षक को "अच्छा" "बहुत अच्छा" और "सुन्दर" में से कोई उपयुक्त अभ्युक्ति देनी चाहिए।

कला-शिक्षा में छात्र-मूल्यांकन के मानदण्ड के निर्धारण के लिए अध्ययन

सृजनात्मक कला अभिव्यक्ति के मूल्यांकन के मानदण्डों का पता लगाने के लिए विद्यालय-पूर्व तथा प्राथमिक शिक्षा विभाग, रा. शै. अ. प्र. प. में इन पंक्तियों के लेखक ने एक विस्तृत अध्ययन किया। इस अध्ययन के अंतर्गत कला-शिक्षा के चार कला-रूपों में से दो कला रूपों से संबंधित 28 परीक्षण मदें विकसित की गयी थीं। इन परीक्षण मदों के माध्यम से एकत्र की गई बच्चों की कृतियों के मूल्यांकन के लिए "बच्चों का कार्य-निष्पादन रिकार्ड" नामक एक प्रोफार्मा भी तैयार किया गया था। ये परीक्षण तीन राज्यों, यथा हिमाचल प्रदेश, तमिलनाडू और हरियाणा में आठ विद्यालयों में किए गए थे। चुने गए विद्यालयों ने शिक्षण समूहों के विभिन्न वर्गों, अर्थात् शहरी, ग्रामीण और दूरवर्ती पिछड़े क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व किया। लगभग 5500 परीक्षण मदें कक्षा 2 से 5 के लगभग 800 बच्चों पर लागू की गई थीं। रेखाचित्र, पेंटिंग, कोलाज और छपाई के क्षेत्रों में कार्यकलापों का आयोजन किया गया। इन कार्य-कलापों का आयोजन दो प्रभावकारी पद्धतियों, स्वतंत्र अभिव्यक्ति तथा "विनिर्दिष्ट विषय" के माध्यम से किया गया। परीक्षण मदों पर सभी ब्यौरे, जैसे प्रत्येक कार्यक्रम के लिए नियत समय, कक्षा, विषय वस्तु, प्रयोग किया जाने वाला माध्यम, पद्धति आदि मुद्रित थे। इन ब्यौरों के अतिरिक्त बच्चे का नाम, कक्षा, आयु आदि भी मुद्रित थी।

कला-कार्यकलाप करने के लिए प्रत्येक परीक्षण पद पर ही काफी अधिक स्थान छोड़ा गया था। ये परीक्षण करते समय कुछ संगठनात्मक पक्ष, जैसे कक्षा का आकार, कला-सामग्री का वितरण, कार्यकलाप के स्वरूप का स्पष्टीकरण, बैठने की व्यवस्था आदि भी सुनिश्चित किए गये थे। परीक्षण-मदों के अध्ययन और मूल्यांकन का काम एक ऐसे विशेषज्ञ-समूह द्वारा किया गया था, जिसे विषय के दृष्टिकोण के परिणामों और अन्य मुख्य विशेषताओं की पूरी जानकारी थी। उन्होंने ऊपर उल्लिखित सामान्य गुणों को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित उप-शीर्षकों के अधीन कार्य का मूल्यांकन किया :— (क) कला— अभिव्यक्ति में सृजनात्मकता के लक्षणों की पहचान, और (ख) मूल लक्षणों के रूप में कला— अभिव्यक्ति की विशेषताएं। इन गुणों की समीक्षा के रूप में परीक्षण-मदों की शुरू में समीक्षा की गयी थी और ये पक्ष सुनिश्चित कर लेने के बाद उनके मूल्यांकन का कार्य आरंभ किया गया था।

इस सामग्री का मूल्यांकन करने के लिए एक सामान्य निर्देशक युक्त एक तीन बिंदु के पैमाने का प्रयोग किया गया, जिसमें पहले धन (प्लस) और ऋण (माइनस) के चिन्ह लगे थे, जो उच्च और निम्न कार्य-निष्पादन को सूचित करते थे। यह पैमाना – ए, ए. + ए के रूप में था, जो समरूपी रूप से वर्णनात्मक अभ्युक्तियों के रूप में सुंदर, "बहुत अच्छा", और "अच्छा" को सूचित करता था। इस संबंध में एक आम सहमति थी कि बच्चों द्वारा अपनी अन्तर्निहित क्षमता से किए जाने वाले आत्मभिव्यक्ति के कार्य पर कार्यवाही करते समय अभ्युक्ति देने से ऐसा प्रतीत नहीं होना चाहिए कि वे उससे हतोत्साहित हो रहे हैं। कम से कम दी जाने वाली अभ्युक्ति भी "अच्छा" के रूप में होनी चाहिए। जो व्याख्या करने पर बच्चे

के लिए एक संतोषजनक अभ्युक्ति प्रतीत होनी चाहिए लेकिन शिक्षक के लिए इससे यह पता चलता है कि बच्चे की उपलब्धि औसत से कम है। ऐसे मामलों में वह बच्चे के कार्य निष्पादन में सुधार लाने के लिए अतिरिक्त सावधानी बरत सकता है या कुछ निवारक तरीके अपना सकता है। इस बात पर भी सहमति व्यक्त की गयी कि किसी आवधिक या शैक्षिक स्तर की समाप्ति पर अभ्युक्तियों का औसत "ए" या "बहुत अच्छा" अवश्य होना चाहिए। ताकि यह निर्धारित किया जा सके कि बच्चे ने कला शिक्षा के अधिगम निष्कर्षों के निष्णात् स्तर की उपलब्धि प्राप्त कर ली है। इसका परिकलन किसी एक आवधिक दौरान आयोजित कार्य-कलापों के लिए प्राप्त अभ्युक्तियों के औसत के आधार पर किया जाना चाहिए।

इन मूल्यांकन आंकड़ों के विश्लेषण से यह पता चलता है कि बच्चों ने कुल मिलाकर अभ्युक्तियों के औसत के रूप में "ए" प्राप्त किया है। कुछ ऐसे भी उदाहरण थे जिनमें बच्चों की उपलब्धि निर्धारित मानदंडों से अधिक थी और कुछ ऐसे भी उदाहरण थे जिनमें कुछ बच्चों ने निर्धारित मानदंड से कम अभ्युक्ति प्राप्त की थी। कम अभ्युक्ति प्राप्त वाले बच्चों में ऐसे भी थे जिनका निष्पादन एक कला रूप में औसत था किन्तु दूसरे कला रूप में औसत से कम था।

इस अध्ययन का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह विश्वास था कि कला के विभिन्न रूपों के कार्यकलापों का मूल्यांकन शिक्षकों द्वारा किया जा सकता है सामान्य रूप से बच्चों की अभिव्यक्तियों से यह स्पष्ट होता है कि उनके कला रूपों को या उनके माध्यम से जिन विचारों को वे सम्प्रेषित करना चाहते थे, उन विचारों को अच्छी तरह से पहचाना जा सकता है। इसके अतिरिक्त इस अध्ययन से हमें सृजनात्मक कला अभिव्यक्ति के कार्य का मूल्यांकन करने की एक प्रभावकारी तकनीक प्राप्त होती है इस अध्ययन के आधार पर कला शिक्षा में छात्र मूल्यांकन की कुछ कार्यविधियां और तकनीकें मार्ग निर्देश के रूप में प्रस्तावित की गयी है।

कला शिक्षा में छात्र मूल्यांकन के लिए स्थूल मार्ग निर्देश

छात्र मूल्यांकन के स्थूल मार्ग निर्देश निम्नलिखित हैं जिन्हें शिक्षक को बच्चों के कला कार्यकलापों का मूल्यांकन करने के लिए "बच्चों का कार्य निष्पादन" रिकार्ड का प्रयोग करते समय ध्यान में रखना चाहिए।

1— कला शिक्षा के मूल्यांकन के अन्तर्गत यह परिकल्पना की गयी है कि हर बच्चे की उपलब्धि और विकास को एक अनुपम तत्व समझा जाये और इसका बच्चों के कार्य-कलापों की तुलना करने से कोई लेना देना नहीं हैं।

2— इसमें अभिव्यक्ति से संबंधित किसी विशिष्ट कला-कौशल के आधार पर निर्णय करने की बजाय हर बच्चे की अन्तर्निहित क्षमता के अनुसार उसकी आत्माभिव्यक्ति पर जोर दिया गया है।

3— छात्र मूल्यांकन का मुख्य लक्ष्य सृजनात्मक कार्यकलापों में बच्चे की रुचि बढ़ाना है और हर बार पहले से अच्छी सहभागिता के लिए उनमें धीरे-धीरे विश्वास जागृत करना है।

4— इस विषय की शिक्षा-नीति का एक अनिवार्य तत्व ये है कि बच्चों को अपने आप अभिव्यक्त करने के लिए स्वच्छन्द तथा निबार्ध अवसर प्रदान किए जाएं। इसी प्रकार से शिक्षक (शिक्षकों) द्वारा किये जाने वाले

मूल्यांकन में उन्हें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हर बच्चा स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्ति करता है और उसकी कला अभिव्यक्ति अपने आप में अनूठी है।

5— प्राथमिक विद्यालय स्तर के दौरान विभिन्न आयु स्तर के बच्चों को कला अभिव्यक्ति में कुछ विशिष्ट लक्षण दिखाई देते हें। यह एक ऐसी अन्तर्निहित क्षमता है जो उनमें धीरे-धीरे विकसित होती है और आगे चल कर कला माध्यम द्वारा उनकी आत्माभिव्यक्ति के विभिन्न तरीकों का रूप धारण कर लेती हैं। शिक्षक को कला-अभिव्यक्ति के ऐसे तरीकों और उनकी विशेषताओं को मूल लक्षणों के रूप में समझना होता है जिनके आधार पर वह सृजनात्मक स्वरूप के औसत या सामान्य क्षमता का मूल्यांकन कर सकता है। जो बच्चा अपने कला-कार्यकलापों में प्रत्याशित विशेषताएं नहीं दिखा पाता, उसका मूल्यांकन औसत से नीचे के रूप में किया जाना चाहिए और इसी प्रकार से जो बच्चा अपनी आयु की तुलना में अपनी प्रत्याशित कला-विशेषताओं मे उच्चतर क्षमता प्रदर्शित करता है, उसे औसत से ऊपर के स्तर पर रखा जाना चाहिए।

विभिन्न कक्षाओं के बच्चों की कला अभिव्यक्ति की प्रत्याशित विशेषताएं इस प्रकार हैं :—

कक्षा	समरूपी आयु स्तर	कला अभिव्यक्ति की विशेषताएँ
1 और 2	6 से 7+ वर्ष	प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति
3 और 4	8+ से 9+ वर्ष	योजनागत अभिव्यक्ति
5	10 + वर्ष	अभिव्यक्ति में यथार्थवाद की शुरूआत

6— स्वाभाविक अभिव्यक्ति को ऊपर लिखित विशेषताओं को बच्चों की कला-कृतियों का मूल्यांकन करते समय मूल लक्षणों के रूप में समझा जाएगा इसके अतिरिक्त ऐसे तत्वों को ध्यान में रखते हुए बच्चे की सृजनात्मक गुणवत्ता को बच्चे के विचार की मौलिकता के रूप में, विचार को ग्रहण करने की उसकी क्षमता के रूप में, विचार की अभिव्यक्ति में दिखाये गये ब्यौरों और विचार के सम्प्रेषण के लिए प्रयुक्त माध्यम और अभिव्यक्ति विचार के समग्र प्रभाव या आकर्षण के रूप में देखा जाएगा। इन पक्षों का आकलन बच्चे की आयु, रूचि, अनुभव आदि को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए।

7— जैसा कि ऊपर पैरा 5 और 6 में चर्चा की गयी है उसके अनुसार बच्चों की कला-कृतियों का मूल्यांकन करते समय हर बच्चे के कार्य पर अलग-अलग अभ्युक्ति दी जानी चाहिए। ये अभ्युक्तियां स्पष्ट और असंदिग्ध होनी चाहिए। ये अभ्युक्तियां "अच्छा", "बहुत अच्छा" और "सुन्दर" के रूप में हो सकती हैं जो सृजनात्मक कला-अभिव्यक्ति को सामान्य से नीचे, सामान्य और उच्चतर गुणों को सूचित करती है। किसी कार्य-कलाप का आयोजन करने और बच्चों के कार्य का मूल्यांकन करने के बाद हर बच्चे की उपलब्धि विनिर्दिष्ट कला के रूप के अन्तर्गत निर्धारित प्रोफार्मा में दर्ज की जानी चाहिए। यदि शिक्षक चाहे तो वह इन अभ्युक्तियों के क्रमशः अच्छा, बहुत अच्छा और सुंदर की अभ्युक्तियों के अनुरूप —ए, ए और + ए के मूल्यांकन पैमाने में परिवर्तित कर सकता हैं इस प्रकार प्रोफार्मा में बच्चों के नामों के सामने मूल्यांकन चिन्ह अंकित करना आसान होगा।

8— आवधिक अवस्था अर्थात् तिमाही या वार्षिक अवस्था पर समग्र मूल्यांकन प्रोफार्मा में किए गए स्थान में एक अभ्युक्ति या टिप्पणी के रूप में दिया जाएगा। ये अभ्युक्तियां/टिप्पणियां किसी तिमाही या वर्ष के दौरान कार्य-कलापों में बच्चों द्वारा प्राप्त किये गये मूल्यांकनों के मूल्य के योग पर आधारित होने चाहिए।

ये कार्य निम्नलिखित सूत्र के अनुसार किया जाना चाहिए :–

$$\frac{\text{मूल्यांकनों का कुल मूल्य}}{\text{कार्यकलापों की संख्या}}$$

(1) मूल्यांकनों का मूल्य क्रमशः –ए, ए और + ए के लिए 1, 2 और 3 संख्या लगा कर निकाला जा सकता है।
अब मान लें कि एक बच्चे "क" ने एक तिमाही में नौ कार्यकलापों में 2+ ए, 3 ए और 4–ए प्राप्त किया है तो अभ्युक्ति के रूप में उसकी उपलब्धि इस प्रकार होगी

$$\frac{2 \times 3 + 3 \times 2 + 4}{9}$$

अर्थात $\frac{16}{9}$ या 1.7 (लगभग)

मूल्यांकन के पैमाने 1.7 पर आगे विचार करें तो हम देखेंगे कि बच्चे ने अभ्युक्ति के रूप में ए या बहुत अच्छा प्राप्त किया है।

अब उस मूल्यांकन पैमाने की सीमा का अवलोकन करें, जिसके आधार पर अन्तिम अभ्युक्ति दी गयी है इसे यहां निम्नलिखित रूप से स्पष्ट किया जा रहा हैं

–ए		ए		+ए
1	1.5	2	2.5	3

अंकों में –ए 0.1 से 1.5 तक है, ए 1.5 से 2.5 तक है, +2.5 से 3 तक है। इस प्रकार 1.7 अंक प्राप्त करने वाला बच्चा ए के अन्तर्गत आता है जो 1.5 से 2.5 के बीच हैं इसके अतिरिक्त ए "बहुत अच्छा" के लिए होता है, बच्चे को तिमाही के आवधिक स्तर पर एक अभ्युक्ति के रूप में "बहुत अच्छा" दिया जा सकता है।

(2) अब एक दूसरे बच्चे "ख" का उदाहरण लें जो उसी कक्षा में है किन्तु जिसने उसी अवधि के दौरान उतने ही कार्यकलापों में 5 + ए, 4 ए और शून्य–ए प्राप्त किया है।
कला शिक्षा में उसकी उपलब्धि इस प्रकार होगी–

$\frac{5 \times 3 + 4 \times 2 + 0}{9} = \frac{23}{9} = 2.55$ अर्थात्+ए, जो अभ्युक्ति के रूप में "सुंदर" है।

इस प्रकार इन परिकलनों के आधार पर प्रत्येक आवधिक अवस्था पर और वार्षिक मूल्यांकन के समय उपयुक्त अभ्युक्ति/टिप्पणी दर्ज की जानी चाहिए।

9– यह निर्धारित करने के लिए कि बच्चे ने कला शिक्षा से संबंधित अधिगम निष्कर्ष (निष्कर्षों) में निष्णात स्तर की उपलब्धि प्राप्त कर ली है, उसके द्वारा आवधिक/अन्तिम मूल्यांकन में प्राप्त किये गये सभी मूल्यांकनों का औसत अभ्युक्ति के रूप में "ए" या "बहुत अच्छा" होना चाहिए। जो बच्चा यह अभ्युक्ति प्राप्त नहीं करता, उसको अपने कार्य निष्पादन में सुधार करने में सहायता की जानी चाहिए। शिक्षक को ऐसे मामलों में अतिरिक्त ध्यान देना चाहिए या सुधार के कुछ अन्य तरीके अपनाने चाहिए।

10– बच्चों का कार्य निष्पादन रिकार्ड' का प्रोफार्मा शिक्षक को कक्षा में हर प्रकार के कार्यकलाप की समाप्ति के बाद भरना चाहिए। इसमें (1) प्रत्येक कला-रूप के अन्तर्गत आयोजित कार्यकलापों की संख्या दिखाई जाएगी। (2) विभिन्न कार्यकलापों में हर बच्चे का स्तर कैसा रहा है, और (3) अवधि की समाप्ति पर कक्षा में हर बच्चे को क्या उपलब्धि रही है अर्थात् क्या औसत से नीचे, औसत या औसत से ऊपर रही है।

बच्चों का कार्य-निष्पादन रिकार्ड

कक्षा शिक्षक विद्यालय वर्ष 199

	छात्र का नाम	चित्रात्मक कला, रेखाचित्र, पेंटिंग कार्यकलाप			सजावट की कला कोलाज, छपाई के कार्यकलाप			प्लास्टिक कला मूर्तिकला कार्यकलाप			प्रदर्शन कला संगीत, नृत्य कार्यकलाप			अभ्युक्ति टिप्पणी			
क्र. सं.		मूल्यांकन कार्यकलाप तारीख	मूल्यांकन कार्यकलाप तारीख	मूल्यांकन कार्यकलाप तारीख	मूल्यांकन कार्यकलाप तारीख	मूल्यांकन कार्यकलाप तारीख	मूल्यांकन कार्यकलाप तारीख	मूल्यांकन कार्यकलाप तारीख	मूल्यांकन कार्यकलाप तारीख	मूल्यांकन कार्यकलाप तारीख	मूल्यांकन कार्यकलाप तारीख	मूल्यांकन कार्यकलाप तारीख	मूल्यांकन कार्यकलाप तारीख	सत्र 1	सत्र 2	सत्र 3	वार्षिक
1																	
2																	
3																	
4																	
5																	
6																	

टिप्पणी :— यदि कार्यकलापों की संख्या इससे अधिक हो तो प्रत्येक कला-रूप के अंतर्गत अतिरिक्त खाने बनाये जा सकते हैं।

अध्याय—4

चित्रात्मक कला

रेखा-चित्र और पेंटिंग

मार्ग निर्देश

कक्षा 5 के बच्चे बचपन से किशोरावस्था में प्रवेश करते समय एक संक्रमण अवस्था में प्रवेश करते हैं। यह परिवर्तन अनायास न होकर धीरे-धीरे होता है। उनमें शारीरिक और मनोवैज्ञानिक विकास में परिपक्वता दिखाई देने लगती है। लड़के अधिक बहिर्मुखी और साहसी होते हैं और लड़कियां अधिक अन्तर्मुखी और साज श्रृंगार की शोकीन होती हैं। यह उनके द्वारा कला योजनाओं में प्रस्तुतिकरण के लिए चुनी गयी विषय वस्तुओं में परिलक्षित होता है। लड़कों द्वारा बनायी गई कला-कृतियों में स्पष्टवादिता दिखाई देती है और लड़कियों द्वारा बनायी गई कला-कृतियों में एक प्रकार की कोमलता दिखाई देती है।

इस आयु में वे प्रत्येक वस्तु के सम्बन्ध में जिज्ञासू हो जाते हैं और छोटे से छोटे ब्यौरों के अवलोकन में रूचि लेते हैं। उनके पास अनेक विचार होते हैं और अपनी भावनाओं पर भी उनका अधिक नियन्त्रण होता है और वे लम्बी अवधि तक ध्यान केन्द्रित कर सकते हैं। इन लाभों के रहते वे जो कलाकृति बनाते हैं उसका परिणाम तर्कपूर्ण होता है। वे अब तात्कालिक ढंग से कार्य नहीं करते बल्कि किसी विचार के बारे में अच्छी तरह से सोच समझकर कलाकृति की योजना बनाते हैं और एक एक करके कार्य करते हैं। यह एक प्रकार से किसी कला समस्या पर वयस्क के काम करने का तरीका है। वे अब किसी सामूहिक कार्य की परियोजना में सहयोग देने की स्थिति में होते हैं और उसमें अपने हिस्से का योगदान करते हैं। इस कक्षा के बच्चे विविध कला सामग्री का प्रयोग करने के योग्य होते हैं। बेहतर हस्त कौशल क्षमता के साथ वे सामग्री का इस्तेमाल करके अनेक तरीके और तकनीकें खोज निकालते हैं। यह वांछनीय है कि उन्हें अब प्रयोगों और अनुप्रयोगों के लिए विभिन्न प्रकार के माध्यमों, सामग्री और उपकरणों की जानकारी दी जाये।

रेखाचित्र और पेंटिंग बनाने के विषय वस्तुओं की बजाय विचारों के रूप में होने चाहिए। उनकी पूरी कला योजना पर काम करने में और उसके संगठन में रूचि होती है। वे विचार के बारे में सोचते हैं, उसके विविध पक्षों की कल्पना करते हैं और तब उसे कागज पर उतारते हैं। ऐसा करते समय वे एक पर्याप्त अभिव्यक्ति के लिए कला के गुणों को ध्यान में रखते है। पेंटिंग में वे केवल आकृति में ही रंग नहीं भरते बल्कि उसके आस-पास के खाली स्थानों में भी रंग भरते हैं। विचार की उनकी अभिव्यक्ति का सम्पूर्ण प्रभाव एक पूरी पेंटिंग के रूप में प्रकट होता है। (मूल्यांकन के अन्तर्गत उनकी कला अभिव्यक्ति की विशेषता देखें)

कार्यकलाप योजना – 1

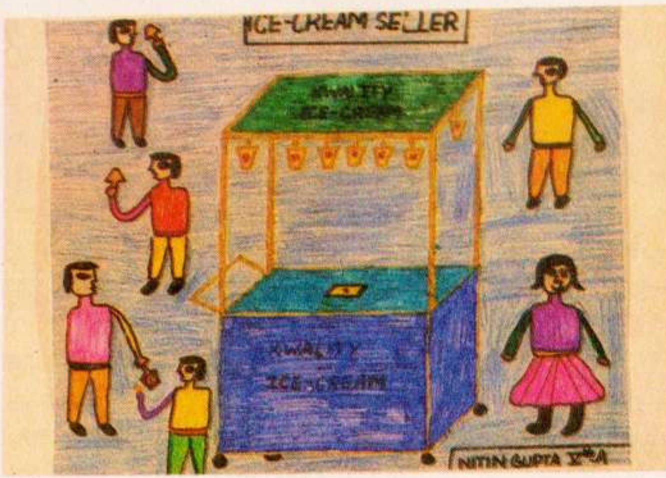
विषय : पेंटिंग या रेखाचित्र में स्थानीय जीवन से संबंधित किसी दृश्य को अभिव्यक्त करो।

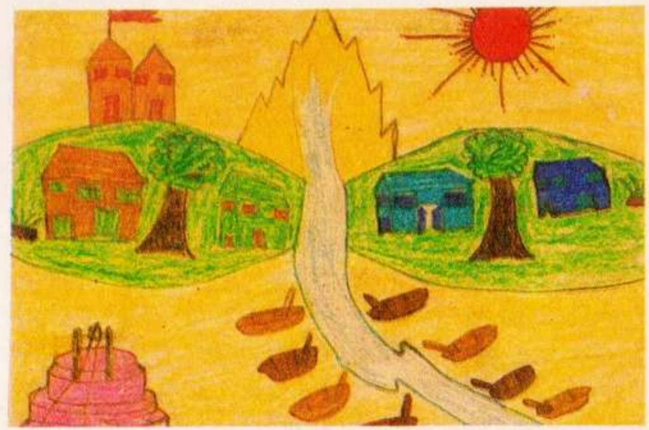
सामग्री : पेस्टल रंग/पोस्टर रंग/स्केच पेन/स्थानीय रूप से उपलब्ध रंग, ब्रश आदि।

पद्धति : स्वतंत्र अभिव्यक्ति।

प्रत्याशित अभिव्यक्ति : बच्चे कल्पना से साधारण विचारों को अभिव्यक्त कर सकते हैं।

संगठनात्मक नीति : बच्चे जिज्ञासावश जीवन परिवेश का अवलोकन करते हैं और निरन्तर प्रतिक्रिया करते रहते हैं। वे विभिन्न घटनायें देखते रहते हैं जो उनके मस्तिष्क में विचारों का रूप धारण कर लेता है। ये उनकी अति भावुकता के कारण अलग-अलग रूप धारण कर लेती हैं अतः स्वयं को अभिव्यक्त करते समय वे एक ही विषय वस्तु को भिन्न-भिन्न तरीके से चित्रित करते हैं। उन्हें स्थानीय जीवन की रोजमर्रा की सुखद और कटु दोनों प्रकार की घटनाओं से काफी अधिक स्रोत सामग्री प्राप्त होती है जिससे वे विषय वस्तु का चुनाव कर सकते हैं।





पेस्टल रंगों से विचारों को अभिव्यक्त करना



पेंसिल के चित्र

शिक्षक बच्चों को इस बात के लिए प्रोत्साहित करेगा कि उनके पास स्थानीय जीवन के बारे में जो भी विचार हों, उन्हें वे अभिव्यक्त करें। वह उन्हें पेंटिंग या रेखाचित्र बनाने का भी विकल्प देगा। इस आयु वर्ग के बच्चे यथार्थपूर्ण और प्रतीकात्मक—दोनों प्रकार की कला-अभिव्यक्तियों का उपयोग करते हैं। वह दोनों प्रकार की अभिव्यक्ति को उचित समझेगा। यदि उनमें से कुछ बच्चे इन दोनों तरीकों का मिश्रण करते हैं तो उसे भी स्वीकार कर लिया जाना चाहिए।

वह कक्षा में घूमेगा और उनके कार्य के विकास पर निगरानी रखेगा। उसके लिए यह जरूरी नहीं है कि वह किसी बच्चे के साथ विचार के बारे में चर्चा करे या किसी को उसके बारे में कोई निर्देश दे, अपितु उसे बच्चों को अपने प्रभावों की अभिव्यक्ति करने की छूट देनी चाहिए। अन्त में वह उन्हें अपनी कला कृतियां प्रदर्शित करने के लिए कहेगा और वह विचार की मौलिकता या नवीनता और अन्य चित्रात्मक गुणों के आधार पर उनका मूल्यांकन करेगा।

रंगों से बनाये चित्र



कार्यकलाप योजना – 2

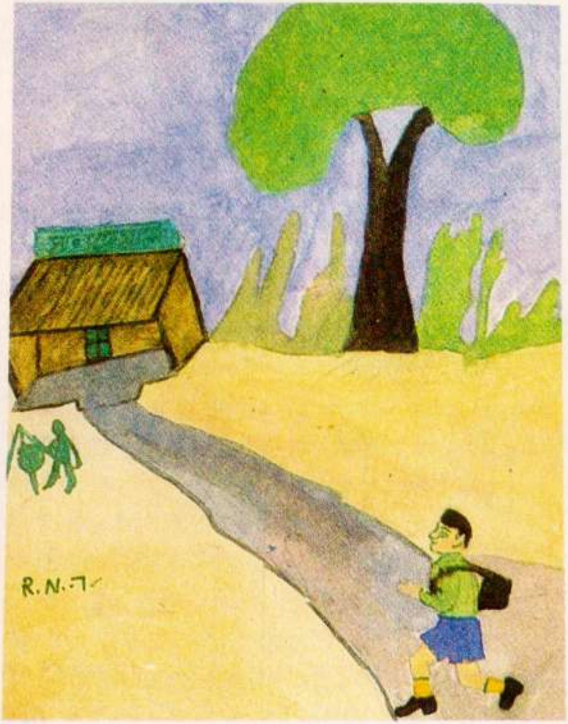
विषय	:	अपनी पसंद के किसी प्राकृतिक दृश्य का चित्र बनाओ।
सामग्री	:	पेंसिल/पेस्टल स्टिक/स्केच पेन/कलम और स्याही आदि।
पद्धति	:	स्वतंत्र अभिव्यक्ति
प्रत्याशित अभिव्यक्ति	:	बच्चे कल्पना से प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण कर सकते हैं।
संगठनात्मक नीति	:	बच्चे प्रकृति को देखकर अपनी कल्पना में विभिन्न विचार बनाते हैं। प्रकृति के कौन से विशेष दृश्य ने बच्चे को

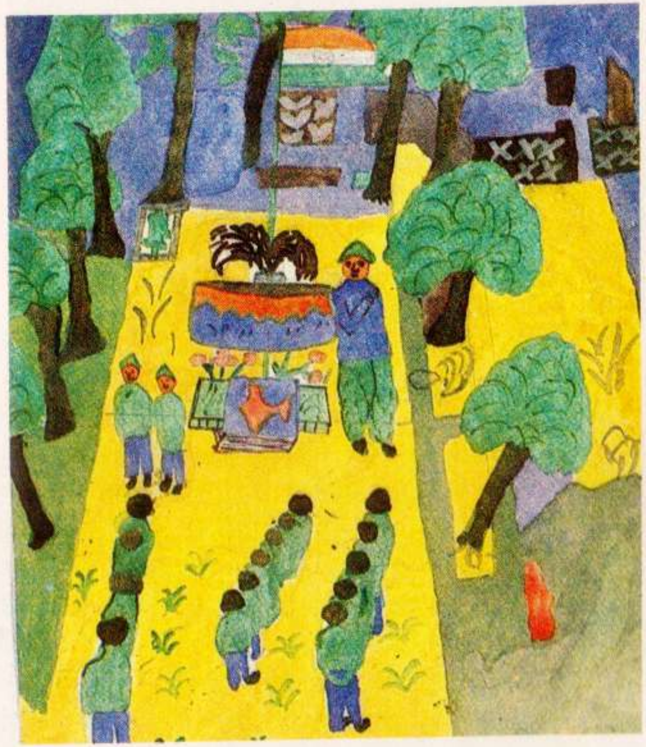


पेस्टल रंग के चित्र



पेंसिल के चित्र





पानी तथा पेस्टल रंग से तैयार चित्र

आकर्षित किया है और उसके मस्तिष्क पर उसकी कितनी गहरी छाप पड़ी है, यह उसके व्यक्तित्व से परिलक्षित होगा, किन्तु प्रायः यह देखा जाता है कि वे ऐसी विषय वस्तु का चित्रण सस्ते कैलेण्डरों के प्रभाव में आकर एक घिसे पिटे तरीके से करते हैं। इसे हतोत्साहित किया जाना चाहिए। इसके बजाय उन्हें इस बात के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए कि वे स्थानीय प्राकृतिक परिवेश के विभिन्न दृश्यों और घटनाओं को देखकर ग्रहण किये गये अपने प्रभावों का चित्रण करें। शिक्षक झोंपड़ी, पेड़, गली, खेत, लोग जैसे तत्वों से युक्त विशिष्ट परिवेश के बारे में उतने ही वास्तविक ढंग से विस्तार में समझा सकता है, जितने यथार्थ रूप में वे स्थानीय गुणों को प्रदर्शित करते हैं। इसके बाद वह बच्चों से कहेगा कि वे अपने प्रेक्षण और अनुभव के आधार पर चित्र बनायें। जब बच्चे चित्र बना रहे हों तब शिक्षक कक्षा में घूमकर यह देखेगा कि प्रत्येक बच्चा किन किन दृश्यों का चित्रण कर रहा है। यदि वह यह पाता है कि यह बच्चा सूर्य, पर्वत, नदी आदि का चित्रण करके, जो आस-पास के परिवेश में कहीं भी दिखाई नहीं देते, किसी पुरानी संकल्पना को दिखा रहा है, तो उसे ऐसा करने से रोकेगा। वह इन बच्चों के साथ स्थानीय पृष्ठभूमि के कुछ दृश्यों के बारे में चर्चा करेगा। वह उनके कार्य का मूल्यांकन करेगा और उनके द्वारा प्रदर्शित गुणों के आधार पर अभ्युक्ति देगा।

कार्यकलाप योजना – 3

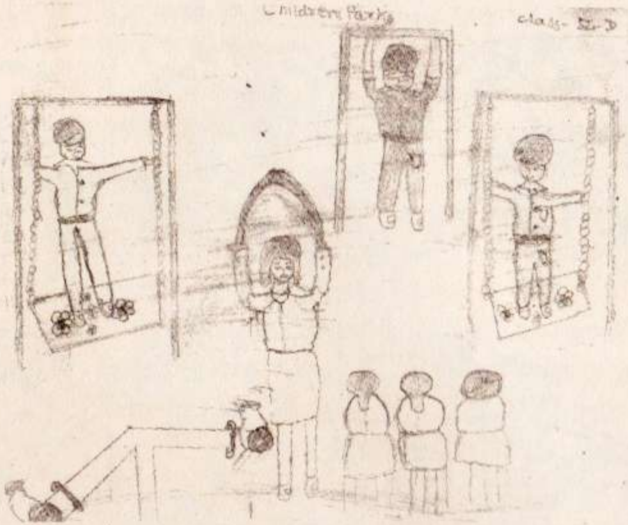
विषय : स्वतंत्रता दिवस या गणतंत्र दिवस समारोह का जो पक्ष तुम्हें पसंद हो उसकी पेंटिंग बनाओ।

सामग्री : पेस्टल रंग/पोस्टर रंग/स्केच पेन/ स्थानीय रूप से उपलब्ध रंग, ब्रश आदि।

विधि : स्वतंत्र अभिव्यक्ति

प्रत्याशित अभिव्यक्ति : बच्चे कल्पना से साधारण दृश्यों की अभिव्यक्ति कर सकते हैं।

संगठनात्मक नीति : शिक्षक बच्चों को हमारे देश को ब्रिटिश राज से स्वतंत्रता दिलाने वाले इन दोनों राष्ट्रीय दिवसों और हमारे शासन प्रणाली के लिए अपनाए गए संविधान के बारे में संक्षेप से समझायेगा। ये समारोह पूरे हर्षोल्लास से पूरे देश भर में मनाये जाते हैं। नगरों और बस्तियों में लोग इन दिनों को एक उत्सव के रूप में मनाते हैं और विभिन्न सांस्कृतिक और खेल-कूद की प्रतियोगिताओं में भाग लेते हैं। वे अपनी पारम्परिक वेश भूषा में आते हैं और नाचते गाते है। राज्यों की राजधानियों में लोग बहुत बड़े मैदान में एकत्र होते हैं, जहां वे झंडा रोहण समारोह, परेड और अन्य झलकियां देखते हैं। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में लोग काफी बड़े पैमाने पर यह समारोह देखते हैं। झंडा रोहण, परेड, सशस्त्र सेना के प्रदर्शन आदि के अतिरिक्त झांकियां, झलकियां और बच्चों के नृत्य भी देखते हैं। ये समारोह



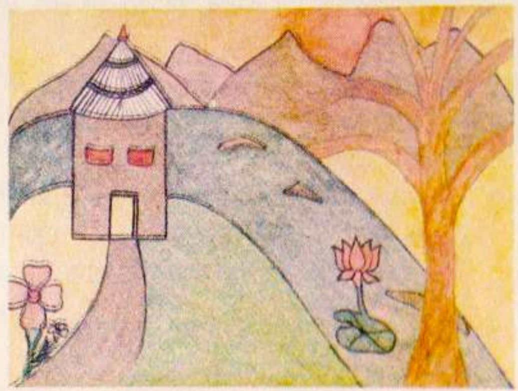
पेंसिल के बने चित्र

कई दिनों तक चलते हैं। सामान्य रूप से लोग अपने घरों के ऊपर तिरंगा झंडा लहराते हैं।

इनमें अनेक आकर्षक पक्ष भी होते हैं जो बच्चो को पेंटिंग बनाने के लिए अनेक विचार प्रदान कर सकते हैं। शिक्षक बच्चों को अपने साधनों से कोई भी विचार चुनने की छूट देगा। वह उनके द्वारा चित्रों की रूपरेखा बनाते समय उन पर नजर रखेगा और हर बच्चे के साथ उसकी कला योजना, चित्र के सामान्य संयोजन, उसका किसी पक्ष



पानी तथा पेस्टल रंग द्वारा बने चित्र



विशेष आदि पर बल देने के सम्बन्ध में उसके साथ चर्चा करेगा। वह रंगों के प्रयोग, रंगों के प्रभाव, ब्यौरों आदि के बारे में बच्चों का मार्ग-दर्शन भी करेगा। अन्त में वह उन्हें अपनी कला कृतियाँ प्रदर्शित करने के लिए कहेगा ताकि वे सभी पेंटिंग में अपने विचारों और अभिव्यक्ति के सम्बन्ध में आदान-प्रदान कर सकें। इसके बाद वह उनकी कृतियों का मूल्यांकन करेगा और हर कृति पर अभ्युक्ति देगा।

कार्यकलाप योजना – 4

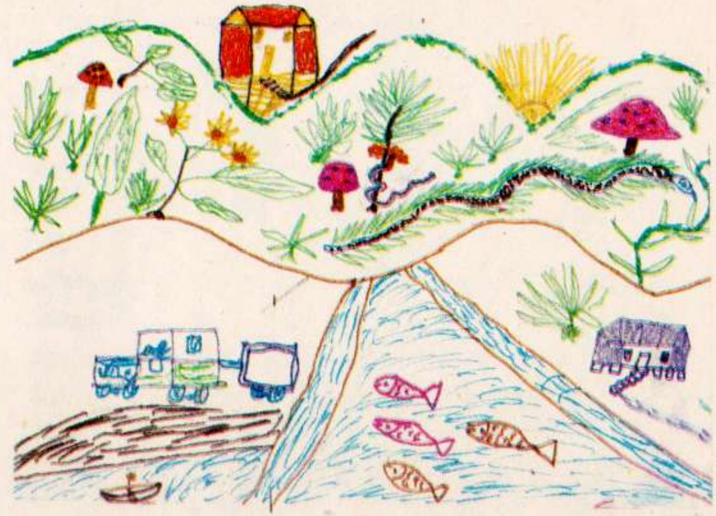
विषय : गांव का कोई दृश्य बनाओ।

सामग्री : पेंसिल/स्केच पेन/क्रयोन स्टिक/कलम और स्याही आदि।

विधि : स्वतंत्र अभिव्यक्ति

प्रत्याशित अभिव्यक्ति : बच्चे अपनी कल्पना से साधारण दृश्यों का चित्रण कर सकते हैं और उनकी अभिव्यक्ति प्रतीकात्मक या यथार्थपूर्ण या दोनों प्रकार की होती हैं।

संगठनात्मक नीति : शिक्षक कक्षा में सामुदायिक जीवन और प्राकृतिक पर्यावरण के संदर्भ में किसी भारतीय गांव की सामान्य विशेषताओं की चर्चा करेगा। वह इसकी शुरूआत यह कहकर करेगा



रंगीन पेंसिल के चित्र

कि भारतीय गांवों में अनेक समानतायें होती हैं— ग्राम बस्तियों के कुछ ऐसे पारंपरिक पेशे होते हैं जिनमें वे हमेशा संलग्न पाये जाते हैं। वे या तो खेती और बागबानी करते हैं या पशु चराते हैं या किसी तालाब में कपड़े धोते

और नहाते हैं या मिट्टी के बर्तन बनाते हैं या कपड़ा बुनते हैं या रोजमर्रा के दूसरे काम करते हैं। कभी-कभी वे मेलों में जाते हैं और बड़े उत्साह से उत्सवों में भाग लेते हैं। ऐसे अवसरों पर वे रंग बिरंगी पोशाकें पहनते हैं और मिठाई और खिलौने और चूड़ी वालों की दुकानों पर जाते हैं या मदारी वाले और जादूगर के खेल देखते हैं। मनोरंजन के अन्य कार्यक्रम देखते हैं। कुष्तियों और बैलगाड़ियों की दौड़ भी आम देखने में आती है।

गांव का प्राकृतिक परिवेश एक सामान्य बात है। आमतौर पर गांव के दृश्य में एक छोटे टोटीले या पर्वत समूह का चित्रण किया जाता है। रेखाचित्र बनाने के लिए दृश्यों के चुनाव पर चर्चा करने के बाद शिक्षक उन्हें कुछ समय उनके बारे में विचार करने के लिए देगा जैसे ही वे रेखाचित्र बनाना आरंभ करें वैसे ही शिक्षक हर बच्चे से उनके उन विचारों के बारे में चर्चा करेगा, जिनका वे चित्रण कर रहे हैं और उनके चित्रण पर नजर भी रखेगा। वह उन्हें अपने-अपने रेखा चित्रों में रंग भरने और अन्य ब्यौरे देनें के बारे में बताएगा। वह उनके कार्य का मूल्यांकन करेगा और चित्रों के संयोजन और मध्यम एवं गहरे रंगों के प्रभाव और ब्यौरों आदि के बारे में विचार करेगा और अपनी अभ्युक्ति देगा।

कार्यकलाप योजना – 5

विषय : अपने यहां के किसी मेले या उत्सव के किसी पक्ष पर पेंटिंग बनाओ।

सामग्री : पेस्टल रंग/पोस्टर रंग/स्केच पेन/स्थानीय रूप से उपलब्ध रंग ब्रुश आदि।

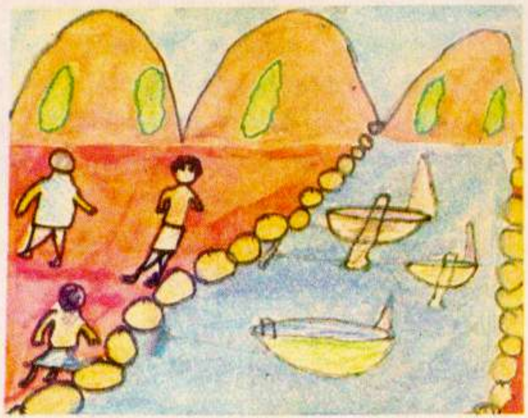
विधि : स्वतंत्र अभिव्यक्ति

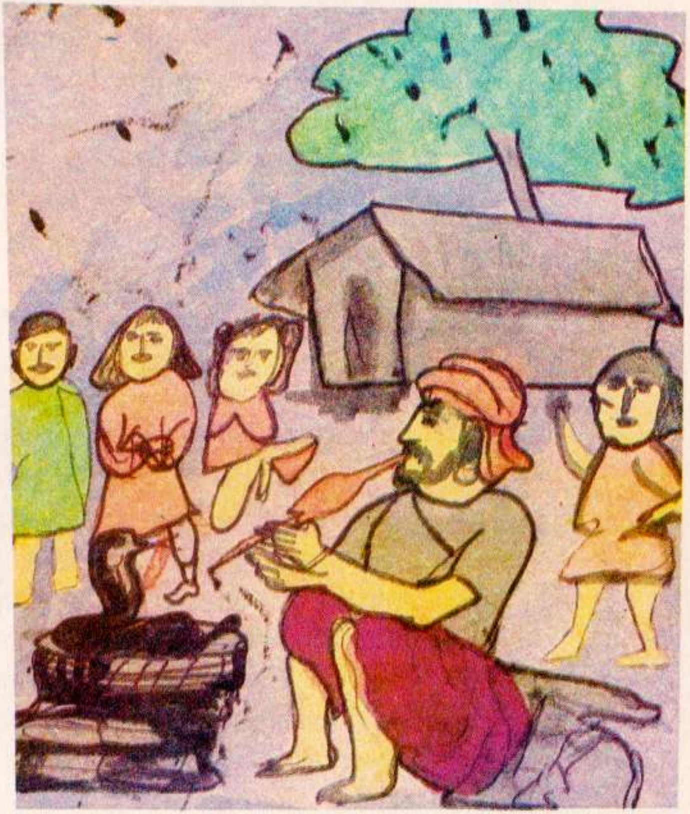
प्रत्याशित अभिव्यक्ति : बच्चे अपनी कल्पना से पेंटिंग बना सकते हैं।

संगठनात्मक नीति : बच्चों ने इस विषय पर पिछली कक्षा में चित्र बनाया होगा फिर भी इन विषयों पर कभी भी चित्र बनाया जा सकता है। हर वर्ष के गुजरने के साथ-साथ उनकी परिकल्पना, रूचि और अभिव्यक्ति विकसित होती रहती है और उनमें विविधता भी आती रहती है। उनमें अपनी आयु के अनुरूप परिवर्तन भी दिखाई देने लगते हैं।

शिक्षक विषय बताने के बाद बच्चों को उन मेलों और उत्सवों के बारे में, जो उन्होंने अपनी बस्ती में देखे हैं, अपने अनुभवों का पुनः स्मरण करने के लिए कहेगा। वे अपने स्रोतों से किसी भी विचार का चुनाव कर सकते हैं और शिक्षक को किसी खास दृश्य या विचार के बारे में

उनसे चर्चा करने की कोई आवश्यकता नहीं। बच्चों द्वारा अपनी योजनाओं की रूपरेखा बनाते समय और जिन पक्षों पर उन्होंने जोर दिया हो, उन्हें वह देखेगा। वह उन्हें अपनी पसन्द के अनुसार रंग योजना का प्रयोग करने देगा। कभी-कभी शिक्षक को यह भी करना पड़ता है कि वह बच्चों से अच्छे से अच्छा काम कराने के लिए उन्हें कोई राय न दे। वह बच्चों से अपनी कृतियों को प्रदर्शन पर लगाने के लिए कहेगा ताकि सभी उनके विचारों को देख सकें। अन्ततः वह उनके कार्य का मूल्यांकन करेगा और अभ्युक्ति देगा।





पानी तथा पेस्टल रंग से तैयार चित्र

कार्यकलाप योजन – 6

विषय : राष्ट्रीय एकता पर एक चित्र बनाओ।

सामग्री : पेस्टल रंग/पोस्टर रंग/रंगीन स्केच पेन स्थानीय रूप से उपलब्ध रंग, ब्रुश आदि।

विधि : दिया गया विषय।

प्रत्याशित अभिव्यक्ति : बच्चे बतायी गई किसी विषय वस्तु पर सधारण विचारों की अभिव्यक्ति करने में समर्थ होते हैं। वे अपनी कला अभिव्यक्ति में प्रतीकात्मक और यथार्थपूर्ण– दोनों प्रकार के आकारों और रूपों का प्रयोग करते हैं।

संगठनात्मक नीति : शिक्षा बच्चों को राष्ट्रीय एकता की संकल्पना के बारे में समझायेगा। वह विशेष रूप से इस बात पर जोर देगा कि एक विशाल देश है और इसकी जनता संसार की तीन मुख्य प्रणालियों से संबंधित है। वे आर्य, द्रविड़ और मंगोल हैं। उनकी सांस्कृतिक आकांक्षाओं, भाषाओं और जीवन शैली को लेकर अपनी एक अलग पहचान है। हमारे देश में अनेक धर्म भी हैं, हमारे देश में संभवतः इतने धर्म हैं, जितने कि पूरे संसार में हैं। लोगों को अपने-अपने धर्मों में गहरी आस्था है। ये कुछ मुख्य विविधताएं हैं, जो हमारे देश में विद्यमान हैं, किन्तु हम विविधता में एकता के सिद्धान्त पर विश्वास करते हैं। हमारे देश में लोकतांत्रिक प्रणाली की सरकार है, जिसमें सभी व्यक्तियों को अपनी-अपनी आकाक्षाओं, धर्म और जीवन शैली के समान अवसर प्राप्त होते हैं।



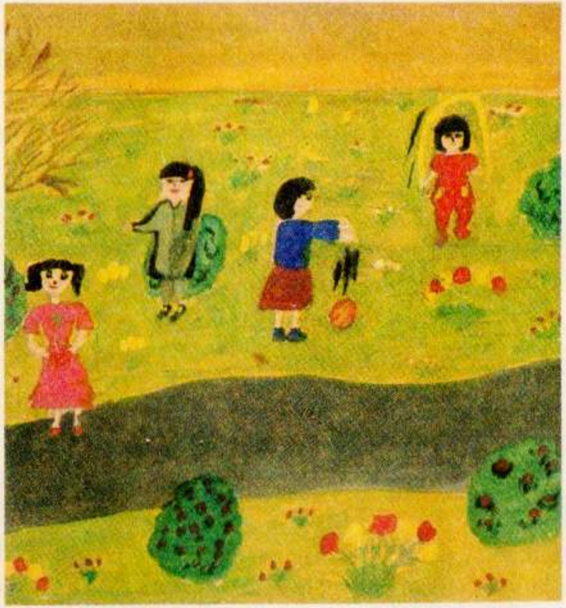
पेंसिल द्वारा बने चित्र

किन्तु हम अपने इतिहास में यह देखते हैं कि विदेशी आक्रमणकारियों ने हम पर शासन करने के लिए इन विविधताओं का अनुचित लाभ उठाया। उन्होंने मुख्यतः जाति और वर्ग भेद तथा धर्मों के आधार पर हमारे देश के लोगों में अनेक भेदभाव उत्पन्न किये। अब दीर्घ संघर्ष से प्राप्त की गयी स्वतंत्रता की सुरक्षा के लिए हमारे देश की जनता में एकता होना परम आवश्यक है।





पानी तथा पेस्टल रंग द्वारा बने चित्र



इसके बाद शिक्षक ऐसी विभिन्न स्थितियों की चर्चा करेगा जिनसे विभिन्न जातियों और धर्मों के लोगों की विविध विशेषताओं का चित्रण किया जा सकता है। ये विशेषतायें उनके द्वारा राष्ट्र के विकास कार्यों में किए गये योगदान के रूप में हो सकती हैं या विभिन्न धार्मिक उत्सवों, मेलों और समारोहों को मिलकर मनाने में हो सकती हैं या जन-कल्याण के लिए की जाने वाली सामाजिक स्वैच्छिक सेवाओं के रूप में हो सकती है या साहसपूर्ण कार्यों आदि के लिए दल बनाकर कार्य करने के रूप में हो सकती हैं। वह उन्हें इनमें से किसी विचार पर या उनके पास यदि कोई अन्य विचार हो तो उस पर पेंटिंग बनाने की छूट देगा।

चर्चा समाप्त करते ही वह कक्षा में घूमेगा और यह देखेगा कि बच्चे अपनी कला योजनाओं में इस विषय पर किस प्रकार चित्रित कर रहे हैं। यदि कोई बच्चा किसी क्षेत्र के समुदाय की विशेषताओं, वेशभूषा और जीवन शैली के बारे में कुछ जानना चाहता हो तो शिक्षक उसका मार्गदर्शन करेगा। जब बच्चे अपना कार्यकलाप पूरा कर लें, तब वे अपनी कृतियों को प्रदर्शित करेंगे, ताकि सभी बच्चे एक दूसरे के विचारों और अभिव्यक्तियों को देख सकें। अन्ततः शिक्षक उनके कार्य का मूल्यांकन करेगा और अभ्युक्ति देगा।

अध्याय—5

सजावट की कला

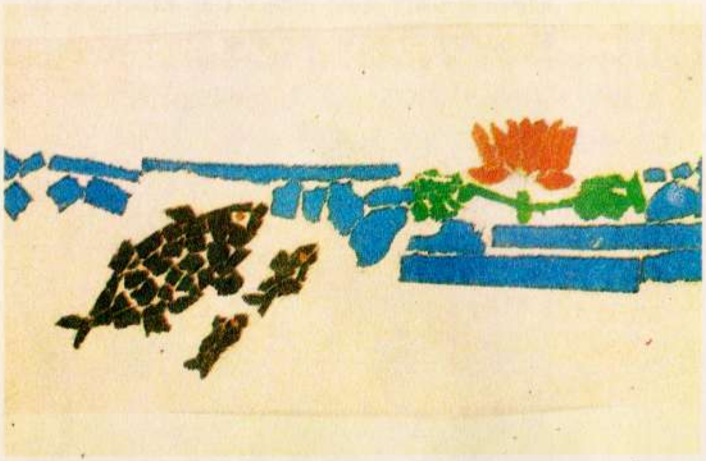
कोलाज, छपाई और सजावट

मार्ग निर्देश

हम अपने दैनिक जीवन में जिन वस्तुओं का अवलोकन या उपयोग करते हैं उन्हें प्रदर्शित करने और सजाने की भावना एक आनन्द प्रदान करती है। यह वस्तु एक पूर्ण फूलों का गुलदस्ता, एक टोकरी आदि हो सकती है। यदि इसमें सुन्दर रेखाएं और आकृतियां बनी हों और इसके रंग भी मोहक हों और इनका डिजाइन भी सुन्दर हो तो हमें प्रसन्नता होती है। किन्तु यदि इनका डिजाइन खराब हो और इनके कला तत्वों का संयोजन भी अच्छा न हो तो हमें निराशा होगी। कला के कुछ ऐसे सिद्धांत हैं जो इस्तेमाल की वस्तुओं के डिजाइन के गुणों में सुधार करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। प्राथमिक अवस्था में सजावट की कला का उद्देश्य बच्चों को अपनी योग्यता से सुन्दर रूपों और डिजाइनों की खोज करने के अवसर प्रदान करना है ताकि उन्हें अपनी कृतियों में आनन्द की अनुभूति हो सके।

कक्षा 5 के बच्चों को सजावट की कला की पर्याप्त जानकारी होती है। उनका परिवेश चाहे कोई भी हो (साधारण या अत्यंत असाधारण) उन्हें इस प्रकार की कला का प्रयोग आमतौर पर देखने को मिलता है। वस्तुतः वे उसी समय से सजावट को तभी से जानने लगते हैं जब वे अपने परिवेश की वस्तुओं का अवलोकन करना आरंभ करते हैं। परम्परागत समुदायों के लोग आधुनिक काल में इस कला का अत्याधिक प्रदर्शन करने के अतिरिक्त इसे अपने जीवन का अंग भी बना लेते हैं। सजावट की कला उनके घरों, उनके परिधानों, उनके शिल्पों में विविध रूपों और शैलियों में दिखाई देते हैं। फर्श पर अल्पना, साड़ी पर बना कोई डिजाइन, घड़े पर बना नमूना, मुखौटे का आकार सजावट की कला के ही कुछ उदाहरण हैं।

इस आयु-वर्ग के बच्चों में सजावट की वस्तुओं के डिजाइन के गुणों के बारे में अपना आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित होने लगता है। उनकी अब किसी कलाकृति के संयोजन, रंग योजना या नमूने के बारे में जो प्रतिक्रिया होती है उसके औचित्य के या अपनी पसंद या नापसंद को सिद्ध करने के लिए अपनी एक धारणा होती है। इससे किसी कला कृति के डिजाइन के अच्छे गुणों के बारे में उनकी व्यक्तिगत परिकल्पना परिलक्षित होती है। अब अधिक लम्बे अनुभव, बेहतर कौशल और माध्यम पर अच्छा नियंत्रण हो जाने के परिणामस्वरूप वे सजावट के लिए सुन्दर छापा और डिजाइन बनाते हैं। इस प्रक्रिया में वे संतुलन, सामंजस्य, समता और एकरूपता जैसे मूल सिद्धान्त सीखते हैं जो एक सुन्दर सजावट या डिजाइन के अनिवार्य तत्व हैं। यदि वे परम्परागत डिजाइनों को छोड़कर अपना कोई नया डिजाइन बनाना चाहते हैं तो उन्हें ऐसा करने देना चाहिए। अनिवार्यतः इसका उद्देश्य यह है कि उन्हें किसी बन्धन के स्थान पर कला के तत्वों के





रंगीन कागज से कोलाज बनाना

प्रयोग में किसी प्रकार की बाधा का अनुभव नहीं होना चाहिए।

इस कक्षा के लिए कोलाज, छपाई और सजावट (मिट्टी के बर्तनों मुखौटों आदि पर) के कार्यकलाप सिखाने का प्रस्ताव है। इन साधारण सजावटों से बच्चों को अभिव्यक्ति करने की आन्तरिक प्रतिभा उजागर होगी और इसके परिणामस्वरूप इनमें सामान्य रूप से विभिन्न कला रूपों और डिजाइनों के लिए एक अन्तर्दृष्टि और उनकी सराहना करने की समझ विकसित होगी।

कार्यकलाप योजना – 1

विषय : कोलाज के माध्यम से किसी विचार या दृश्य की अभिव्यक्ति करो।

सामग्री : प्रकृति से ली गयी वस्तुएं, गोंद/लेई/फेवीकोल, काटने के औजार/चाकू/ब्लेड आदि।

विधि : स्वतंत्र अभिव्यक्ति

प्रत्याशित अभिव्यक्ति : बच्चे प्रकृति से ली गयी वस्तुओं और फालतू सामग्री से आकर्षक रूप और दृश्य बनाने में समर्थ होते हैं।

संगठनात्मक नीति : बच्चे पारम्परिक सामग्री (रंगीन कागज, मुद्रित सामग्री आदि) से कोलाज बनाते रहे हैं किन्तु उन्हें प्रकृति की वस्तुओं और फालतू वस्तुओं जैसे पंख, पत्तियों, टीन के ढक्कन, खाली डिब्बे, रंगीन धागे, तिनके आदि के उपयोग की जानकारी दी जानी चाहिए। इस प्रयोजन के लिए चुनी गयी सामग्री ऐसी होनी चाहिए जो कागज की सतह पर आसानी से चिपक सके।

शिक्षक बच्चों को उनके परिवेश के समान्य स्थानों के दृश्यों या बाजार में हमारा ध्यान आकर्षित करने वाले कुछ लोगों जैसे फेरीवाला, तोता बेचने वाला, बंदर वाला आदि के कोलाज बनाने का सुझाव देगा। वह उन्हें यह भी कहेगा कि वे यदि चाहें तो पसंद के किसी दृश्य या व्यक्तिगत विचार का चुनाव कर सकते हैं।

वह बच्चों को ऐसी प्राकृतिक सामग्री की खोज करने और उनको एकत्र करने की अनुभूति देगा जिन्हें वे अपनी कोलाज में प्रयोग करना चाहते हैं। वह हर बच्चे के संग्रह का अध्ययन भी करेगा और बच्चा जिस विचार/दृश्य को



रंगीन कागज से कोलाज बनाना

कार्यकलाप योजना – 1

विषय : कोलाज के माध्यम से किसी विचार या दृश्य की अभिव्यक्ति करो।

सामग्री : प्रकृति से ली गयी वस्तुएं, गोंद/लेई/फेवीकोल, काटने के औजार/चाकू/ब्लेड आदि।

विधि : स्वतंत्र अभिव्यक्ति

प्रत्याशित अभिव्यक्ति : बच्चे प्रकृति से ली गयी वस्तुओं और फालतू सामग्री से आकर्षक रूप और दृश्य बनाने में समर्थ होते हैं।

संगठनात्मक नीति : बच्चे पारम्परिक सामग्री (रंगीन कागज, मुद्रित सामग्री आदि) से कोलाज बनाते रहे हैं किन्तु उन्हें प्रकृति की वस्तुओं और फालतू वस्तुओं जैसे पंख, पत्तियों, टीन के ढक्कन, खाली डिब्बे, रंगीन धागे, तिनके आदि के उपयोग की जानकारी दी जानी चाहिए। इस प्रयोजन के लिए चुनी गयी सामग्री ऐसी होनी चाहिए जो कागज की सतह पर आसानी से चिपक सके।

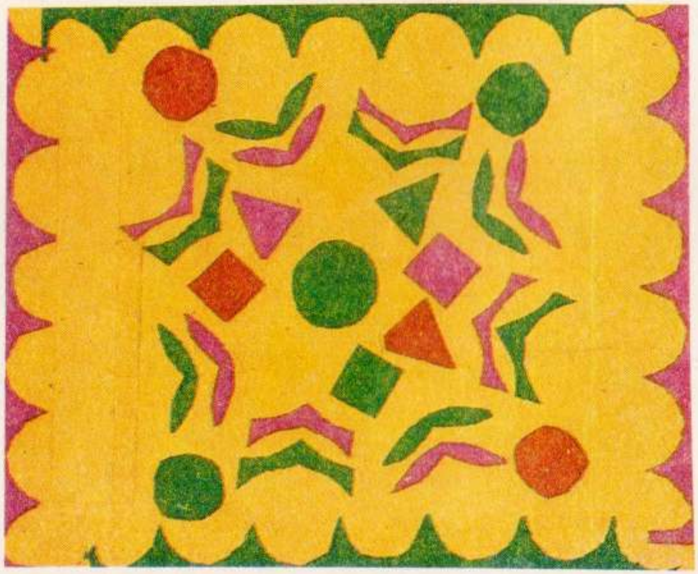
शिक्षक बच्चों को उनके परिवेश के समान्य स्थानों के दृश्यों या बाजार में हमारा ध्यान आकर्षित करने वाले कुछ लोगों जैसे फेरीवाला, तोता बेचने वाला, बंदर वाला आदि के कोलाज बनाने का सुझाव देगा। वह उन्हें यह भी कहेगा कि वे यदि चाहें तो पसंद के किसी दृश्य या व्यक्तिगत विचार का चुनाव कर सकते हैं।

वह बच्चों को ऐसी प्राकृतिक सामग्री की खोज करने और उनको एकत्र करने की अनुभूति देगा जिन्हें वे अपनी कोलाज में प्रयोग करना चाहते हैं। वह हर बच्चे के संग्रह का अध्ययन भी करेगा और बच्चा जिस विचार/दृश्य को



रंगीन कागज से कोलाज बनाना

बनाना चाहता है, उसके बारे में भी बच्चे के साथ चर्चा करेगा। बच्चे जब पेंसिल से कोलाज की रूपरेखा बनाना शुरू करें, तब वह कक्षा में घूमेगा ताकि वह किसी ऐसे बच्चे का मार्ग दर्शन कर सके जिसके बारे में वह समझता है कि उसे सहायता की आवश्यकता है। जब वे अपना कार्य पूरा कर लें तब वे उनको प्रदर्शित करने के लिए बोर्ड पर लगाएंगे ताकि वे एक दूसरे के कोलाज के गुणों को समझ सकें। शिक्षक उनकी कृतियों पर अभ्युक्तियां देगा।





कपड़े, बीज से कोलाज बनाना

कार्यकलाप योजना – 2

विषय : भारत के मानचित्र में 8–10 राष्ट्रीय नेताओं के चित्रों के बर्हिकाट लगाओ।

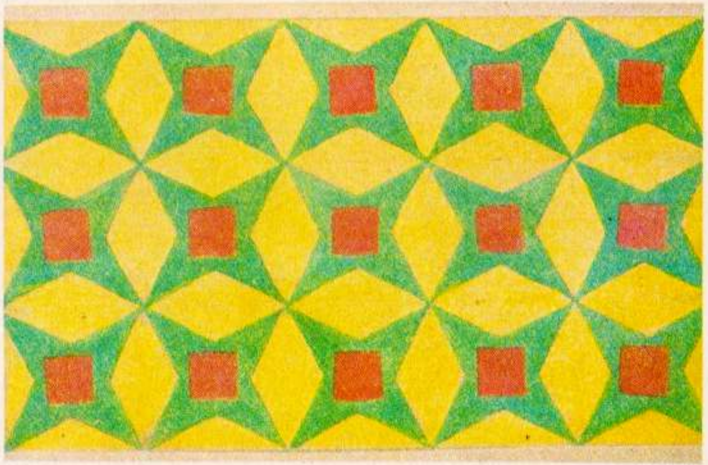
सामग्री : चित्रों के बर्हिकाट, भारत का मानचित्र, केंची, सरेस, चार्ट पेपर, स्केच पेन आदि।

विधि : दिया गया विषय

प्रत्याशित अभिव्यक्ति : बच्चे चित्रों के बर्हिकाट से सजावट की वस्तुएं बनाने में समर्थ होते हैं।

संगठनात्मक नीति : इस आयु वर्ग के बच्चों की विगत के राष्ट्रीय नेताओं और महान व्यक्तियों के बारे में जानकारी सीमित होती है। शिक्षक सबसे पहले हमारे देश के स्वतंत्रता आन्दोलन के संदर्भ में राष्ट्रीय नेता की संकल्पना का परिचय बच्चों को देगा। वह यह बताएगा कि राष्ट्रीय नेता निःसन्देह साधारण व्यक्ति थे किन्तु उन्होंने अपनी मातृभूमि को अंग्रेज शासकों से स्वतंत्र कराने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। उन्होंने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए जेल जाने से लेकर फाँसी के तख्ते पर जाने तक के बड़े से बड़े बलिदान किए। शिक्षक आगे विस्तार से यह बताएगा कि ऐसे अनेक नेता हुए हैं क्योंकि यह स्वतंत्रता संघर्ष लगभग सौ वर्षों तक चलता रहा। उसके बाद कुछ विख्यात नेताओं के नाम बताएगा ताकि बच्चे उनके चित्रों को एकत्र कर लें। वह उन्हें चित्र एकत्र करने के विभिन्न स्रोतों जैसे पुरानी पत्र-पत्रिकाएं, फोल्डरों के बारे में बताएगा जो भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के विचारों का प्रचार करने वाली कुछ स्वैच्छिक संस्थाओं और राष्ट्रीय नेताओं पर पुस्तकें प्रकाशित करने वाली अन्य संस्थाओं से उपलब्ध होते हैं।

शिक्षक बच्चों के छोटे-छोटे समूह बनायेगा और उन्हें ऐसी सामग्री की खोज करने का काम सौंप देगा। उसके बाद वह प्रत्येक समूह से भारत के मानचित्र में चित्रों के बर्हिकाटों के संयोजन के बारे में चर्चा करेगा। यह संयोजन अनेक प्रकार से किया जा सकता है। उदाहरण के लिए



किसी क्षेत्र विशेष के नेताओं को उनके अपने-अपने जन्म स्थानों में दिखाया जा सकता है। उन्हें मानचित्र के बीच में भारत माता या तिरंगा की आकृति के साथ चारों ओर दिखाया जा सकता हैं उन्हें मानचित्र के रूप में एक जुलूस के बर्हिकाट के आगे नेतृत्व करते हुए दिखाया जा सकता है और इसी प्रकार के अन्य तरीके भी हो सकते हैं। किन्तु बच्चों को स्वयं अपनी योजना बनाने की भी छूट दी जानी चाहिए। शिक्षक बच्चों को इन चित्रों के बर्हिकाट चिपकाने की अनुमति देने से पूर्व उनकी रूपरेखा देखेगा। यदि वह आवश्यक समझे तो उन्हें किसी अन्य अधिक आकर्षक योजना के बारे में सुझाव दे सकता हैं। बच्चों के समूहों द्वारा बनाए गए चार्ट कक्षा की दीवारों पर प्रदर्शित किये जाएंगे, किन्तु शिक्षक उनके द्वारा प्राप्त किए गए समग्र प्रभाव पर उन्हें अभ्युक्तियां देगा।

कार्यकलाप योजना — 3

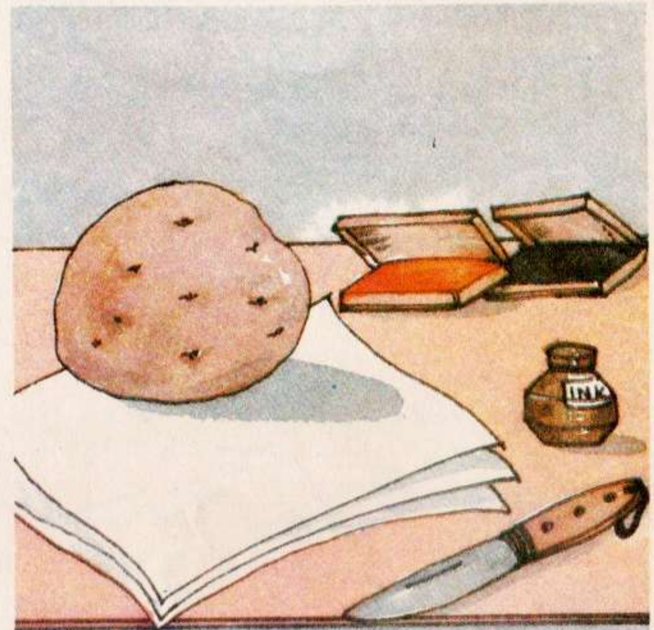
विषय : दों रंगों में छापे की पूरी छपाई करो।

सामग्री : पोस्टर रंग/ छपाई की स्याही/आलू/चाकू आदि।

विधि : स्वतंत्र अभिव्यक्ति

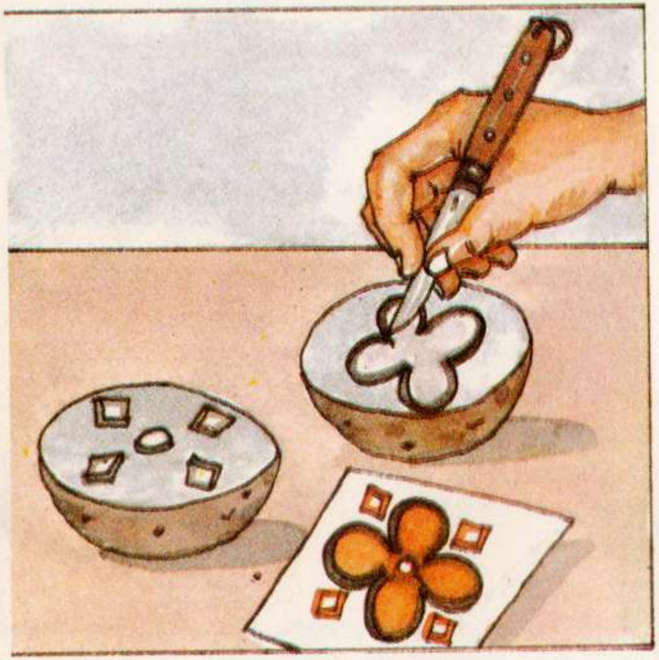
प्रत्याशित अभिव्यक्ति : बच्चे चिकनी सतह वाली विविध सामग्री से विभिन्न नमूने/छापे बनाने में समर्थ होते हैं।

संगठनात्मक नीति बच्चे अपनी पहली की कक्षाओं में छपाई कार्यकलाप करते रहे हैं। इस बार में वे दो रंगों के ठप्पे से छपाई करेंगे।



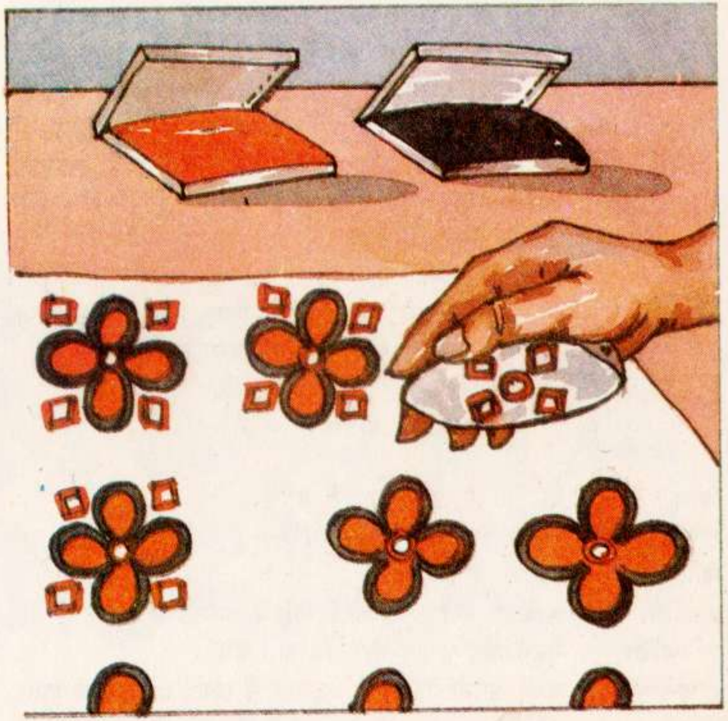
छपाई की डिजाइन बनाना

यह कार्यकलाप इन अर्थों में पहले कार्यकलापों से कुछ भिन्न हैं कि एक ही ठप्पे के नमूने में दो भिन्न-भिन्न रंग होंगे और छपाई करते समय उनको छपे हुए नमूने में एकरूपता लाने के लिए सावधानी बरतनी होगी। इसकी



छपाई की डिजाइन बनाना

प्रक्रिया यह है कि पहले ठप्पे के नमूने की एक रूपरेखा बनाई जाती है और तब उसमें दो विपरीत रंगों से एक रंग योजना तैयार की जाती है। इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि ठप्पे का आकार आधे कटे आलू की सतह से कम होगा। दोनों रंग क्षेत्रों के भागों को अलग-अलग अंकित कर लिया जाता है और दो बराबर आधे कटे आलुओं पर उन्हें अन्तरित कर दिया जाता है। अब दोनों आधे कटे आलुओं के रंग क्षेत्रों को आकृतियों के



रूप में रख लिया जाता है जबकि शेष भागों को काट दिया जाता है। आलू के दोनों टुकड़ों पर एक तीर के सिरे से बीच में एक बिन्दु भी बना दिया जाता है। छपाई करते समय केन्द्र बिन्दुओं को हमेशा एक ही दिशा में रखा जाता है। छपाई करते समय पहले रंग का छप्पा हल्के रंग से और दूसरे रंग का गहरे रंग से लगाया जाता है। छपे हुए पर एक के ऊपर एक छपाई करने के लिए दूसरे छापे भी लगाये जाते हैं।

शिक्षक बच्चों द्वारा बनाये गये छपाई के डिजाइनों का मूल्यांकन करेगा और उनके कार्य पर अभ्युक्ति देगा।

कार्यकलाप योजना —4

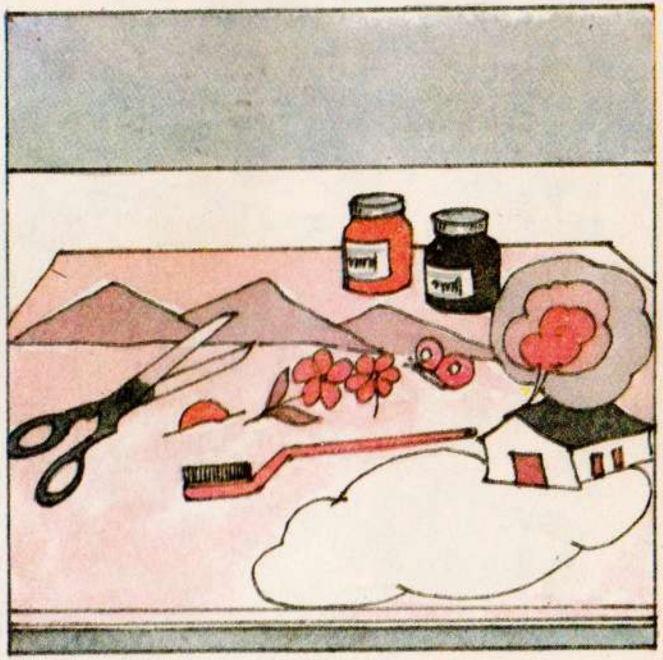
विषय : छिड़काव द्वारा छपाई (स्प्रेप्रिटिंग) की प्रक्रिया से कोई ज्यामितीय नमूना या प्राकृतिक दृश्य या कोई अन्य दृश्य बनाओ।

सामग्री : पोस्टर रंग, पुराना टूथ ब्रश, कैंची/ब्लेड आदि।

विधि : स्वतंत्र अभिव्यक्ति।

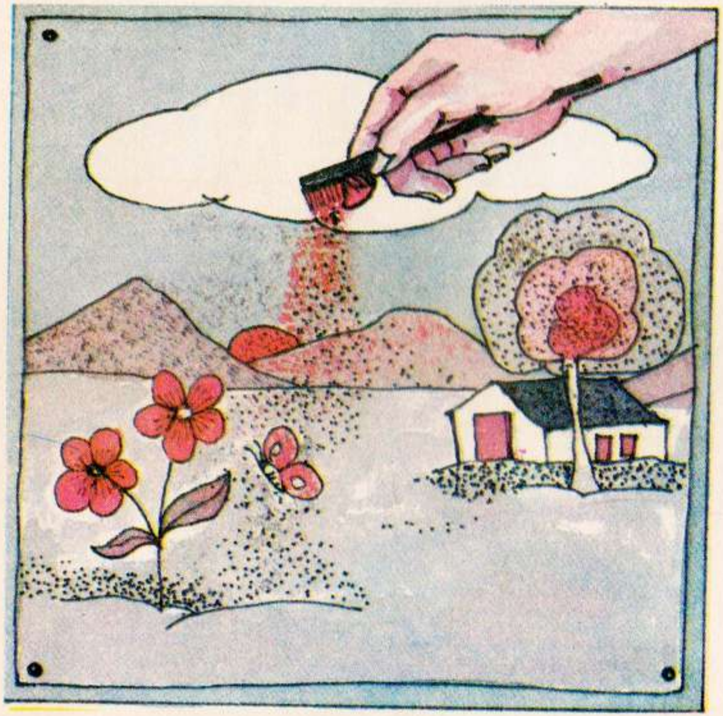
प्रत्याशित अभिव्यक्ति : बच्चे रंगों के छिड़काव से सजावट के नमूने और डिजाइन बनाने में समर्थ होते हैं।

संगठनात्मक नीति : छिड़काव द्वारा छपाई से सजावट की आकर्षक कृतियां बनाई जा सकती हैं। टूथ ब्रश से छिड़के गए रंग छपी हुई सतह पर एक हल्के रंग सामंजस्य का प्रभाव उत्पन्न करते हैं। इस प्रक्रिया का प्रयोग दो तरीकों से किया जा सकता है। (1) कागज पर कोई नमूना/आकृतियां काट कर और खुले स्थानों पर रंगों का छिडकाव करके और (2) वास्तविक



छिड़काव द्वारा छपाई

वस्तुओं (जैसे पत्तियां, फूल, टहनियां आदि या बर्हिकाट) या कागज की आकृतियों के बर्हिकाट कागज पर रखकर उन पर रंगों से छिड़काव करके पहले तरीके से जो नमूना बनेगा वह एक सीधी छपाई का नमूना होगा और दूसरे





छिड़काव द्वारा छपाई

तरीके से यह एक उल्टी छपाई का नमूना होगा। बच्चो से यह कहा जाएगा कि वे दोनों में से किसी तरीके का प्रयोग कर सकते हैं।

शिक्षक हर बच्चे को उसकी इच्छानुसार कोई नमूना या

दृश्य या चित्र बनाने की छूट देगा। जो बच्चे कोई नमूना छापने के लिए यह कार्यकलाप कर रहे हों उनसे कहा जाएगा कि वे कागज को 3/4 बार मोड़ लें और एक समरूपी नमूना बनाने के लिए उसे कैंची से काट दें। जो बच्चे कोई दृश्य/चित्र बनाना चाहते हैं उनसे यह कहा जाएगा कि वे जिन वस्तुओं के दृश्य या चित्र बनाना चाहते हैं, वे उनकी आकृतियों का रेखाचित्र बनाकर उसे काट लें। शिक्षक बच्चों द्वारा तैयार की गयी कटी हुई सामग्री की जांच करेगा और यह देखेगा कि बच्चों ने रंगों का छिड़काव शुरू करने से पहले उन्हें यथास्थान लगा लिया है। वह छिड़काव के लिए हाथ में टूथ ब्रश पकड़ने का सही तरीका भी बताएगा। वह उनके कार्य का, हर कृति के गुणों पर विचार करते हुए मूल्यांकन करेगा।

कार्यकलाप योजना — 5

विषय : गत्ते पर सजावट का कोई नमूना/डिजाइन बनाओ।

सामग्री : गत्ता, पोस्टर रंग, ब्रुश जिलेटिन, जिंक आक्साइड/खड़िया मिट्टी आदि।

विधि : स्वतंत्र अभिव्यक्ति

प्रत्याशित अभिव्यक्ति : बच्चे गत्ते पर साधारण सजावट के नमूने/डिजाइन बनाने में समर्थ होते हैं।

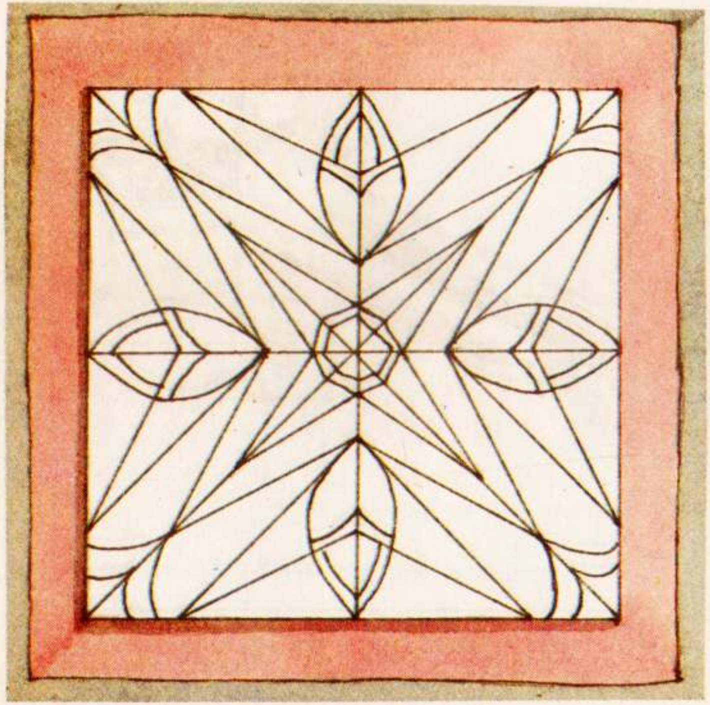
संगठनात्मक नीति : फर्श की सजावट के अतिरिक्त, जिसे बच्चे बहुत अच्छी तरह कर लेते हैं, गत्ते पर सजावट का काम इससे मिलता

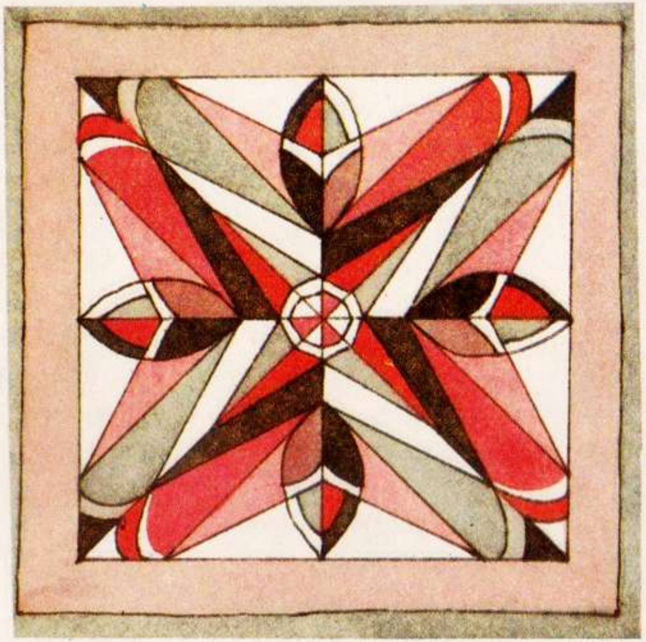


गत्ते पर सजावट का नमूना

जुलता एक अन्य कला रूप है। ऐसी सजावट के काम दीवार पर टांगने के काम आ सकते हैं। गत्ते पर पहले आधार बनाने के लिए घोल का अस्तर लगाया जाता है। यह घोल जिलेटिन को 1.8 के अनुपात में पानी में

उबालकर और उसके बाद इसमें एक हिस्सा जिंक आक्साइड या खड़िया मिट्टी मिलाकर तैयार किया जाता है। इससे गत्ते पर चिकनी सफेद सतह बन जाएगी और रंगों की ताजगी बनी रहेगी। सर्वप्रथम बच्चों से गत्ते को घोल लगा





गत्ते पर सजावट का नमूना

कर तैयार करने के लिए कहा जाएगा।

शिक्षक बच्चों से अपने-अपने गत्तों पर सीधी आड़ी रेखाएं खीचने के लिए कहेगा और तब किसी नमूने या डिजाइन की समरूपी आकृति बनाने के लिए उसका रेखाचित्र

बनाने के लिए कहेगा। बच्चे ज्यामितीय आकृतियां गोलाकार या आयताकार नमूनों में बना सकते हैं या ऐसे पारंपरिक छापों का प्रयोग कर सकते हैं जो स्थानीय रूप से लोकप्रिय हों। वह अपनी पंसद के अनुसार नमूना या डिजाइन बना सकते हैं। तथापि शिक्षक रंग संयोजन, संतुलन और नमूनों के सामंजस्य के बारे में सुझाव देकर उनका मार्ग दर्शन करेगा।

कभी-कभी तैयार गत्ते में घोल लगाने के कारण वह कहीं-कहीं से थोड़ा फूल जाता है, गत्ते को बजन के दबाव के नीचे रखकर इसे ठीक किया जा सकता है। यह तभी किया जाना चाहिए जब अस्तर सूख जाए या जब नमूना तैयार हो जाए।

बच्चे अपनी तैयार कृतियों को कक्षा की दीवारों पर लगाएंगे। शिक्षक अच्छे डिजाइन के सिद्धान्तों को ध्यान में रखते हुए अभ्युक्तियां देगा।

कार्यकलाप योजना – 6

विषय : अपनी पसंद की फर्श की सजावट करो।

सामग्री : मिट्टी के रंग, रंगीन रेत/भूसी/प्राकृतिक वस्तुएं जैसे कंकड़, पत्थर, पत्तियां आदि।

विधि : स्वतंत्र अभिव्यक्ति

प्रत्याशित अभिव्यक्ति : बच्चे विभिन्न वस्तुओं से फर्श की सजावट करने में समर्थ होते हैं।

संगठनात्मक नीति : भारत के अनेक समुदायों की फर्श की सजावट की अपनी-अपनी विशिष्ट शैलियां होती हैं। यह उनके पारंपरिक रीति-रिवाजों का एक भाग होता है जिससे वे अपने घरों और अन्य स्थानों की सजावट के लिए प्रायः इस्तेमाल में लाते हैं। बच्चे न केवल फर्श की सजावट की स्थानीय शैली और रूप से परिचित होते हैं बल्कि वे उन्हें बड़ी सहजता से बना लेते है। यद्यपि वह फर्श की सजावट करने के लिए एक ही नमूना अपनाते हैं किन्तु कभी-कभी वे नयी आकृतियां बनाने का प्रयास भी करते हैं। उनको यह प्रयोगात्मक दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। नयी सामग्री और आकृतियों से वे फर्श की सजावट के अधिक रुचिकर नमूने बना सकेंगे।

कुछ क्षेत्रों के बच्चों को यह कार्यकलाप अटपटा लग सकता है क्योंकि उनके क्षेत्रों के समुदायों द्वारा इस प्रकार की कला नहीं अपनायी जाती। इसका अभिप्राय यह नहीं है कि बच्चे फर्श की सजावट नहीं बना सकेंगे। वस्तुतः उनमें अपने नमूने तैयार करने और विविध सामग्रीयों का प्रयोग करने की बेहतर संभावनाएं होती हैं। उनके द्वारा बनायी गयी सजावटों में कुछ यथार्थपूर्ण या अमूर्त या ज्यामितीय रूप दिखाई देते हैं। शिक्षक को बच्चों में इस कार्यकलाप के प्रति रुचि उत्पन्न करने का प्रयास करना चाहिए और उन्हें अपनी प्रतिभा और साधनों का प्रयोग करने की पूरी छूट देनी चाहिए।

शिक्षक बच्चों के लिए फर्श पर अलग-अलग स्थान

निर्धारित करेगा और उन्हें अपनी पसंद के अनुसार सजावट बनाने के लिए कहेगा। वह उन्हें किसी भी सामग्री का प्रयोग करने की भी छूट देगा। उसे उनका मार्ग-दर्शन करने की कोई जरूरत नहीं है। किन्तु उसे यह अवश्य देखना चाहिए कि वे फर्श पर कौन-सी आकृतियां और नमूने बना रहे हैं। अन्त में वह उनकी सजावटों का मूल्यांकन करेगा और अभ्युक्तियां देगा।

कार्यकलाप योजना – 7

विषय : किसी मिट्टी के पात्र (गमला, जार, गुलदस्ता आदि) को किसी ज्यामितीय नमूने से सजाओ।

सामग्री : मिट्टी का पात्र, पोस्टर रंग/स्थानीय रूप से उपलब्ध चूरा रंग, ब्रश, जिलेटिन, जिंक आक्साइड/खड़िया मिट्टी आदि।

विधि : दिया गया विषय।

प्रत्याशित अभिव्यक्ति : बच्चे मिट्टी के पात्रों पर ज्यामितीय नमूने बनाकर उनकी साधारण सजावट करने में समर्थ होते हैं।

संगठनात्मक नीति : मिट्टी के जिन पात्रों पर सजावट की जानी है उन पर आधार बनाने के लिए एक अस्तर लगाया जाता है। यह अस्तर जिलेटिन और जिंक आक्साइड/खड़िया मिट्टी के घोल से लगाया जाता है, जैसा कि गत्ते की सजावट में भी किया जाता है। इस आधार से रंगों में नयापन रहेगा और वे खराब नहीं होंगे। अस्तर के सूख जाने पर सतह को चिकना और समतल बनाने के लिए उसे रेगमार के टुकड़े से घिसकर साफ किया जाता है। नमूना या तो सीधे ही या अंकित करके बनाया जाता है। इसके बाद योजना के अनुसार उसमें रंग भरे जाते हैं।

शिक्षक बच्चों से पात्रों पर आधार तैयार करने के लिए कहेगा। वह उन्हें यह सुझाव देगा कि वे जो भी छापा/नमूना खींचना या अंकित करना चाहते हैं उसके वे पहले कच्चे रेखाचित्र बना लें। वह यह सुझाव भी देगा कि ये नमूने छोटे या बड़े आकारों की क्रमिक समतल रेखाओं में खींच लिए जाएं या अंकित कर लिये जाए। इसके बाद उनसे इनमें रंग भरने के लिए कहा जाएगा। तैयार हो जाने पर बच्चे अपने रंगे गये पात्रों को एक पंक्ति में रखेंगे। बच्चों को एक दूसरे पात्रों के नमूने और रंग योजनाएं देखने दें। मिट्टी के ये पात्र आन्तरिक सजावट के लिए अच्छे होते हैं। शिक्षक इस कार्य का मूल्यांकन करेगा और उनकी सजावट के गुणों पर अभ्युक्तियां देगा।

अध्याय—6

प्लास्टिक कला

मूर्तिकला, भू-आकृति और निर्माण कला

मार्ग निर्देश

चिकनी मिट्टी तीन आयामों में कोई आकृति तैयार करने के लिए एक आधार सामग्री होती है। यह तालाबों और पहाड़ियों के किनारों पर प्रचुर मात्रा में पाई जाती है। इसमें कंकड़ पत्थर, तिनके आदि निकाल देने पर इसकी अशुद्धियां दूर हो जाती हैं और इसे किसी भी तरीके से मोड़कर इस्तेमाल किया जा सकता है। इसे इच्छानुसार किसी भी तरीके से लपेटा, दबाया, गूंथा, खींचा या मोड़ा जा सकता है। बच्चा मिट्टी का गोला पकड़ते समय आनन्द का अनुभव करता है। उसमें अपनी कल्पना की आकृति के अनुसार आकार देने की इच्छा जागृत होने लगती हैं। वह अपने कल्पित रूप को ठोस साकार रूप में लाता है।

टेराकोटा के रूप में मूर्ति कला अनेक समुदायों में प्रचलित है। यह उपयोगी तथा सौंदर्यपरक वस्तुओं-दोनों में पायी जाती है। सुन्दर वस्तुएं जैसे खिलौने, आकृतियाँ, मूर्तियाँ और भू आकृतियां स्थानीय शैली में बनायी जाती हैं, जो अत्यंत पुरानी हैं।

कक्षा 5 के बच्चे स्वाभाविक रूप से इस माध्यम में अत्यंत प्रवीण होते हैं। वे मिट्टी की आकृतियां अपने आप बना लेते हैं। इस आयु में उनमें यथार्थपूर्ण आकृतियां बनाने की प्रवृत्ति होती है। लेकिन कभी-कभी वे स्थानीय वस्तुओं के प्रति अपने आकर्षण के कारण ये आकृतियां स्थानीय शैली में बनाते हैं। वे अपनी कल्पना की वस्तु या चरित्र में पाये जाने वाले ब्यौरे भी दिखाने का प्रयास करते हैं। चिकनी मिट्टी का प्रयोग हमेशा नमी की हालत में किया जाता है। बच्चों को यह कार्यकलाप करते समय मिट्टी को गीला करने के लिए बार-बार पानी के इस्तेमाल के लिए एक पानी का कटोरा अपने पास रखना चाहिए। मिट्टी को गीली हालत में किसी भी तरीके से और कोई भी आकृति बनाने के लिए काटा या प्रयोग किया जा सकता है। लेकिन जब यह सूखी होती है तो इससे काम करना कठिन हो जाता है। ध्यान देने योग्य एक अन्य बात यह है कि जब बच्चे खड़ी अवस्था में कोई अकेली आकृति बनाते हैं तब वे एक कवच (बनाई जाने वाली आकृति के अनुसार मोड़ी गयी गल्बनी युक्त तार का एक आन्तरिक आधार) का प्रयोग कर सकते हैं। इससे आकृति को गिरने से बचाया जा सकेगा। क्योंकि गीली मिट्टी किसी भारी ऊपरी हिस्से का वजन नहीं सह सकती।

इस कक्षा के लिए मूर्तिकला, भू आकृति और निर्माण कला के कार्यकलाप रखे गये हैं। ये इस माध्यम में बच्चों की अभिव्यक्ति के लिए हैं। चूंकि बच्चों ने ऐसा कार्य पिछली कक्षाओं में भी किया है। अतः उन्हें अब इसके

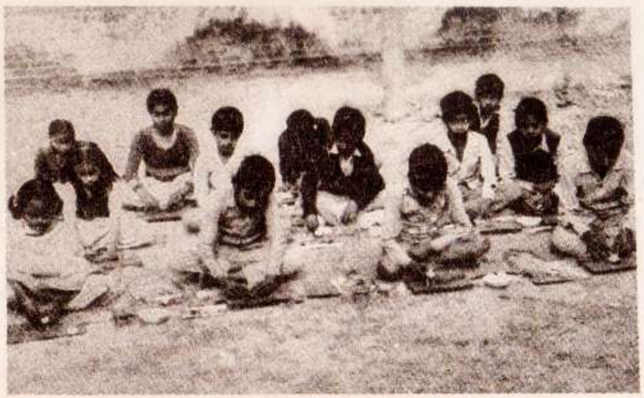
प्रयोग पर नियंत्रण होने के लिए इसमें सुधार भी दिखाना चाहिए और अपनी कल्पनाशीलता की क्षमता में भी उन्हें सुधार दिखाना चाहिए। शिक्षक प्रभावकारी आयोजन और मार्ग निर्देश के लिए कार्यकलाप योजनाओं का अध्ययन करेगा।

कार्यकलाप योजना – 1

विषय : चिकनी मिट्टी से कोई आकृति बनाओ।

सामग्री : मूर्तिकला की मिट्टी/कुम्हार की मिट्टी, मूर्तिकला के औजार आदि।

कक्षा में मिट्टी से आकृति बनाना





विधि : स्वतंत्र अभिव्यक्ति।

प्रत्याशित अभिव्यक्ति : बच्चे चिकनी मिट्टी से विभिन्न रूप और आकृतियां बनाने में समर्थ होते हैं। इस माध्यम में उनकी प्रतीकात्मक और यथार्थपूर्ण दोनों होती हैं।

संगठनात्मक नीति : चूंकि बच्चे पिछली कक्षाओं में यह कार्यकलाप कर चुके हैं अतः उन्हें विषयवस्तु के बारे में बहुत अधिक बताने या समझाने की आवश्यकता नहीं होती जो बच्चे किसी व्यक्ति या पशु की आकृति खड़ी मुद्रा में बनाना चाहें उन्हें याद दिलाने के लिए शिक्षक यह बतायेगा कि पहले एक कवच लगाएं फिर उस पर आकृति को खड़ा करें (कवच, गल्वनीकृत तार को आकृति की मुद्रा में मोड़कर बनाया जाएगा।) उन बच्चों के लिए जो अपनी आकृतियां बैठी या लेटी मुद्रा में



बनाना चाहते हैं, वह उन्हें ठोस आकृतियां बनाने के लिए कहेगा और उन्हें यह भी बताएगा कि वे शरीर के साथ पतले अंग न जोड़ें। सामान्यतः आकृति के पतले भाग, उसपर काम करने के दौरान अक्सर टूट जाते हैं।

इन पूर्वोपायों को अपनाते हुए वह बच्चों को इस कार्यकलाप में लगायेगा और वह स्वयं कक्षा में घूमकर बच्चों द्वारा बनाए गए कवचों या उन आकृतियों की जांच करेगा, जो कि वे बनाना चाहते हैं। कभी-कभी वह किसी बच्चे के साथ बैठकर उसके कार्य की प्रगति देखेगा और उसे प्रोत्साहित करेगा। काम पूरा करने के बाद बच्चे अपना कार्य सभी के देखने के लिए प्रदर्शित करेगा। शिक्षक बच्चों के कार्य का, उनके विचारों, प्रतिभा और उस माध्यम में अभिव्यक्ति क्षमता के आधार पर उनको अभ्युक्तियां देगा।

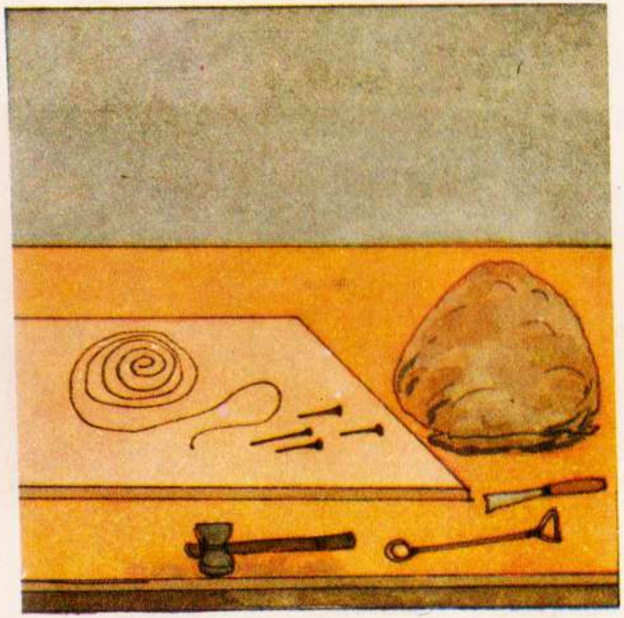
कक्षा में मिट्टी से आकृति बनाना



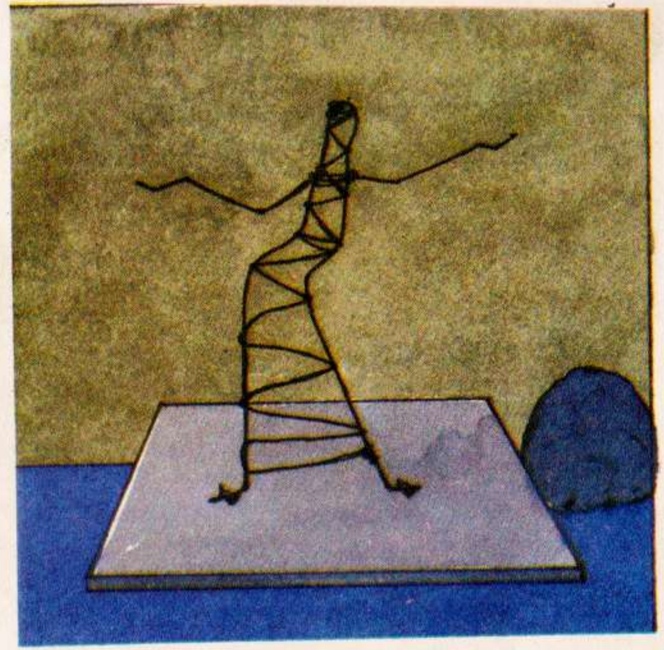
कार्यकलाप योजना – 2

विषय : चिकनी मिट्टी से किसी पुरुष या स्त्री की मूर्ति बनाओ।

सामग्री : चिकनी मिट्टी/कुम्हार की मिट्टी, मूर्तिकला के औजार, गल्वीकृत तार आदि।



मिट्टी से स्त्री या पुरुष की मूर्ति बनाना



विधि : दिया गया विषय।

प्रत्याशित अभिव्यक्ति : बच्चे अपनी कल्पना के अनुसार चिकनी मिट्टी से विभिन्न वस्तुओं की साधारण आकृतियां बनाने में समर्थ होते हैं।

संगठनात्मक नीति : शिक्षक बच्चों को कार्यकलाप सौंपने के अलावा उसके विषय के बारे में विस्तार से कुछ नहीं बताएगा क्योंकि बच्चे यह जानते हैं कि इस संबंध में उनकी प्रेरणा के

स्रोत क्या हैं। इस आयु में वे घर और पास पड़ोस के लोगों के अलावा अन्य लोगों से भी रागात्मकता विकसित करने लगते हैं और वे उनकी आकृतियां बनाना पसंद



करते हैं। वे इन आकृतियों को बनाने के लिए अपेक्षित तार के कवच को आकृति प्रदान करने में समर्थ होते हैं। जब बच्चे काम कर रहे हों तब शिक्षक बिना किसी टिप्पणी या अभ्युक्ति के उनकी प्रगति पर नजर रखेगा। उसे यह भी देखना चाहिए कि हर बच्चा अपने परिकल्पित रूप पर काम कर रहा है और अपने किसी सहपाठी की नकल नहीं कर रहा। इसका उद्देश्य यह है कि इससे उन्हें अपने विचारों को चिकनी मिट्टी के रूपों में परिवर्तित करने और उनके बारे में कल्पना करने का ऐक अनुभव प्राप्त हो जाए। कार्य समाप्त करने के बाद उन्हें कक्षा में प्रदर्शित करने में शिक्षक उनकी आकृतियों के गुणों का मूल्यांकन करेगा और अभ्युक्तियां देगा।

कार्यकलाप योजना – 3

विषय : किसी चित्र/दृश्य के चित्रण के लिए कोई भू-आकृति बनाओ।

सामग्री : चिकनी मिट्टी, औजार, पतली गल्वीकृत तार, छोटे कील, प्लाईवुड-बोर्ड, पानी आदि।

विधि : स्वतंत्र अभिव्यक्ति

प्रत्याशित अभिव्यक्ति : बच्चे अपने विचारों के चित्रण के लिए साधारण आकृतियां बनाने में समर्थ होते हैं।

संगटनात्मक नीति : भू आकृति एक त्रि-आयामीय चित्रात्मक रूप है। इसे चिकनी मिट्टी से एक रेखाचित्र की भांति ही बनाया जाता है। दो प्रकार की भू आकृतियां होती हैं। एक आकृतियों के आकार को घटा बढ़ाकर एक प्रकार का भ्रांतिपूर्ण परिपेक्ष्य निर्मित किया जाता है ताकि समतल धरातल पर अग्र भाग और पृष्ठ भाग का प्रभाव दिखाई दे। दो, भू आकृति के ऊंचे और नीचे प्रभाव के साथ आकृतियों को एक समूह में बनाया जाता है ताकि उनमें दृश्यात्मक गहराई दिखाई दे। भू आकृति बनाने की प्रक्रिया यह है कि एक चपटी लकड़ी/प्लाई बोर्ड पर चिकनी मिट्टी की आधार परत को सहारा देने के लिए तार की जाली लगा दी जाती है। चिकनी मिट्टी की यह परत एक समतल धरातल के रूप में होती है। जिस पर आकृतियां बनाई जाती हैं।

शिक्षक इसके लिए आरंभिक तैयारी जैसे काम शुरू करने के लिए बोर्ड पर तार लगाने, चिकनी मिट्टी आदि से समतल धरातल बनाने की प्रक्रिया समझायेगा। वह इसके बाद उन्हें यह बतायेगा कि वे अपने विचारों के ऐसे कच्चे रेखाचित्र (अधिक आकृतियों को संगठित करना और बनाना कठिन होगा) यदि वह यह देखता है कि किसी बच्चे की त्रि-आयामीय आकृतियों में कमजोर अनुपात या ब्यौरों के अभाव के कारण उचित प्रभाव दिखाई नहीं दे रहा है तो वो उस बच्चे की सहायता करेगा। बच्चे अपना कार्य एक दूसरे को दिखाने के लिए प्रदर्शित करेंगे। शिक्षक उनके कार्य का मूल्यांकन करेगा और अभ्युक्तियां देगा।

कार्यकलाप योजना – 4

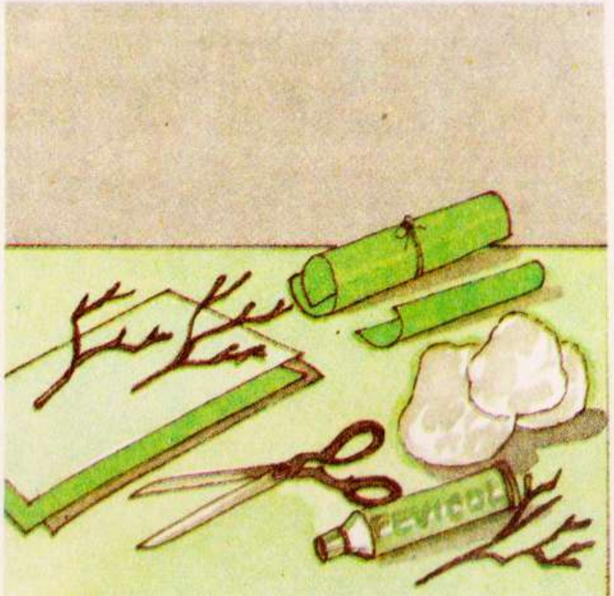
विषय : गत्ते से किसी इमारत की अनकृति बनाओं। (यह इमारत विद्यालय, स्वास्थ्य केन्द्र, रेलवे स्टेशन, प्राचीन ऐतिहासिक स्थल आदि की हो सकती है।)

सामग्री : गत्ता, कैंची, सरेस/लेई/फेवीकोल, रंगीन कागज, रूई, टहनियां आदि।

विधि : दिया गया विषय।

प्रत्याशित अभिव्यक्ति : बच्चे अपनी प्रतिभा से गत्ते की साधारण अनुकृतियां बनाने के शौकीन होते हैं।

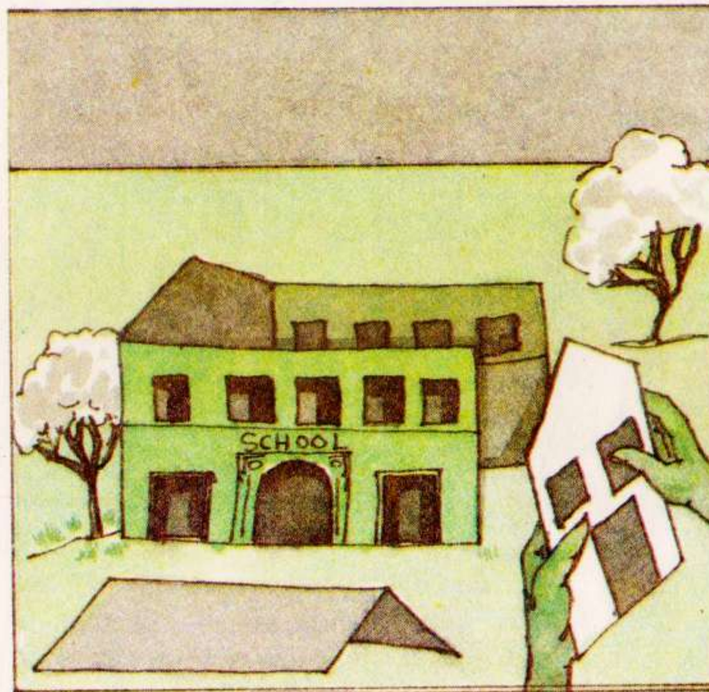
संगठनात्मक नीति : शिक्षक बच्चों को अनुकृतियां बनाने के लिए समीप के कुछ इमारतों के बारे में बतायेगा किन्तु यदि उनकी कुछ दूसरी इमारतों में अधिक रूचि हो और वे उनकी अनुकृतियां बनाना चाहते हों तो शिक्षक को स्वीकार कर लेना चाहिए। इसके बाद वह बच्चों के छोटे-छोटे समूह बनाएगा और उन्हें अपनी चुनी गयी इमारतों की रूपरेखा बनाने का काम सौंप देगा। इन रूपरेखाओं में इमारत के सभी कोनों और सामान्य बनावट का चित्रण किया जाना चाहिए। इन

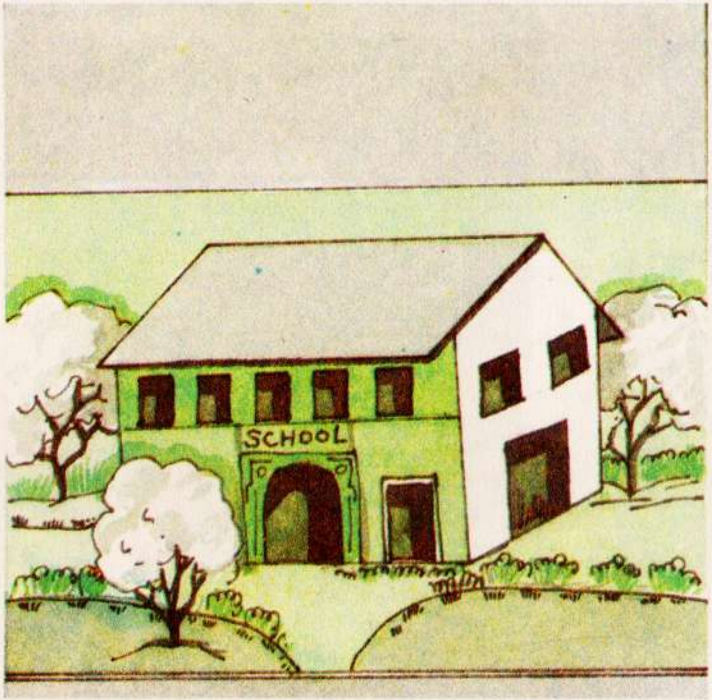


कार्डबोर्ड से मोडल बनाना

रूप रेखाओं के आधार पर बच्चे गत्ते पर इमारत के उठे हुए भागों, किनारों और अन्य भागों को चित्रित करेंगे और वे अपनी अनुकृतियों के लिए उपयुक्त फुट रूल का उपयोग करेंगे। ये न बहुत बड़ी और न ही बहुत छोटी होनी चाहिए।

गत्ते पर अन्तिम रेखाचित्र बनाकर शिक्षक को दिखाने के बाद वे उन्हें किसी तेज औजार या चाकू से काटेंगे। वे एक बार फिर इस बात की जांच करेंगे कि काटे गए टुकड़े अनुकृतियां बनाने के लिए ठीक से जुड़ जाते हैं।





इसके बाद वे उन टुकड़ों को एक साथ जोड़ेंगे और रंगीन कागज से उन्हें सजायेंगे। अन्त में बच्चे इमारत को अपनी-अपनी अनुकृति के लिए आधार या जमीन बनायेंगे जिनमें वे आस-पास के परिवेश के अनुसार पगडंडियां, पेड़, पत्तियां आदि दिखायेंगे। अन्त में वे अपनी अनुकृतियों को सभी बच्चों के देखने के लिए प्रदर्शित करेंगे। शिक्षक प्रत्येक समूह द्वारा बनाई गयी अनुकृतियों का मूल्यांकन करेगा और अभ्युक्तियां देगा।

कार्यकलाप योजना —5

विषय : अपनी पसंद की किसी आकृति की नक्काशी बनाओ।

सामग्री : साबुन/प्लास्टर आफ पेरिस या चिकनी मिट्टी का ब्लाक/मृदु पत्थर, जिसे सिल पत्थर भी कहते हैं, ईंट आदि, नक्काशी

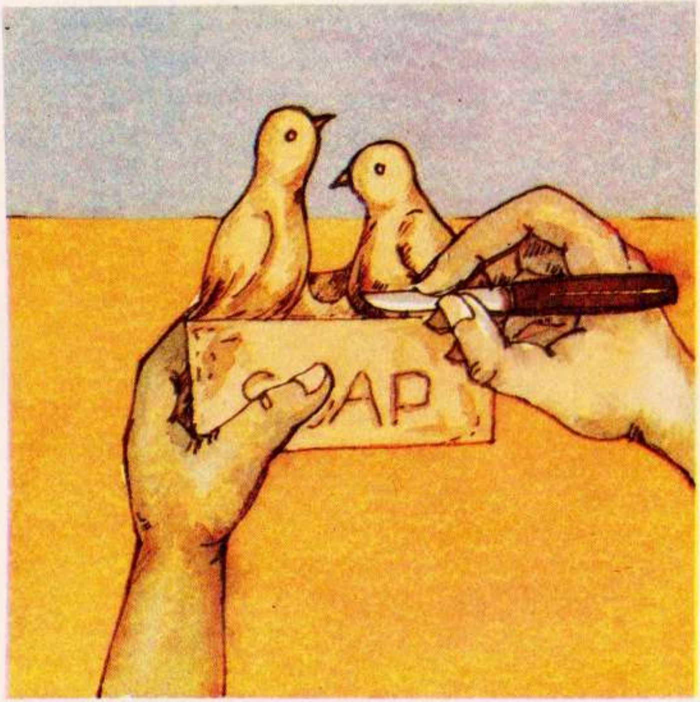
साबुन से नक्काशी करना



के औजार, परकार, चाकू आदि।

विधि : स्वतंत्र अभिव्यक्ति

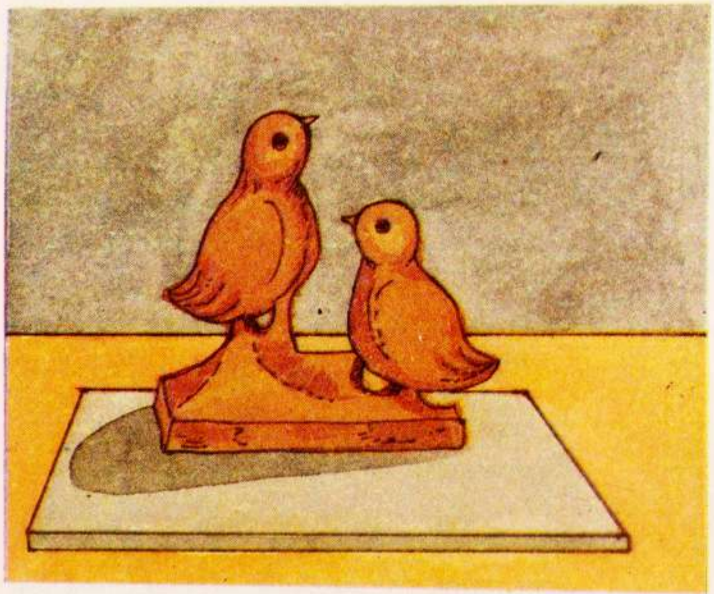
प्रत्याशित अभिव्यक्ति : बच्चे ठोस किन्तु मृदु सामग्री पर साधारण नक्काशी करने में समर्थ होते हैं।



संगठनात्मक नीति : एक ठोस पिण्ड से काटी गयी आकृति नक्काशी कहलाती है। कोई आकृति किसी ठोस ब्लाक से नक्काशी किए जाने से पूर्व मृदु सामग्री जैसे चिकनी मिट्टी जैसी मृदु सामग्री में इसका कच्चा रूप (डमी) बनाया जाता है। इससे डमी जैसी समान आकृति बनाने के लिए ब्लाक बनाने में सहायता मिलती है। इस अवस्था में नक्काशी के लिए साबुन, ईंट के ठोस ब्लाक या प्लास्टर ऑफ पेरिस, मृदु पत्थर आदि के ब्लाक का इस्तेमाल किया जा सकता है। इन्हें साधारण नक्कशी के औजारों (छेनी, हथौड़ी या चाकू) से काटा जा सकता है।

शिक्षक बच्चों को इसकी प्रक्रिया समझायेगा और उन्हें यह भी कहेगा कि वे अपनी नक्काशी में जो आकृति बनाना चाहते हैं उसे वे पहले चिकनी मिट्टी में बना लें। (कुछ बच्चे पहले से नक्काशी की कला जानते हैं क्योंकि वह इसे चाक के टुकड़े, बांस, लकड़ी आदि के टुकड़े पर करते रहें हैं।) ऐसे बच्चों को भी चिकनी मिट्टी से आकृति के डमी बना लेनी चाहिए ताकि वे नक्काशी की प्रक्रिया को समझ सकें।

जब वे कच्ची आकृतियां तैयार कर लें, तब शिक्षक उन्हें परकार का उपयोग समझायेगा, जिसे एक ठोस आकृति के विभिन्न भागों को नापने और उन विभिन्न अंगों और पूरी आकृति से सही संबंध बनाये रखने के लिए इस्तेमाल कियां जा सकता है। जब बच्चे काम कर रहे होंगे तब शिक्षक उनकी प्रगति पर नजर रखेगा और बीच-बीच में



साबुन से नक्काशी करना

यदि उन्हें कोई समस्या हो तो वह उनका मार्ग दर्शन करेगा। सामान्य रूप से बच्चे आकृति को अभिलम्ब अवस्था में बनाये रखने में गलती करते हैं। इसके लिए उन्हें यह बताया जाना चाहिए कि वे पहले एक खड़ी रेखा खींच लें और फिर आकृति के लिए आवश्यकतानुसार एक छोटा ब्लाक काट लें। इस ब्लाक से वे आकृति के विभिन्न अंगों और अन्य ब्यौरों की नक्काशी कर सकते हैं।

अपनी नक्काशी की कृतियां तैयार् कर लेने के बाद वे उन्हें कक्षा में प्रदर्शित करेंगे। शिक्षक बच्चों को उनके कार्य पर अभ्युक्तियां देगा।

अध्याय—7

प्रदर्शन कला

संगीत, नृत्य और नाटक

मार्ग निर्देश

हर स्थान के स्थानीय परिवेश में प्रदर्शन कला के अनेक अवसर उपलब्ध होते हैं। बच्चे उनकी ओर आकर्षित होते हैं क्योंकि उनके ह्रदय में लय ताल, गति और ध्वनि के लिए प्रेम अन्तर निहित होता है। परिवेश चाहे कैसा भी हो, चाहे शहरी हो या ग्रामीण हो या पिछड़े हुए स्थान का, गीत सभी स्थानों पर दिन रात गाये जाते हैं। नृत्य किए जाते हैं और नाटक खेले जाते हैं। वस्तुतः जीवन ही लयताल गति और ध्वनि का प्रतीक है।

प्रदर्शन कला के बहुत अधिक स्रोत हैं। दूर-दर्शन, रेडियो, ट्रांजिस्टर आदि जैसे आधुनिक उपकरण सुदूरवर्ती स्थानों के हर कोने तक पहुंच गए हैं। यह एक ऐसा स्रोत हैं जिससे बच्चे आयतन प्रदर्शन कला के विभिन्न स्रोत और शैलियां ग्रहण कर लेते हैं। स्थानीय लोक कलाओं की हमारे सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। एक अन्य स्रोत भी है जिसके अन्तर्गत वे अपनी स्थानीय कलाओं के मुहावरे, तकनीकें, किस्से स्वतः ही अपना लेते हैं। एक अन्य स्रोत दैनिक घटनाओं का भी है जिसे वह खेल कूद की तरह स्वाभाविक रूप से जिनका वे अभिनय करते हैं। बच्चों का परिवेश समीप और विभिन्न क्रियाओं और रागों तथा आनंद से परिपूर्ण होता है।

कक्षा 5 के बच्चे कोई गीत गाने या कोई नृत्य प्रदर्शित करने या किसी चरित्र की भूमिका करने की क्षमता में परिपक्वता दिखाने लगते हैं। कोई भी प्रस्तुति करते समय वे न केवल उसकी यथार्थता बनाये रखते हैं बल्कि वे किसी विशेष अभिनय में भावना का भी प्रयोग करते हैं। उनकी परिपक्वता का एक अन्य पक्ष यह है कि वे अब दूसरों के प्रदर्शन का समीक्षात्मक मूल्यांकन करने लगते हैं वे गीत में विराम, लय, ताल और उसके प्रवाह को उतनी ही अच्छी तरह समझने लगते हैं, जितनी अच्छी तरह वह किसी चरित्र का अभिनय करने में उसके हाव-भाव और मुद्रा को समझते हैं। संक्षेप में वे अब प्रदर्शन कला के कार्य कलापों के प्रस्तुतिकरण और उसे देखते समय भी उनमें आनन्द लेने लगते हैं।

अन्य कलाओं की भांति प्रदर्शन कला में भी सामान्य मूल घटक से संबंधित कार्य कलापों को उचित महत्व दिया जाना चाहिए। प्रदर्शन कला में ये कार्य कलाप राष्ट्रीय स्वरूप के होते हैं और भारत के स्वतंत्र आन्दोलन, राष्ट्रीय एकता आदि पर आधारित ,नाटक और नृत्य तथा पारंपरिक लोकगीत एवं देशभक्ति के गीत इनमें सम्मिलित होते हैं। यद्यपि इन कार्य कलापों के आयोजन की मूल नीति स्वतंत्र अभिव्यक्ति ही होती है किन्तु सामान्य मूल घटक के मामले में बच्चों में एक वांछित क्षमता विकसित करने के लिए उन्हें इन कार्यकलापों के कौशल, रूप और तकनीक का प्रशिक्षण भी दिया जाना चाहिए।

कार्यकलाप योजना –1

विषय : कोई लोकगीत या आदिवासी गीत गाओ।

सामग्री : ढोलक/ढफली/मृदंग, हारमोनियम आदि।

विधि : स्वतंत्र अभिव्यक्ति

प्रत्याशित अभिव्यक्ति : बच्चे अपने परिवेश के लोकप्रिय गीत सीखने में समर्थ होते हैं।

संगठनात्मक नीति : बच्चे अनेक प्रचलित गीतों से परिचित होते हैं किन्तु उन्हें क्षेत्रीय लोकगीतों और आदिवासी गीतों की बहुत कम जानकारी हौती है। इसका कारण मूल रूप से ऐसे गीत सुन पाने के अवसर न प्राप्त होना होता है। आधुनिक जीवन शैली में ज्यादातर बच्चों की इनके प्रति कोई रूचि नहीं पाई जाती। आने वाले समय में यह हानि एक बहुत बड़ी हानि होगी क्योंकि आदिवासी और लोकगीत तथा उनकी धुनें अनके समुदायों के जन्म उनकी विरासत तथा पहचान से जुड़ी होती हैं। बच्चों में इन गीतों के प्रति संवेदनशीलता विकसित करना आवश्यक है।

शिक्षक कुछ लोकप्रिय क्षेत्रीय लोकगीत बच्चों को सिखायेंगे। वह ऐसे बच्चे या शिक्षक या स्थानीय व्यक्ति की खोज करेगा जो ऐसे गीतों से परिचित हो ताकि कक्षा के बच्चों को उनका अभ्यास कराया जा सके। अभ्यास के दौरान वह यह सुनिश्चित करेगा कि सभी बच्चे उसमें भाग लें और कुछ गीतों की मूल लय, ताल, बोल और धुनें सीख लें। इसके बाद वह हर बच्चे की बिना किसी सहायता या मार्ग-दर्शन के कोई बताया गया गीत गाने की क्षमता का मूल्यांकन करेगा। (नीचे लोकगीत के उदाहरण दिए गए हैं)



बच्चों द्वारा समूह गान

उदाहरण : 1

वैष्णव जन तो तेने कहिये जे पीड़ पराई जाणे रे।
पर दु:खे उपकार करे तोये, मन अभिमान न आणे रे।।
सकल लोक मा सहुने बंदे, निन्दा न करे केनी रे।
वाछ काछ मन निश्चठ राखे, धन धन जननी तेनी रे।।
सम दृष्टि ते तृष्णा त्यागी, पर स्त्री जेने मात रे।
जिह्वा थकी असत्य न बोले, पर धन न व झाले हाथ रे।।
मोह माया व्यापे नहीं जेने, दृढ़ वैराग्य जेना मन मा रे।
राम नाम शुं ताली लागी, सकल तीरथ तेना तनमां रे।।
वण लोभी ने कपट रहित छे, काम क्रोध निवार्या रे।
भणे नरसैंयु तेनुं दरशन करतां, कुल एका तेर तार्या रे।।

उदाहरण : 2

साढा चिड़िया दा चंबा वे
बाबुल अस्सां उड़ वे जाना
साढी लम्बी उडारी वे
बाबुल अस्सां उड़ वे जाना
तेरे महलां दे विच विच वे
बाबुल डोना नई लंगदा
इक इट्ट पता देवां
धीये घर जा अपने
तेरे महलां दे विच विच वे
बाबुल गुड्डियां कौन खेडे
मेरीआं खेडन पोतरोआं
धीये घर जा अपने

कार्यकलाप योजना – 2

विषय : अपनी पसंद का कोई गीत गायें।

सामग्री : किसी विशेष वाद्ययंत्र की आवश्यकता नहीं है।

विधि : स्वतंत्र अभिव्यक्ति।

प्रत्याशित अभिव्यक्ति : बच्चे अपने परिवेश के लोकप्रिय गीत गाने में समर्थ होते हैं।

संगठनात्मक नीति : शिक्षक बच्चों से यह कहेगा कि वे एक एक करके अपनी पसंद का गीत गायें। वह बच्चों को यह भी बतायेगा कि जब कोई बच्चा गा रहा हो तो दूसरे बच्चे उसे शान्तिपूर्वक सुनें और केवल गीत के अन्त में वे उसके प्रस्तुतिकरण की सराहना या प्रंशसा कर सकते हैं।



बच्चे विविध गीत सीख लेते हैं और उन्हें गाते समय उस भावना का भी प्रदर्शन करते हैं जिसमें गीत गाया जाना चाहिए। हर गीत के बाद शिक्षक उनके प्रस्तुतिकरण पर अभ्युक्ति देगा।

कार्यकलाप योजना – 3

विषय : सरगम और भारतीय शास्त्रीय संगीत के कुछ अलंकारों का अभ्यास करो।

सामग्री : हारमोनियम, तबला आदि।

विधि : दिया गया विषय

प्रत्याशित अभिव्यक्ति : बच्चे सरगम और अलंकारों का प्रारंभिक स्तर पर प्रस्तुतिकरण करने में समर्थ होते हैं।

संगठनात्मक नीति : भारतीय शास्त्रीय संगीत, सुर संगीत तथा वाद्य संगीत-दोनों मुख्य रूप से कुछ ध्वनियों पर आधारित होते हैं। जिन्हें स्वर कहते हैं। किसी शास्त्रीय गीत या धुन की रचना इन ध्वनियों के क्रम और संयोग से की जाती है। ये ध्वनियां इस प्रकार हैं– स, रे, ग, म, प, ध, नि और अन्तिम ध्वनि प्रथम ध्वनि की पुनरावृत्ति है। ध्वनि या स्वरों की इस प्रणाली के अनेक रूप होते हैं।

अनेक शिक्षक कुछ प्रारंभिक अलंकार प्रस्तुत करने में सक्षम होते हैं। वे बच्चों को इनका प्रस्तुतिकरण सिखायेंगे जिससे कि बच्चों को शास्त्रीय संगीत की लय, ताल और मात्रा की जानकारी हो सके। यह प्रस्तुतिकरण हारमोनियम और तबले की संगत के साथ किया जाना चाहिए ताकि सुर संगीत और वाद्य संगीत की ध्वनियों के बीच के अभिन्न संबंध की उन्हें जानकारी हो सके।

जो शिक्षक यह अभ्यास नहीं करा सकते वे किसी सहकर्मी या संगीत जानने वाले किसी अन्य व्यक्ति की सहायता लेंगे और बच्चों को अभ्यास करायेंगे। उन्हें प्रारंभिक स्तर पर इनका प्रस्तुतिकरण करने की क्षमता विकसित करनी चाहिए। अन्त में वह बच्चों द्वारा विकसित कौशल का मूल्यांकन भी करेगा।

(शिक्षक बच्चों को नीचे दिए गए अलंकारों का अभ्यास करायेगा)

अलंकार

1. सा रे ग म प ध नी सां
   सां नि ध प म ग रे सा
2. सां सा, रे रे, ग ग, म म, प प, ध ध, नी नी,
   सां सां।
   सां सां, नि नि, ध ध, प प, म म, ग ग, रे रे, सा सा।
3. सा रे ग, रे ग म, ग म प, म प ध, प ध नी, ध नी सां।
   सां नि ध, नि ध प, ध प म, प म ग, म ग रे, ग रे सा।
4. सा रे सा रे ग, रे ग रे ग म, ग म ग म प, म प म प ध,
   प ध प ध नि, ध नी ध नी सां।
   सां नि सा नि ध, नि ध नि ध प, ध प ध प म,
   प म प म ग, म ग म ग रे, ग रे ग रे सा।

5. सा रे सा ग, रे ग रे म, ग म ग प, म प म ध,
प ध प नि, ध नि ध सां।
सां नि सां ध, नि ध नि प, ध प ध म, प म प ग,
म ग म रे, ग रे ग सा।

कार्यकलाप योजना — 4

विषय : किसी अन्य समुदाय का कोई लोक नृत्य करो।

सामग्री : उस विशेष लोक नृत्य की आवश्यकतानुसार।

विधि : स्वतंत्र अभिव्यक्ति।

प्रत्याशित अभिव्यक्ति : बच्चे देखकर और अभ्यास द्वारा कोई भी नृत्य सीखने में समर्थ होते हैं।

संगठनात्मक नीति : अधिकांश बच्चे अपने समुदाय के लोक नृत्यों के रूपों से परिचित होते है। वे इन नृत्यों को कभी-कभार देख कर ही सीख लेते हैं। किन्तु वे अपने आस-पास के समुदायों के अनेक नृत्य रूपों से परिचित नहीं होते। भारत में हर छोटे बड़े समुदाय (क्षेत्रवार, राज्यवार और समूहवार आदि) के अपने-अपने लोकनृत्य होते हैं, जो एक प्रकार से उनकी सांस्कृतिक पहचान का प्रतिनिधित्व करते हैं। अवसरों के अभाव के कारण वे न तो दूसरे लोक नृत्य जानते हैं न ही उनके प्रति उनमें कोई रूचि विकसित होती है। इस कार्यकलाप का उद्देश्य यह है कि बच्चे विभिन्न नृत्य रूपों को पहचान लें और उनकी विविधता को समझें। उदाहरण के लिए दो या तीन राज्यों से जुड़े हुए किसी राज्य में, जिनके अपने लोकप्रिय नृत्य हैं, बच्चों को उनके नृत्य दिखाना और उनका अभ्यास कराना कठिन नहीं है।

शिक्षक यह निर्णय करेगा कि स्थिति के अनुसार आस-पास के समुदायों के कितने नृत्य रूप बच्चों को सिखाये जा सकते हैं। यह बच्चों को अभ्यास कराने के लिए उपलब्ध नृत्यों के जानकार व्यक्ति पर निर्भर करता है। किन्तु किसी दूसरे समुदाय का कम से कम एक नृत्य बच्चों को अवश्य सिखाया जाना चाहिए।



बच्चों द्वारा सामूहिक नृत्य

शिक्षक नृत्य के जानकार व्यक्ति द्वारा बच्चों का नृत्य कौशल या तकनीक सिखाते समय उसकी सहायता करेगा। शिक्षक किसी निर्धारित दिन को बच्चों की क्षमता का मूल्यांकन करने के लिए उनके अन्तिम प्रदर्शन की व्यवस्था करेगा और उनको अभ्युक्तियां देगा। (यह कार्यकलाप 3 या 4 घंटों में सिखाया जाना चाहिए)



सामूहिक नृत्य

कार्यकलाप योजना – 5

विषय : पंचतंत्र की कहानी से किसी भूमिका का या वास्तविक जीवन की किसी स्थिति की विषय वस्तु से किसी भूमिका का अभिनय करो।

सामग्री : श्रृंगार सामग्री, मुखौटे, मुकुट, वेशभूषा आदि।

विधि : स्वतंत्र अभिव्यक्ति

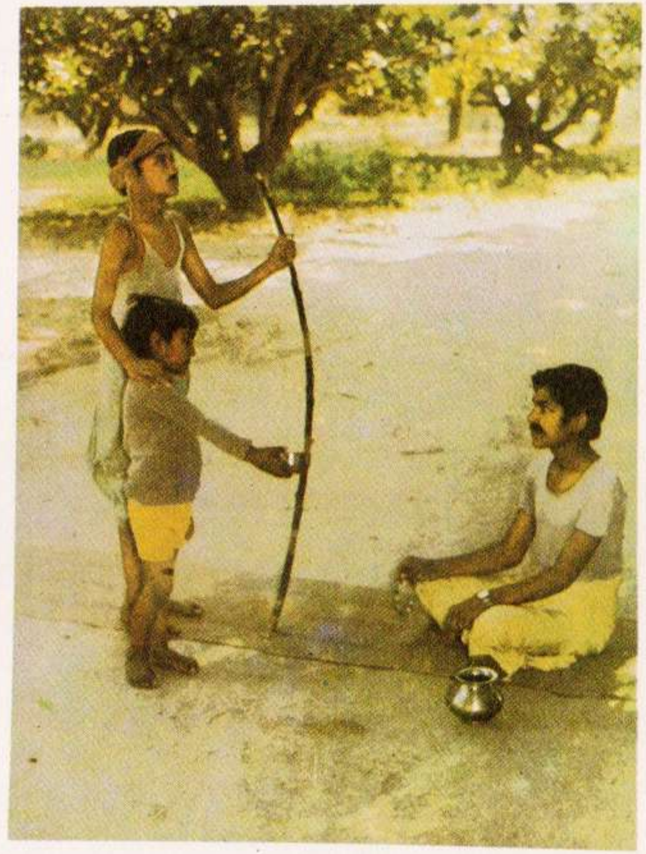
प्रत्याशित अभिव्यक्ति : बच्चे नाटकों की साधारण भूमिकाएं करने में समर्थ होते हैं।

संगठनात्मक नीति : इस आयु-वर्ग के बच्चों को ऐसा साहित्य सुलभ होता है, जो उनके लिए होता है। ऐसे साहित्य की विषय वस्तु कल्पना, साहसी कार्य, धार्मिक तथा पंचतंत्र की कहानियों की होती है। उनमें विविध भूमिकाओं का अभिनय करने की मूल रूप से ही इच्छा होती है। कोई कहानी पढ़ते समय भी वे कल्पना में उसके चरित्रों का अभिनय करने लगते हैं।

शिक्षक नाट्य रूपांतर के लिए कहानी या विषय-वस्तु के चुनाव के बारे में बच्चों के साथ विचार-विमर्श आरंभ करेगा। वह उन्हें अपनी-अपनी पसंद की भूमिकाएं चुनने की छूट देगा। यदि कहानी में कम चरित्र हों तो कोई दूसरी कहानी (कहानियां) चुनेगा और कक्षा के सभी बच्चों को भूमिकाएं देगा। इस प्रकार बनाए गए समूह अपनी-अपनी भूमिकाओं का अभिनय करेंगे और शिक्षक मंच पर किसी चरित्र-विशेष का अभिनय करने में, उसकी मुद्रा, क्रिया,



मोनो अभिनय करना



नाटक का अभिनय

हाव-भाव बताने और संवाद बोलने में उनकी सहायता करेगा। (अभ्यास के सत्र कुछ घंटों में चलाए जा सकते हैं)

जब बच्चे तैयार हो जाएं तो शिक्षक हर समूह से कहेगा कि उन्हें श्रृंगार (मेकअप) की जिन वस्तुओं की आवश्यता हो, उन्हें वे एकत्र करें या उनकी काम-चलाऊ व्यवस्था कर लें। (विद्यालय भी उनके लिए महंगी वस्तुओं की व्यवस्था कर सकता है या वेश-भूषा, मुकुट आदि किराए पर ले सकता है।) वह बारी-बारी से हर समूह के प्रदर्शन की व्यवस्था करेगा और हर बच्चे द्वारा अभिनीत भूमिका का मूल्यांकन करेगा।

कार्यकलाप योजना – 6

विषय : भारत के 8/10 संगीत वाद्य-यंत्रों का एक चार्ट बनाओ।

सामग्री : चार्ट पेपर/ड्राइंग पेपर, आदि चित्रों के बर्हिकाट, कैंची, स्केच पेन, सरेस/लेई आदि।

विधि : दिया गया विषय

प्रत्याशित अभिव्यक्ति : बच्चे चित्रों के बर्हिकाटों से किसी भी विषय पर चार्ट बनाने में समर्थ होते हैं।

संगठनात्मक नीति : शिक्षक बच्चों के छोटे-छोटे समूह बनाएगा और हर समूह से अपने क्षेत्र में या भारत के किसी क्षेत्र में पाये जाने वाले विभिन्न वाद्य-यंत्रों के चित्र एकत्र करेगा। बच्चे चित्र एकत्र करने के लिए मुख्य रूप से पत्र-पत्रिकाओं, कैलेंडरों, पुस्तिकाओं और किसी अन्य रद्दी छपी हुई सामग्री पर निर्भर करेगा। इस प्रकार के कार्य-कलाप की घोषणा पहले से की जानी चाहिए ताकि बच्चे ये चित्र एकत्र कर सकें।

प्रत्येक समूह जब चित्रों के बर्हिकाट एकत्र कर ले तब शिक्षक उनमें भी उपयुक्त चित्र चुनने में उनकी सहायता करेगा। प्रत्येक समूह इन चित्रों को चार्ट में लगाने की योजना तैयार करेगा। वे अंत में इन चित्रों को चार्ट पर चिपकाएंगे और हर प्रकार के वाद्य-यंत्र का नाम लिखेंगे और क्षेत्र/राज्य विशेष उसके उपयोग आदि का उल्लेख भी करेंगे।

प्रत्येक समूह का कार्य कक्षा की दीवारों पर लगाया जाएगा। इससे बच्चों को देश में पाये जाने वाले विविध प्रकार के वाद्य-यंत्रों की ओर उनके आकार-प्रकार की जानकारी मिलेगी। शिक्षक प्रत्येक समूह को उनकी कला-योजना की प्रभावकात्मकता विविधता आदि पर अभ्युक्तियां देगा।

ग्रंथसूची

डी, एमिको, विक्टर, क्रिएटिव टीचिंग इन आर्ट, फ : इंटरनेशनल टेक्सटबुक क., 1953

डी. फ्रांसिस्कों, इटैली एल, आर्ट एजुकेशन-इट्स मीन एण्ड एण्डस, न्यू यार्क, हार्पर एण्ड ब्रदस, 1958

डेवी, जान (1) आर्ट एस एक्सपीडिएस, न्यू यार्क, मिंटन बालको एण्ड क. 1934, (1) फ्रीडम एण्ड कल्चर, बंबई 3 भारतीय विद्या भवन, 1964

भारत सरकार, दस वर्षीय विद्यालय संबंधी समीक्षा समिति की रिपोर्ट, शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली, 1977.

भारत सरकार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986, नई दिल्ली, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, 1986

जेफ्रसन-टी, टीचिंग आर्ट टू चिल्ड्रन बोस्टन, एलिन एण्ड बोकन, इंक मुतरों, टी., आर्ट एण्ड एजुकेशन मेटिन पा, बेरनर फाउंडेशन प्रेस, 1929.

रा. शै. अ. प्र. प. प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षा की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या का स्वरूप, नई दिल्ली 1985.

रा. शै. अ. प्र. प. प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षा की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या का स्वरूप, (संशोधित संस्करण), नई दिल्ली 1988.

रा. शै. अ. प्र. प., प्राथमिक शिक्षा की अवस्था में शिक्षा के न्यूनतम स्तर, नई दिल्ली, डी पी एस ई ई 1987.

रा. शै. अ. प्र. प दस वर्षीय विद्यालय की पाठ्यचर्या का स्वरूप, नई दिल्ली, 1975.

रा. शै. अ. प्र. प. न्यूनतम शिक्षण सांत्यक (मिनियम लर्निंग्र कांटिनम, नई दिल्ली : पी सी डी सी, 1979

रा. शै. अ. प्र. प. क्षेत्रीय बैठकों की रिपोर्ट, नई दिल्ली, पी सी डी सी 1977.

रा. शै. अ. प्र. प., द प्राइमरी टीचर, (प्राथमिक शिक्षक) (त्रैमासिक) के अंक, जुलाई, 1978.

आर के चोपड़ा, प्रोसीजर्स एण्ड टेकनीकस ऑफ प्यूपिल इवैलुएशन इन क्रिएटिव एक्सप्रैशन ए गाइड लाइन, नई दिल्ली, डी पी एस ई ई, रा शै अ प्र प, 1987.

स्केसियोफर, एस. एच. द, अनफ्रोल्डिंग ऑफ क्रिएटिव एब्लिटी, बर्कले एण्ड लॉस एंजेलिस : यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया

परिशिष्ट

कक्षा 5 के लिए कला शिक्षा की कार्यकलाप पुस्तक

यह कार्यकलाप पुस्तक कला शिक्षा की पाठ्यचर्या की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बनाई गई है। इसका प्रयोग बच्चों द्वारा कक्षा में अपने रोजमर्रा के काम में किया जाएगा इसका उद्देश्य शिक्षक को हर बच्चे के कार्य का नियमित रूप से मूल्यांकन करने तथा बच्चे के सृजनात्मक विकास की समय-समय पर जांच करने का अवसर प्रदान करना हैं। हर बच्चे के साथ व्यक्तिगत स्तर पर सामंजस्य द्वारा उसे प्रभावी मार्ग-दर्शन देने के लिए हर शिक्षक के पास इस प्रकार की अंतर्दृष्टि होना महत्वपूर्ण है। यह पुस्तक एक प्रकार से प्रत्येक कला रूप के अन्तर्गत विभिन्न कार्यकलापों के आयोजन में नियमितता तथा बारंबारता को दिखाने के लिए रिकार्ड का काम करेगी।

शिक्षा निदेशालय/माध्यमिक शिक्षा बोर्ड आगे के पृष्ठों में दिए गए एक समान डिजाइन में अपनी पुस्तक प्रकाशित कर सकते हैं। यह डिमाई रायल क्वार्टों साइज में मोटे कागज पर छापना बेहतर होगा। कार्यकलाप के स्थान को सूचित करने वाला बाक्स 9"×11" के एक समान आकार का होना चाहिए। ऐसे बक्सों के पृष्ठ एक ही पृष्ठ पर छापे जाने चाहिए क्योंकि बच्चों को कुछ कार्यकलापों में गीले रंगों/पोस्टर रंगों आदि का प्रयोग करना होता है तथापि प्लास्टिक और प्रदर्शन कला से संबन्धित कार्य कलाप पृष्ठ के दोनों ओर छापे जाने चाहिए क्योंकि ये बच्चों के प्रदर्शन की उपलब्धियों का रिकार्ड रखने के लिए होते हैं।

कक्षा V
की
कला शिक्षा-कार्य-कलाप पुस्तिका

(केवल छात्रों के उपयोग के लिए)

नाम..

आयु ....

विद्यालय..

शिक्षकों के लिए कुछ सुझाव

इस कार्य-कलाप पुस्तक में कला के विभिन्न रूपों से संबंधित विभिन्न कार्य-कलाप दिए गए हैं। ये कार्य-कलाप उन योजनाओं के अनुरूप हैं, जो शिक्षक की पुस्तिका में दिए गए हैं। प्रत्येक कला-रूप के अंतर्गत कुछ अतिरिक्त कार्य-कलाप भी दिए गए हैं। शिक्षक इनके आयोजन के लिए पाठ्यक्रम और संबंधित संगठनात्मक नीति का प्रयोग कर सकता है। इसके अतिरिक्त इस पुस्तक में कार्य-कलाप एक क्रम में दिए गए हैं। इसका आशय यह नहीं है कि इन्हें इसी क्रम में आयोजित किया जाए। शिक्षक किसी भी कला-रूप का कार्य-कलाप चुन सकता है और उसे कक्षा में आयोजित कर सकता है।

स्थूल रूप से दो प्रकार के कार्य-कलाप हैं– (1) वे, जो कागज पर किए जाएंगे, जैसे रेखाचित्र, पेंटिंग, कोलाज, छपाई आदि और (2) वे, जिनका प्रदर्शन किया जाएगा या जिनका अन्यथा कक्षा में आयोजन किया जाएगा, जैसे, गाना, स्वांग (नकल) अभिनय, किसी चरित्र की भूमिका करना, माडल बनाना, मुखौटे बनाना आदि। कागज पर किए जाने वाले कार्य-कलापों के लिए इस पुस्तक में उपयुक्त स्थान दिए गए हैं। प्रदर्शन कला के कार्य-कलापों के लिए, कार्य-कलापों से संबंधित ब्यौरे, सामग्री, विधि आदि इस पुस्तक में दिए गए हैं। दोनों प्रकार के कार्य-कलाप कक्षा में आयोजित किए जाएंगे। प्रत्येक कार्य-कलाप पूरा हो जाने के बाद शिक्षक हर बच्चे की कला-अभिव्यक्ति/प्रदर्शन की गुणवत्ता का मूल्यांकन करेगा और इस संबंध में बच्चे की कार्य-कलाप पुस्तक पर उपयुक्त अभ्युक्ति/टिप्पणी देगा।

रेखाचित्र और पेंटिंग कार्य-कलाप

विषय : स्थानीय जीवन का कोई दृश्य रेखाचित्र या पेंटिंग में बनाओ।
सामग्री : पेस्टल रंग/पोस्टर रंग/स्केच पेन/उपलब्ध स्थानीय रंग/ब्रश आदि।
विधि : स्वतंत्र अभिव्यक्ति।

कार्य-कलाप के लिए स्थान

दिनांक : *अभ्युक्ति :*

विषय : अपनी इच्छानुसार कोई स्वाभाविक दृष्य बनाओ।
सामग्री : पेन्सिल/पेस्टल स्टिक/स्केच पेन/कलम और स्याही आदि।
विधि : स्वतंत्र अभिव्यक्ति।

कार्य-कलाप के लिए स्थान

दिनांक : *अभ्युक्ति :*

विषय : स्वतंत्रता दिवस या गणतंत्र समारोह का वह पक्ष चित्रित करो जो तुम्हें पसंद हो।

सामग्री : पेस्टल रंग/पोस्टर रंग/स्केच पेन/उपलब्ध स्थानीय रंग/ब्रश आदि।

विधि : स्वतंत्र अभिव्यक्ति।

कार्य-कलाप के लिए स्थान

दिनांक :

अभ्युक्ति :

विषय : गांव का कोई दृश्य बनाओ।

सामग्री : पेन्सिल/स्केच पेन/क्रेयोनस्टिक/कलम और स्याही आदि।

विधि : स्वतंत्र अभिव्यक्ति।

कार्य-कलाप के लिए स्थान

दिनांक :

अभ्युक्ति :

विषय : स्थानीय मेले या त्यौहार के किसी पक्ष पर चित्र बनाओ।
सामग्री : पेस्टल रंग/पोस्टर रंग/स्केच पेन/उपलब्ध स्थानीय रंग/ब्रश आदि।
विधि : स्वतंत्र अभिव्यक्ति।

कार्य-कलाप के लिए स्थान

दिनांक : ***अभ्युक्ति :***

विषय : राष्ट्रीय एकता के विषय पर चित्र बनाओ।
सामग्री : पेस्टल रंग/पोस्टर रंग/रंगीन स्केच पेन/उपलब्ध स्थानीय रंग/ब्रश आदि।
विधि : दिया गया विषय।

कार्य-कलाप के लिए स्थान

दिनांक : ***अभ्युक्ति :***

रेखाचित्र और पेंटिंग में अतिरिक्त कार्य-कलाप

विषय : किसी खेल का रेखाचित्र या पेन्टिग बनाओ।

सामग्री : पेंसिंल/कलम/स्महीे/पेस्टल रंग/पोस्टर रंग/स्केच पेन/उपलब्ध स्थानीय रंग/ब्रश आदि।

विधि : स्वतंत्र अभिव्यक्ति।

कार्य-कलाप के लिए स्थान

दिनांक : ***अभ्युक्ति :***

विषय : किसी कहानी का कोई दृश्य बनाओ। कहानी पाठ्यपुस्तक या साहित्य से भी ली जा सकती है।

सामग्री : पेन्सिल/क्रेयोन स्टिक/कलम/स्याही आदि।

विधि : स्वतंत्र अभिव्यक्ति।

कार्य-कलाप के लिए स्थान

दिनांक : ***अभ्युक्ति :***

विषय : शिक्षक के सुझाव के अनुसार किसी स्थानीय विषय पर रेखाचित्र या पेंटिंग बनाओ।

सामग्री : पेन्सिल/क्रयोन स्टिक/कलम और स्याही/पेस्टल कलर/पोस्टर रंग/ब्रश आदि।

विधि : दिया गया विषय।

कार्य-कलाप के लिए स्थान

दिनांक : *अभ्युक्ति :*

विषय : स्वयं बच्चों द्वारा चुने गये किसी विषय पर रेखाचित्र या पेंन्टिग।

सामग्री : पेन्सिल/क्रयोन स्टिक/कलम और स्याही/पेस्टल रंग/पोस्टर रंग, ब्रश आदि।

विधि : स्वतंत्र अभिव्यक्ति।

कार्य-कलाप के लिए स्थान

दिनांक : *अभ्युक्ति :*

कोलाज, पेंटिंग और सजावट के कार्य-कलाप

विषय : कोलाज के माध्यम से कोई दृश्य बनाओ।

सामग्री : प्राकृतिक वस्तुएं, गोंद, लेई, फेवीकोल,/चाकू/ब्लेड आदि।

विधि : स्वतंत्र अभिव्यक्ति।

कार्य-कलाप के लिए स्थान

दिनांक : *अभ्युक्ति :*

विषय : 8/10 राष्ट्रीय नेताओं के चित्रों का बर्हिकाट को, भारत के मानचित्र में व्यवस्थित कर कोलाज बनाओ।

सामग्री : चित्रों के बर्हिकाट, भारत का मानचित्र, कैंची, लेई, चार्ट पेपर, स्केच पेन आदि।

विधि : दिया गया विषय।

कार्य-कलाप के लिए स्थान

दिनांक : *अभ्युक्ति :*

विषय : किसी चीज को आधार बनाकर दो रंगों में एक पूरा डिजाइन बनाओ।

सामग्री : पोस्टर रंग/छपाई की स्याही, आलू, चाकू आदि।

विधि : स्वतंत्र अभिव्यक्ति।

कार्य-कलाप के लिए स्थान

दिनांक : ***अभ्युक्ति :***

विषय : ज्यामितीय नमूना, प्राकृतिक दृश्य या छपाई की छिड़काव पद्धति से एक संयोजन बनाओ।

सामग्री : पोस्टर रंग, दांतों की सफाई के लिए प्रयोग में आने वाला ब्रश, कैंची/ब्लेड आदि।

विधि : स्वतंत्र अभिव्यक्ति।

कार्य-कलाप के लिए स्थान

दिनांक : ***अभ्युक्ति :***

विषय : गत्ते पर सजावट करो।

सामग्री : गत्ता, पोस्टर रंग, ब्रश, जिलेटिन, जिंक आक्साइड/खड़िया मिट्टी आदि।

विधि : स्वतंत्र अभिव्यक्ति।

सजावट के अपरिष्कृत नमूने के लिए स्थान

दिनांक : ***अभ्युक्ति :***

विषय : अपनी पसंद की फर्श-सज्जा बनाओ।

सामग्री : भूमि रंग, रंगीन बालू/भूसी, प्राकृतिक वस्तुएं जैसे गुटिका, पत्थर, पत्तियां आदि।

विधि : स्वतंत्र अभिव्यक्ति।

कार्य-कलाप के लिए स्थान

दिनांक : ***अभ्युक्ति :***

विषय : भूमि पर रखने वाले पात्रों को सजाओ (गमला, मर्तबान, गुलदस्ता आदि)

सामग्री : भूमि पर रखने वाले पात्र, पोस्टर रंग/स्थानीय उपलब्ध रंगों की बुकनी, ब्रश, जिलेटिन, जिंक आक्साइड/खड़िया मिट्टी आदि।

विधि : दिया गया विषय।

कार्य-कलाप के लिए स्थान

दिनांक : ***अभ्युक्ति :***

कोलाज, छपाई और सजावट में अतिरिक्त कार्य-कलाप

विषय : शिक्षक द्वारा प्रस्तावित विषय/विचार पर कोलाज बनाओ।

सामग्री : कोलाज की आवश्यकतानुसार

विधि : दिया गया विषय।

कार्य-कलाप के लिए स्थान

दिनांक : ***अभ्युक्ति :***

विषय : अपनी पसन्द के किसी नमूने द्वारा पूरी छपाई या मात्र किनारा बनाओ।

सामग्री : पोस्टर रंग/छपाई की स्याही, आलू, चाकू आदि।

विधि : स्वतंत्र अभिव्यक्ति।

कार्य-कलाप के लिए स्थान

दिनांक : *अभ्युक्ति :*

विषय : मुखौटे का चित्र बनाकर उसे अपनी इच्छानुसार सजाओ।

सामग्री : पोस्टर रंग, ब्रश, पेंसिल आदि।

विधि : स्वतंत्र अभिव्यक्ति।

कार्य-कलाप के लिए स्थान

दिनांक : *अभ्युक्ति :*

मूर्तिकला, भू-आकृति, निर्माण कला के कार्य-कलाप

विषय : चिकनी मिट्टी से कोई आकृति बनाओ।
सामग्री : चिकनी मिट्टी/कुम्हार की मिट्टी, आकृति बनाने के औजार आदि।
विधि : स्वतंत्र अभिव्यक्ति।

दिनांक : *अभ्युक्ति :*

विषय : चिकनी मिट्टी से किसी स्त्री या पुरुष को काम करता हुआ बनाओ।
सामग्री : चिकनी मिट्टी/कुम्हार की मिट्टी, मूर्तिकला के औजार आदि।
विधि : दिया गया विषय।

दिनांक : *अभ्युक्ति :*

विषय : चिकनी मिट्टी से स्त्री या पुरुष की आकृति बनाओ।
सामग्री : चिकनी मिट्टी/कुम्हार की मिट्टी, आकृति बनाने के औजार, जस्ते का तार आदि।
विधि : दिया गया विषय।

दिनांक : *अभ्युक्ति :*

विषय : गत्ते पर किसी आधुनिक उपकरण की डिजाइन, जैसे रेडियो, दूर-दर्शन, कार, हवाई जहाज आदि बनाओ।
सामग्री : गत्ता, लकड़ी का बुरादा, कैंची, चाकू, लेई, सरेस फेवीकोल आदि।
विधि : स्वतंत्र अभिव्यक्ति।

दिनांक : *अभ्युक्ति :*

संगीत, नृत्य तथा नाटक के कार्य-कलाप

विषय : कोई लोक गीत या आदिवासी गीत गाओ।
सामग्री : ढोलक/डफली/मृदंग, हारमोनियम आदि।
विधि : स्वतंत्र अभिव्यक्ति।

दिनांक : ***अभ्युक्ति :***

विषय : भारतीय शास्त्रीय संगीत के सरगम का अभ्यास करो।
सामग्री : हारमोनियम, तबला आदि।
विधि : दिया गया विषय।

दिनांक : ***अभ्युक्ति :***

विषय : अपंनी पसंद का कोई गीत गाओ।
सामग्री : कोई विशेष वेश-भूषा या श्रृंगार आवश्यक नहीं है।
विधि : स्वतंत्र अभिव्यक्ति।

दिनांक : ***अभ्युक्ति :***

विषय : किसी अन्य समुदाय का लोक नृत्य करो।
सामग्री : उस विशेष नृत्य की आवश्यकतानुसार।
विधि : स्वतंत्र अभिव्यक्ति।

दिनांक : ***अभ्युक्ति :***

विषय : पंचतंत्र की किसी कहानी या वास्तविक जीवन की किसी स्थिति की विषय वस्तु से कोई भूमिका करो।
सामग्री : शृंगार सामग्री, मुखौटे, मुकुट, वेश-भूषा आदि।
विधि : स्वतंत्र अभिव्यक्ति।

दिनांक : ***अभ्युक्ति :***

विषय : भारतीय मूल के 8/10 संगीत वाद्यों के चार्ट बनाओ।
सामग्री : चार्ट पेपर/ड्राइंग पेपर आदि। चित्रों के बर्हिकाट, कैंची, स्केच पेन, लेई/सरेस आदि।
विधि : दिया गया विषय।

दिनांक : ***अभ्युक्ति :***

संगीत नृत्य और नाटक के अतिरिक्त कार्य-कलाप

विषय : जो गीत तुम्हें आता है वह गाओ।
सामग्री : प्रार्श्व संगीत के साथ या उसके बिना।
विधि : स्वतंत्र अभिव्यक्ति।

दिनांक : ***अभ्युक्ति :***

विषय : अपने समुदाय या पास के समुदाय में प्रचलित कोई नृत्य (एकल या समूह) करो।
सामग्री : स्थानीय संगीत वाद्य के साथ या उसके बिना।
विधि : स्वतंत्र अभिव्यक्ति।

दिनांक : ***अभ्युक्ति :***

विषय : मूक अभिनय में किसी चरित्र की भूमिका करो।
सामग्री : चरित्र विशेष की आवश्यकतानुसार।
विधि : स्वतंत्र अभिव्यक्ति।

दिनांक : *अभ्युक्ति :*

